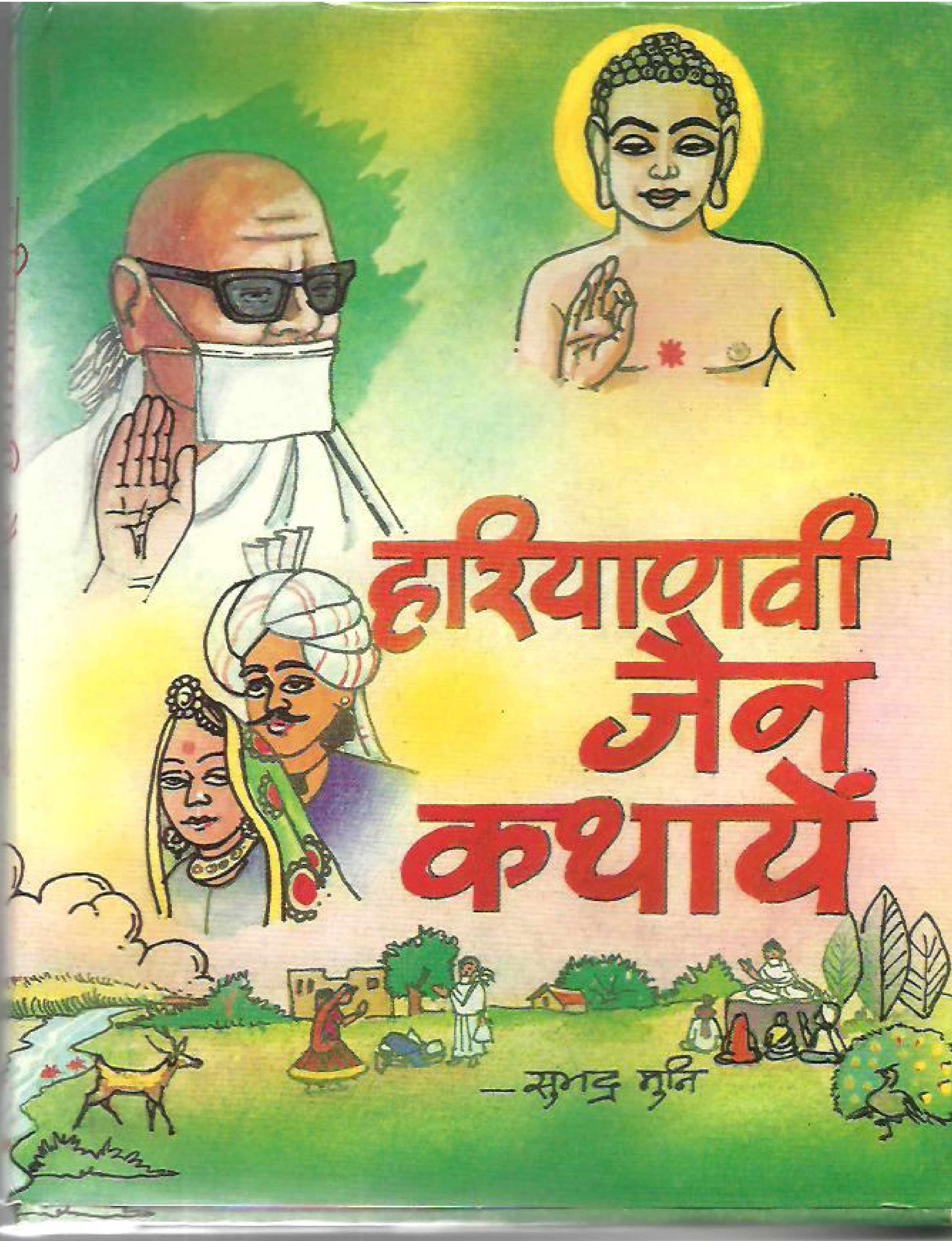
हरियाणवी
जैन
कथायें
— सुभद्र मुनि

हरियाणवी जैन कथायें

—सुभद्र मुनि—

श्रुत/ज्ञान-सेवा

श्रीमान् ला. मनोहरलाल ईश्वर प्रकाश जैन
एम. डी. - 14, पीतमपुरा
दिल्ली-110034

पुस्तक	:	हरियाणवी जैन कथायें (हरियाणवी भाषा में प्रथम बार प्रस्तुत जैनकथायें)
लेखक	:	जैन धर्म प्रभावक श्री सुभद्र मुनि जी महाराज
सम्पादन	:	डा० विनय 'विश्वास' (दिल्ली)
चित्रांकन	:	अनुज के० भटनागर
अवतरण	:	माघ शुक्ल-6, (संयम-दिवस) 24.जनवरी 1996
प्रकाशन	:	मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन के.डी. ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-110034
मूल्य	:	चालीस रुपये
मुद्रक	:	वर्धमान कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स (7415287)

समर्पण

- तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर को !
  जिनके धर्म-संघ का मैं एक अदना-सा सेवक हूँ !

- देवों और मनुष्यों द्वारा अर्चित गुरुदेव श्री मायाराम जी महाराज को !
  जिन्होंने हरियाणा प्रदेश में जिन-धर्म को गांव-गांव में पहुँचाया था ।

- मेरी श्रद्धा के आधार, जिनकी अनन्त कृपा से मैंने धर्म-संयम-सन्यास-विद्या एवं जीवन-पथ को पाया, उन गुरुमह परम श्रद्धेय गुरुदेव योगिराज श्री रामजीलाल जी महाराज को !

- जन-जन के आराध्य, जैन-शासन के सूर्य, धर्म संघ-शास्ता, मेरे परम आराध्य गुरुदेव मुनि श्री रामकृष्ण जी महाराज को! जिनके वरद्हस्त की सुमंगल छाया में, मैं साधना-पथ पर चल रहा हूँ !

अनन्त आस्था के साथ सादर समर्पित !

– सुभद्र मुनि

अनुक्रम

क्रम	कथा	पृष्ठ
	स्वकथ्य	(i)
	भूमिका	(ix)
1.	परभू के दरसन	1
2.	आनंद का खुज्जाना	7
3.	दयालु राजा	14
4.	अनाथ कूण सै	19
5.	छिमा की मूरत	23
6.	रोहिणिया चोर	29
7.	सुथराई का घमण्ड	37
8.	सादुधू का सतसंग	43
9.	भगवान् का ध्यान	49
10.	एक दन मैं मुकती	53
11.	मामन सेट के बलद	59
12.	करणी अर भरणी	64
13.	मेघ कुवार मुनी	69
14.	दया के समुन्दर	76
15.	सुभ भौना	80
16.	जो मौत पै भी ना डिग्या	85
17.	मन्तर का चिमत्कार	89
18.	भगवान महावीर अर चण्डकोसिया सांप	93
19.	साचा भगत कामदेव सरावग	100
20.	जो करै सै ओए भरै सै	105
21.	अक्कल आपणी-आपणी	109
22.	साच्चे गरु योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज	113
	परिशिष्ट	121

स्वकथ्य

कथा-कहानी मानव-जीवन की प्रतिच्छवि अथवा प्रतिबिम्ब है। यह प्रतिबिम्ब यदि जीवन के प्रणेता-सूत्रधार अरिहन्त भगवन्तों द्वारा बिम्बित/चित्रित हो तो उसे देख-समझ कर मानव अपना जीवन सफल-सार्थक कर सकता है। इसमें किंचित् भी संदेह नहीं हैं। तीर्थंकरों/महापुरुषों द्वारा कथित कथाएँ हमें न केवल जीवन रस ही देती है, अपितु जीवन में सुधारस घोल देती हैं। ये कथायें जीवन-संदेश तथा जीने की कला का महान् बोध भी देती हैं।

जीवन-दर्शन को जितनी सरलता से कथा-कहानियों के माध्यम से आत्मसात् किया जा सकता है, उतनी सरलता से उपदेशों या अन्य विधाओं के माध्यम से नहीं। यही कारण है कि भगवान महावीर ने अपनी धर्म-देशना में कथा-कहानी और दृष्टान्तों को अपने संदेश/उपदेश का सफल माध्यम या साधन बनाया। इससे यही सिद्ध होता है कि कहानी की शक्ति-क्षमता असंदिग्ध है। विषाद से भरे रीते-सूने दिनों में भी कहानी का पाथेय बड़ी राहत देता है। वनवास के सूने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, लक्ष्मण और सीता को कथा-कहानियां सुनाकर धर्मपथ पर दृढ़ रहने का संबल देते थे :

कहहिं पुरातन कथा कहानी।
सुनहिं लखन सिय अति सुखु मानी।।

यह सब होने पर भी कहानी की सहज ग्राह्यता, स्व में रचा-पचा लेने की सहजता, अपनी-स्वकीय भाषा-बोली में अधिक संभव है। यह भी कह सकते हैं कि कथा यदि स्वर्ण है तो स्वभाषा या बोली उस स्वर्ण में बसी सुगन्ध है। भगवान महावीर द्वारा कथित कहानियों के प्रसार-प्रचार का मुख्य कारण यह भी था कि उनका प्रस्तुतीकरण उस युग की जन-भाषा 'प्राकृत' में हुआ था।

जैन कथा-साहित्य का प्रणयन राष्ट्र-भाषा हिन्दी में प्रचुर परिमाण में हुआ तथा हो रहा हैं। इससे जैन कथा-साहित्य प्रभूत लोक प्रिय बना है, फिर भी स्व अंचल की भाषा में कथित कहानी की अपनी विशिष्टता और भीतर की पहचान होती है। इसीलिए गुजराती, कन्नड़, राजस्थानी आदि भाषाओं के जैन लेखकों/संतों ने अपनी भाषा-बोली में जैन-कथा-साहित्य का

सृजन किया। यह सब सोच कर मैंने भी अपनी मातृभाषा 'हरियाणवी' में जैन कथाओं की रचना हरियाणवी भाषा भाषी पाठकों के लिए की है। यह भाषा भारत के जिस क्षेत्र/प्रदेश में बोली जाती है, उस प्रदेश के गौरव और वहाँ की संस्कृति में भीगे लोगों के बारे में कुछ न कहना अनुचित होगा। अतः कुछ शब्द हरियाणा क्षेत्र उसकी गरिमा के सम्बन्ध में कहना चाहूँगा।

हरियाणा एक ऐसा प्रान्त है, जहाँ हरि–श्रीकृष्ण ने पार्थ को गीता का उपदेश दिया था। वेदव्यास ने इस भूभाग को 'धर्मक्षेत्र' कहा है। इस प्रदेश की एक महती विशेषता यह है जो उल्लेखनीय है कि यहाँ वैदिक-जैन और बौद्ध भारत की तीनों संस्कृतियों का स्मरणीय संगम हुआ है। वैदिक धर्म के गीतोद्भव के साथ यहाँ बौद्धों के विहारमठ भी बनें। पुरातत्त्व विदों के अनुसार वर्तमान का अबोहर नगर पूर्व में बौद्धगृही नगरी के नाम से जाना जाता था। यहाँ के उत्खनन-खुदाई में बुद्ध और महावीर की बहुमूल्य प्रतिमाएं मिली हैं। बौद्ध धर्म के सामान्तर जैन धर्म भी हरियाणा में प्रभूत फला-फूला है। कहा जाता है कि भगवान के पावन चरण भी यहाँ की धरती पर पड़े थे। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि हरियाणा प्रदेश का प्रसिद्ध नगर हिसार ही जैन नगर इषुकार था।

हरियाणा कृषि एवं ऋषि की परम्परा से धनी और संपन्न प्रदेश है। यहाँ के लोग भोले, सरल, निष्कपट, निश्छल और विशुद्ध शाकाहारी हैं। दूध-दही की यहाँ की प्रचुरता इस लोकोक्ति से स्पष्ट हो जाती है :

देसाँ में देस हरियाणा।
जहाँ दूध-दही का खाणा।।

यहाँ के लोग स्वस्थ, बलवान, हृष्ट-पुष्ट और सादा जीवन जीने वाले होते हैं। स्त्री-पुरुष की बराबरी अथवा कंधे-से-कंधा-मिलाकर चलने की गति हरियाणा में देखी जा सकती है। पुरुषों की तरह स्त्रियाँ भी परिश्रमी और पुरुषों के साथ खेती में काम करती हैं।

ऐसी कृष्ण-बुद्ध और महावीरमयी पुण्य धरा पर मेरा जन्म हुआ। यद्यपि संत-श्रमण का अपना कोई प्रान्त नहीं होता। सन्त सबका होता है और सब उसके अपने होते हैं। फिर भी परिचय की प्रासंगिकता के कारण यह बताना पड़ा है कि मेरी मातृभाषा-स्वकीय-अपनी बोली हरियाणवी है। परिचय के प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि हरियाणवी हिन्दी की ही उपभाषा है। वैसे भी हरियाणा हिन्दी भाषी क्षेत्र है। भाषा-शास्त्रियों ने हिन्दी का ही एक प्रकार हरियाणवी हिन्दी को कहा है। इस भाषा में प्यार का इतना खुलापन है कि 'आप' और 'तुम' जैसे शब्द दूरी के आवरण में ढके आडम्बरी माने जाते हैं। अतः यहाँ छोटे-बड़े-पूज्य सब के साथ तू-तेरा

ही सहजता/निश्छलता के साथ बोला और सुना जाता है। कितनी सरलता है, यहाँ के जीवन में ! परम आत्मीयता, खुलेपन और सहजता की यह हरियाणवी भाषा-संस्कृति है।नगरों में यह आडम्बरी सभ्यता बन जाती है और तब भाषा आडम्बर का आवरण ओढ कर तू से 'तुम' और तुम से 'आप' आत्मीयता के सहज स्वरूप को चारों ओर से ढक लेती है। 'आप' की नकली बनावटी चमकीली चादर से ढके लोग 'तू' को असभ्यता और गँवारपन कहकर हृदय की धवलता/निर्मलता का मखौल उड़ाते हैं। मखौल उड़ाते समय ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि भक्त जब विह्वल होकर अपने आराध्य भगवान को 'तू' कहकर पुकारता है, तब क्या वह सचमुच गँवार या असभ्य बन जाता है या भगवान के साथ सहज आत्मीयता से जुड़ा होता है ? भक्त कहता है-"भगवान तू कहाँ है? तू मेरी पुकार क्यों नहीं सुनता? मेरी बारी में तू कहा चला गया? मेरे लिए तू कहाँ सो गया है? यद्यपि प्रभु इन सब भावों से (आना-जाना) मुक्त है परन्तु भक्त की ये पुकार है। तुलसी ने तो अपने राम से स्पष्ट कहा है :

तोहि मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावै।

हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी ।

तू दानि हौं भिखारी।।

अर्थात् भगवन् ! तेरे-मेरे अनेक सम्बन्ध हैं। उनमें तुझे जो अच्छा लगे, उसे ही मान। जैसे मैं तो प्रसिद्ध पापी हूँ ओर तू पाप पुंजों को नष्ट करने वाला (हरि) हैं। तू अगर दाता-दानी है तो मैं तेरे द्वार पर खड़ा भिक्षुक-याचक हूँ।

'आप' के इस आडम्बर की आज तो स्थिति यह हो चली है कि माता-पिता भूल से अपने बच्चे को 'तू-या तुम' का वात्सल्य भरा, अपने बड़े होने का प्यार नहीं दे पाते। बच्चा माता-पिता के लाड़-दुलार का भूखा रहता है। जो लाड़ पिता या माता के 'तू' में ही मिल सकता है, वही लाड़-दुलार 'आप' में कैसे सम्भव है? कृष्ण और यशोदा की बातचीत में 'तू तेरे' के सम्बोधन में माँ की ममता और पुत्र की आत्मीयता निम्न पंक्तियों में देखते ही बनती है। कृष्ण माता यशोदासे कहते हैं- माँ तू तो बहुत भोली है, जो इन ग्वाल-बालों के बहकायें में आकर इनका विश्वास कर लेती हैं, यथा-

तू जननी मन की अति भोरी,

इनके कहे पतियायो !

इसी तरह यशोदा कृष्ण से कहती हैं:

सूर-स्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत ।

अर्थात्, लाला, मैं गोधन की सौगंध खाकर कहती हूँ मैं ही तेरी माता हूँ और तू मेरा बेटा है। लेकिन आज की स्थिति यह है कि माता के मुँह से भूल से भी शिशु के लिए 'तू' निकल गया तो मानो बड़ा भारी अपराध हो गया। बच्चे को पालने में लिटाकर उसके हाथ में खिलौना देकर आज की माता उससे कहती है-"आप इस खिलौने से खेलिए, रोना नहीं, मैं अभी आ रही हूँ" फिर लौटकर कहती है- "अरे-अरे ! आप तो रोने लगे हो? आप जल्दी बड़े हो जाइए। तब आप बाहर जाकर खेला करेंगे, रोना छोड़ देंगे।"

इसी संदर्भ में एक विनोद है। जन्म लेने के बाद पिता अपने नवजात शिशु से कहता है- आपने जन्म ले लिया, आप पैदा हो गए? यहाँ लगता है जैसा शिशु नहीं 'आप' का जन्म हुआ है,

कौन जानता है कि इस आडम्बर की सीमा कहाँ रुकेंगी? सम्मान सूचक 'आप' सम्बोधन का मैं किंचित् भी विरोधी नहीं हूँ। मेरा अभिप्राय यही है कि 'तू' और 'आप' का स्थान मत बदलिए।

जिस तरह 'आप' वालों के लिए 'तू' अनुचित है, उसी तरह से जहाँ 'तू' के प्यार दुलार, लाड़ और वात्सल्य की जरूरत है, वहाँ 'आप का सम्मान उसी तरह बेमेल लगेगा, जैसे खीर में नमक की मिलावट कर दी गई हो। मेरा अभिप्राय मात्र इतना ही है कि जो सज्जन हरियाणवी के सहज-सरल खुलेपन, आत्मीयता और प्रेम से परिपूर्ण 'तू' का मखौल उड़ाकर जन्म लेते हुए शिशु को भी आप कहकर यह संस्कार डालना चाहते हैं कि हृदय की सहजता को ढका ही रहना चाहिए। यह तो विडम्बना ही कही जाएगी।

जैसा कि मैंने पूर्व में कहा, मातृभाषा हरियाणवी होने के कारण मैंने प्रस्तुत कहानियों का सृजन उस भाषा में किया है। भाषा और जाति के प्रति भगवान महावीर की उदार दृष्टि भी मेरी प्रेरणा रही है। राष्ट्रभाषा हिन्दी में विविध विषयों पर मेरी तीस पुस्तकें पाठकों के हाथों में पहुँच चुकी हैं, पर हरियाणवी भाषा में रचित और प्रकाशित यह मेरी प्रथम कृति है। इसके साथ मैंने 'उत्तराध्ययन-सूत्र' को भी हरियाणवी भाषा में प्रस्तुत किया है।

अब कुछ जानकारी प्रस्तुत कृति के विषय में भी। इस पुस्तक में संकलित/संयोजित कहानियाँ जैन कथा-साहित्य के विपुल भण्डार से चुनी गई है। इनमें सहज सरलता/रोचकता के साथ-साथ जीवन-संदेश, जीवन-रस और मानव को वस्तुतः मानव बनाने की प्रेरणा छिपी है। सभी कहानियों में जीवन के विविध पहलुओं को छुआ गया है। इन कथाओं में कुछ

भगवान महावीर की स्वमुखी कथाएं हैं,कुछ जैनाचार्यों द्वारा कथित कथायें हैं। यह विश्वास भी आपको देना चाहूँ कि इनकी उपादेयता/उपयोगिता असंदिग्ध है।

कथाओं की हरियाणवी प्रस्तुति कैसी है, इसका निर्णय तो हरियाणवी भाषा के विद्वान् ही करेंगे। मेरा उद्देश्य तो इतना ही था की हरियाणवी क्षेत्र का आम आदमी भी अपनेपन की अनुभूति के साथ इसे पढ़े और लाभ उठायें। फिर भी पुस्तक की भाषा के हरियाणवी स्वरूप पर कुछ कहना प्रासंगिक होगा। हरियाणवी के भाषाविद् और रचनाकारों को भाषा सम्बन्धी सुझाव देने और भाषागत दोषों को इंगित करने में कदाचित कुछ सुविधा हो, इसी विचार से पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में कुछ कह रहा हूँ।

ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी की ही तरह ही हरियाणवी भी बोली और भाषा (डायलेक्ट एण्ड लैंग्वेज) दोनों है। जैसा कि पूर्व में कहा है, यह हिन्दी की उपभाषा है, पूर्णतः हिन्दी से अलग भाषा नहीं है। कोई भी भाषा चार अंगों के अलगाव से अलग और भिन्न होती है। वे चार अंग हैं- सर्वनाम, अव्यय, क्रिया और विभक्तियाँ। जिस भाषा की ये चारों चीजें भिन्न नहीं होंगी, उसकी लिपि बदलने पर भी भाषा भिन्न नहीं होती। यही कारण है कि भिन्न लिपि होने पर भी विद्वान् लोग उर्दू को हिन्दी ही मानते हैं।, क्योंकि इसके सर्वनाम, अव्यय, क्रिया और विभक्तियाँ वहीं हैं, जो हिन्दी की हैं। जैसे, मैं जाता हूँ, वाक्य का उर्दू में अनुवाद नहीं हो सकता, लेकिन अंग्रेजी और संस्कृत में इसके अनुवाद क्रमशः 'आई गो' और 'अहं गच्छामि' हो जाएंगे। अतः अंग्रेजी और संस्कृत का भाषा-अस्तित्व हिन्दी से अलग है, उर्दू का नहीं। यह बात अलग है कि जिस हिन्दी को हम उर्दू कहते हैं, उसमें कुछ भिन्नता इसलिए भासती है कि उसमें अरबी-फारसी के परकीय शब्दों की बहुलता/अधिकता है।

भाषा के इसी अलगाव की दृष्टि से हरियाणवी पर भी विचार करें। हिन्दी का उत्तम पुरुष सर्वनाम 'मैं' है। ब्रजभाषा में यह सर्वनाम यद्यपि 'हू' या 'हौं' है, पर 'मैं' का भी प्रयोग होता है, जैसे-'हू तोइ बताऊँ' और 'मैं तोइ बताऊँ'- दोनों प्रयोग हैं। लेकिन विभक्तियाँ बदली हैं- तुझे या तुझको की जगह तोइ का प्रयोग हुआ है। यहाँ यह भी दृष्टव्य है कि 'तोइ' बोली गत प्रयोग है, साहित्यिक लेखन रचना में भाषागत प्रयोग 'तोहि' होगा, जैसा कि विनयपत्रिका में तुलसी ने किया-है- मोहि तोहि नाते अनेक मानिए जो भावै। इसी तरह सूर ने 'हौं-मैं' दोनों सर्वनामों का प्रयोग किया है, यथा-

प्रभु हौं सब पतितन कौ टीको।
और पतित सब द्यौस चारि के हौं जन्मान्तर ही कौ।।

तथा- अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल,
महामोह को पहरि चोलना कंठ विषय की माल।

-सूर

तुलसी ने भी "हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी" प्रयोग लिखा है।

हिन्दी के 'जाता है' को हरियाणवी में 'जावै सै' कहेंगे। यहाँ 'है' क्रिया का परिवर्तन 'सै' में हुआ है, पर जाता का जावै में रूपान्तरण भर हुआ है। दोनों भाषाओं की क्रियाओं में अलगाव और समानता दोनों ही हैं। विभक्ति परिवर्तन पर विचार करें तो भिन्नता है। वह यह कि 'घर को' हरियाणवी में 'घरां' कहा जाएगा इसी तरह अव्यय शब्दों में भी भेद है- अंग्रेजी के 'हीयर' संस्कृत के 'यत्र' और हिन्दी के 'यहाँ' अव्यय की तरह हरियाणवी का अव्यय 'आड़े' है। निष्कर्ष यह कि हिन्दी के निकट और उसकी उपभाषा होते हुए भी हरियाणवी का अपना भाषा-अस्तित्व भी है।

हरियाणवी का क्षेत्र यद्यपि सीमित है, फिर भी यहाँ थोड़े-थोड़े अन्तर से उच्चारण और शब्दगत रूपों में भिन्नता है जो उच्चारण रोहतक के आस-पास है, वहीं शब्द जींद और हिसार के आस-पास नहीं बोले जाते। मेरे सामने भी समस्या थी कि किस एक रूप को अपनाने से भाषा का मानक और टकसाली स्वरूप स्थिर होगा। कहीं सेठ बोला जाता है तो कहीं 'सेट'। इसी तरह टेम, टैम, सुब, सुभ, शुभ और बी, भी के शब्द भेद तथा उच्चारण भेद ने भी मुझे दुविधा में डाल दिया। इसी संदर्भ में भाषाविज्ञान के मुख-सुख और प्रयत्न-लाघव (शौर्टकट) सिद्धान्तों ने इस समस्या का हल करने में मुझे बहुत मदद दी।

भाषा-विज्ञान का प्रभाव कभी बोली पर पड़ता है तो लिखित भाषा पर नहीं पड़ता और कभी दोनों पर पड़ता है। इन दोनों का प्रभाव हिन्दी पर ही देखें। दीनदयालु को दीनदयाल ही लिखा और बोला जाता है- दीनदयाल विरद संभारी। इसी तरह चंद्रवंशीय, रघुवंशीय और यदुवंशीय को क्रमशः चन्द्रवंशी, रघुवंशी और यदुवंशी बोलने-लिखने की परिपाटी बन गई है या एक मानक स्थापित हो गया है।

मुखसुख और प्रयत्नलाघव का ऐसा ही प्रभाव बोली पर तो हुआ है, पर लिखित भाषा में उसको स्थापित नहीं किया गया। कुछ उदाहरण इस संदर्भ में भी। नथ और रथ में 'थ' ही बोला और लिखा जाता है, क्योंकि स्पष्ट श्रुत है। लेकिन कहीं-कहीं देखने में आता है, हाथी का 'थ' बोलने में लुप्त हो जाता है। छोटे-बड़े चिल्लाते हैं-हाती आया, हाती आया।

पर लिखने में हाथी ही स्थापित है। इसी तरह चलते-चलते और गलती को चल्ते-चल्ते और गल्ती बोलते हैं। हरियाणवी बोली अधिक जाती है, उसका गद्य साहित्य बहुत कम है। इसीलिए मैंने कुछ शब्दों के बोली गत उच्चारणों को हटा कर उनका भाषायी रूप स्थिर करने का प्रयास किया है। यही प्रक्रिया मैंने उन शब्दों में भी अपनाई है, जिनके दो रूप प्रचलित हैं।

ब्रज भाषा के बोलने वाले 'तोइ' बोलते हैं, पर लिखित साहित्यिक भाषा में 'तोहि' लिखा जाता है, इसी तरह बोला हात जाता है, पर लिखा हाथ जाता है। यह सब ऊपर बताया जा चुका है। इसी सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर मैंने आंख्य को आंख, धन को दन, शांति, स्यांति को सांति, टेम को टैम और बी को भी, च्यार को चार, उन्नै को उसनै के रूप में अपनाया है। स्यांति में मैंने सांति को ही लिया है। ब्रजी, अवधी में भी श का बहिष्कार हैं उसके स्थान पर 'स' का प्रयोग है। हरियाणवी में भी श का प्रयोग मैंने मानक न समझकर शुभ को सुभ ही लिखा है। दो रूपों में मैंने जो एक रूप अपनाया है, उसका कारण यह भी है कि एक तो दूसरे प्रदेशों के लोगों को हरियाणवी समझने में अधिक सुविधा होगी और जो लिख-पढ़कर हरियाणवी के निकट आना चाहते हैं, उनको यह एक रूपता समझने में सुगमता देगी। टेम-टैम में देखें तो शुद्धत्व की दृष्टि से भी टैम को वरीयता दी जाएगी, क्योंकि मूल शब्द टाइम से टैम बनेगा, टेम नहीं: आइ=ऐ। ब्रजी में भी टैम ही बोला जाता है- का टैम है गयौ? इसी तरह मैंने कूकर, क्यूकर में क्यूकर रूप को ही अपनाया है, क्योंकि यह उच्चारण और भाषा दोनों की शुद्धता का द्योतक है।

इस तरह दो तरह से उच्चारित शब्दों की समस्या को हल किया गया।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, हरियाणवी मेरी मातृभाषा अवश्य है, पर हरियाणवी के लेखक के रूप में मेरा यह पहला प्रयास है। यह प्रयास सफलता के कितने निकट है और इसे कितनी दूरी तय करनी है, इसका निर्धारण तो भाषाविद् और भाषाशास्त्री ही करेंगे। यह स्वाभाविक है कि मुझे उनके/आपके निर्णय/निर्धारण की प्रतीक्षा रहेगी। इसके साथ ही एक बात और कह दूँ कि मेरे दादा गुरु पूज्य श्री मुनि मायारामजी महाराज ने हरियाणवी भाषा में जैन गीत रचे थे।

मेरा यह सोचना अन्यथा न होगा– श्रद्धेय गुरुवर्य ने हरियाणवी भाषा में जैन-साहित्य रचने का सर्वप्रथम जो उपक्रम किया था, जिन बीजों का वपन जो उन्होंने किया था यह प्रयास उन बीजों का ही पल्लवन है।

भाषा के प्रसंग को लेकर कुछ अधिक कह गया। पुस्तक के विषय में अब और अधिक न कहकर उनके बारे में बताना आवश्यक है, जिनकी कृपा, आशीष और सहयोग से यह पुस्तक लिखकर आप तक पहुँचा सका।

अपने विषय में इतना कहना आवश्यक समझता हूँ कि मैं तो मात्र कठपुतली हूँ। इस कृति के साथ अन्य सभी कृतियों के लिखने वाले सूत्रधार मेरे पूज्य गुरुवर ही है। उनके विषय में कुछ न कहना कृतघ्नता होगी। मैं परम श्रद्धेय, चारित्र चूड़ामणि, तप-त्याग-संयम की मूर्ति गुरुदेव मुनि श्री मायाराम जी महाराज का कृतज्ञ भाव से वंन्दन-स्मरण करता हूँ कि जिनका अदृश्य आशीर्वाद सदा ही मेरा सम्बल बना है। प्रातः वंदनीय परम श्रद्धेय गुरुदेव योगिराज श्री रामजीलाल जी महाराज मेरे गुरुमह थे, अर्थात् दादा गुरु। बताना चाहूँगा कि मेरे जीवन का निर्माण उनकी अहैतुकी कृपा के कारण हो सका है। जब मैं अबोध और अयाना था, तब ये कथाएँ मैंने उन्हीं के श्री मुख से सुनी थी। सच तो यह है कि यह सब उन्हीं का है, मेरा नहीं।

परम आराध्य गुरुदेव, जैन-संघ के शास्ता आचार्य कल्प, शासन-सूर्य गुरुदेव मुनि श्री रामकृष्ण जी महाराज जिन्होंने मुझ अबोध को बोध, मूक को वाणी और लेखनी प्रदान की है। गुरुदेव श्री के प्रति मेरा रोम-रोम कृतज्ञ है, उनकी कृपा का आभारी है और रहेगा।

अन्त में अपने सहयोगी मुनियों और श्रद्धाशील श्रावकों के सहयोग का उल्लेख करना भी चाहूँगा। गुरुदेव श्री के ये सभी सन्त रत्न, श्री रमेश मुनि जी, श्री अरुण मुनि जी, श्री नरेन्द्र मुनि जी, श्री अमित मुनि जी और श्री विनीत मुनि जी श्री हरि मुनि जी मेरी सेवा-सहकार का सदा ध्यान रखते है। इसके साथ ही स्नेहाधार सम्बोधि (मासिक) के यशस्वी सम्पादक प्रिय डा० विनय 'विश्वास' जिसे प्यार से मैं 'बिनू कहता आया हूँ, उनकी श्रद्धा के मोती भी इस कृति में जुड़े हैं। हरिगन्धा मासिकी (हरियाणा सरकार) के पूर्व सम्पादक परमगुरुभक्त डा० सोमदत्त जी बंसल (चण्डीगढ़) तथा हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान श्री सत्य प्रकाश जी गोस्वामी, इन दोनों ने इस कृति के लिये अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये हैं। ये सभी मेरे आशीर्वाद के सुयोग्य पात्र हैं?

पाठक लाभ उठाएँ, इसी आशा शुभाशंसा के साथ–

सुभद्र मुनि

जैन स्थानक, पी. पी. ब्लाक,
पीतम पुरा, दिल्ली-३४

भूमिका ■

हरियाणवी जैन कथायें

सुप्रसिद्ध एवम् स्वनामधन्य सर्जक गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी महाराज द्वारा सृजित प्रस्तुत कृति का ऐतिहासिक महत्त्व है। केवल इस कारण नहीं कि यह वर्तमान समय की मांग है, अपितु इस कारण भी कि यह इतिहास के निरन्तर लिखे जा रहे ग्रंथ में मौलिकता एवम् नवीनता का ऐसा अध्याय जोड़ने वाली रचना है, जो एकाधिक दृष्टियों से अभूतपूर्व महत्त्व से सम्पन्न है। दूसरे शब्दों में, इतिहास के लिए अनिवार्य बन जाने वाली विरल रचनाओं में से एक है-**'हरियाणवी जैन कथायें'**।

आरम्भ से ही जैन साहित्य की विशेषता रही है कि वह सदैव आभिजात्य भाषा के स्थान पर जन-भाषा के ही रूप में अभिव्यक्त हुआ। भगवान् महावीर की देशना अपने समय की अभिजात अथवा कुलीन भाषा-संस्कृत में नहीं अपितु उस समय की जन-भाषा-प्राकृत में मिलती है। इसे केवल भाषा-विषयक चुनाव ही कहकर टाला नहीं जा सकता। वास्तव में यह उस दृष्टिकोण का परिणाम है, जिसे न तो कभी स्तरीय कहलाने का मोह रहा और न ही कभी पुरस्कार आदि पाकर प्रतिष्ठित होने का। उसका उद्‌देश्य यदि कोई रहा तो केवल अधिक से अधिक लोगों तक अपना मंगलकारी मंतव्य पहुंचा कर उन्हें अधिक से अधिक लाभान्वित करना। यह उद्‌देश्य जन-भाषा को माध्यम बना कर ही सिद्ध हो सकता था, जो हुआ भी। इतिहास साक्षी है कि जैन साहित्य का महत्त्वपूर्ण अधिकांश प्राकृत, शौरसेनी, राजस्थानी, गुजराती, कन्नड़ आदि जन-भाषाओं तथा बोलियों में रचा गया। हरियाणवी भाषा में जैन साहित्य का सृजन और प्रकाशन लगभग नहीं हुआ। जैन धर्म की हरियाणा में भी पर्याप्त उपस्थिति के बावजूद यदि जैन साहित्य का सृजन-प्रकाशन हरियाणवी में नहीं हुआ तो इसका एक कारण यह भी है कि यहां का शिक्षित वर्ग इस ओर से प्रायः उदासीन रहा। **हरियाणबी में जैन कथाओं का यह पहला संकलन है और यह इसके ऐतिहासिक महत्त्व का एक आयाम है। इस आयाम की सहज विशेषता है- जैन सहित्य को रचनात्मक रूप प्रदान करते हुए उसके प्रचार-प्रसार में वृद्धि करना और उसे अक्षर (जिस का क्षरण न हो) बनाना।**

इसके ऐतिहासिक महत्त्व का दूसरा आयाम है- हरियाणवी साहित्य के लिए अभूतपूर्व योगदान करना। हरियाणवी में अब तक पद्य-गीतों (रागणियों) और स्वांगों (सांग) के रूप में ही थोड़ा बहुत साहित्य उपलब्ध रहा है। वह भी मौखिक रूप में अधिक और लिखित रूप में कम। परिणामतः हरियाणवी साहित्य की अनेक रचनायें मात्र स्मृति पर आधारित होने के कारण धुंधली पड़ते हुए लुप्त होती जा रही हैं। जो हैं वे या तो पद्य रूप में हैं और या फिर

लोक-नाट्य के रूप में। गद्य के रूप में हरियाणवी साहित्य लगभग नहीं है। कथाकार गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी महाराज ने इस अभाव को रचनात्मक ढंग से अनुभव किया, जिसका परिणाम है यह कहानी-संकलन। वास्तव में यह ऐसा प्रथम संकलन है, जिस में हरियाणवी को ही सभी कहानियों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया गया है। इस दृष्टि से इन का ऐतिहासिक महत्त्व निर्विवाद रूप से स्वतः सिद्ध है। यह रचना इस बात का जीता-जागता प्रमाण भी है कि **हरियाणवी हिन्दी की एक ऐसी बोली है, जिसमें स्वतंत्र भाषा के लिए अपेक्षित क्षमताएं और सम्भावनाएं पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं** । हरियाणवी का यह दुर्भाग्य है कि अब तक उसे विविध गद्य-विधाओं की समर्थ रचनायें लिपिबद्ध रूप में प्राप्त नहीं हो सकीं। हरियाणवी के बोली मात्र रह जाने के प्रमुख कारणों में से यह भी एक है। अन्यथा समर्थ सहित्य संपदा के कारण हरियाणवी को भी उसी तरह 'भाषा' की मान्यता प्राप्त होती, जिस तरह मध्य काल में अवधी और ब्रज को प्राप्त हुई। 'हरियाणवी जैन कथायें' इस दृष्टि से भी ऐतिहासिक महत्त्व की सहज अधिकारिणी कृति है। यदि इसी प्रकार हरियाणवी की साहित्य-श्री समृद्ध होती रही तो वह दिन दूर नहीं जब हरियाणवी को भी एक समर्थ भाषा माना जाने लगेगा। यदि ऐसा हुआ तो **'हरियाणवी जैन कथायें जैसी कृतियां हरियाणवी साहित्य-भवन की मजबूत और गौरवशाली नींव सिद्ध होंगी** । अनेक हरियाणवी विद्वान् और साधारण पाठक आश्चर्य-चकित रह जायेंगे यह देख कर कि हरियाणवी में ऐसी कहानियां भी रची और लिखी जा सकती हैं। हरियाणवी साहित्य के लिए गुरुदेव का यह मौलिक और वृद्धिकारी योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

धर्म इस पुस्तक की आत्मा है और हरियाणवी इसका शरीर। साहित्य-समीक्षा की शब्दावली का प्रयोग किया जाये तो धर्म इसकी अंतर्वस्तु है और हरियाणवी इसका रूप। यहां अभिव्यंजित धर्म की विशेषता है कि दुरूहता इसमें लेश-मात्र भी नहीं। हरियाणा के लोगों की तरह सीधे-सीधे साफ साफ ढंग से अपनी बात ये कहानियां कहती हैं। यही कारण है कि इन्हें पढ़ने वालों को यह कहीं नहीं लगता कि वे जैन धर्म के उच्चतम मूल्यों को पढ़ रहे हैं जबकि वास्तविकता यही है। यह इन कहानियों की सहजता का सूचक है। महान् उद्देश्यों को इतने सहज-सरल ढंग से अभिव्यक्त करना सभी रचनाओं के लिए एक दुःसाध्य चुनौती रही है, जिसे ये कहानियां बखूबी साध लेती हैं। व्यापक पाठक-वर्ग की उत्सुकता निरन्तर जगाये रखते हुए ये जैन धर्म की अनेक मान्यताओं से उसका सहज परिचय करा देने में पूर्णतः समर्थ हैं।

इनकी सामर्थ्य का एक पक्ष यह है कि जीवन के जटिल से जटिल प्रसंगों को भी उस हरियाणवी में ये आसानी से पिरो देती हैं, जिसके अस्तित्व का आधार ही रहा है -सहजता। जैसे 'आत्मालोचना' जीवन का एक जटिल प्रसंग है, 'आनंद का खुज्जाना' शीर्षक कहानी में 'कपिल' चोरी का संदेह होने के कारण राजा के पहरेदारों द्वारा पकड़ा जाता है। न्याय के लिए राजदरबार में उसे पेश किया जाता है तो वह अपने निर्दोष होने से जुड़ी बातें बताता

है। राजा को न केवल उसके निर्दोष होने का विश्वास हो जाता है अपितु उस से वह इस सीमा तक प्रभावित भी हो जाता है कि उसे कुछ भी मांग लेने के लिए कहता है। तब 'कप्पिल' सोचता है कि आखिर वह क्या मांगे जो जीवन-भर उसे आनन्द देता रहे। विचार करते-करते वह इस नतीजे पर पहुंचता है कि उसे राजा का समूचा राज्य ही मांग लेना चाहिए। वह राज्य मांगने वाला ही होता है कि "**उसके दमाग मैं बीजली-सी चिमकी! एक नई ए बात उसके जी मैं आई- कप्पिल! तन्नै धिक्कार सै! तू इतणा गिर ग्या, जो राज्जा तन्नैं इनाम देणा चाहवै सै तू उस्सै नैं बरबाद करण की सोच्चण लाग रह्या सै! धिक्कार सै मन्नैं अर धिक्कार सै मेरे जी की तिरिस्ना नैं!**" यहां ध्यान देने योग्य विशेषता इस कहानी-कला की यह है कि 'कप्पिल' के मन में जो भाव आ-जा रहे हैं, उनका गतिशील चित्र उभरकर सामने आ जाता है। इस प्रकार आत्मालोचना जैसी अदृश्य प्रक्रिया को भी दृश्य रूप मिलता है। हरियाणवी भाषी लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि मन में घटित होने वाली प्रक्रियाओं को ठीक-ठीक शब्द देना कितना कठिन कार्य है! इन कहानियों में अनेक स्थलों पर यह कठिन कार्य आसानी से सम्पन्न होता है जो गुरुदेव-श्री की ऊर्जस्वी लेखन-क्षमता का सूचक है। इसी प्रकार 'दुयालु राज्जा' शीर्षक कहानी में राजा का अंतर्द्वंद्व देखने लायक है जो बहुत कम शब्दों में साकार हो उठा है- "**राज्जा नैं सोच्ची- मैं तै बड्डे धरम-संकट मैं फँस ग्या । कबूत्तर नैं ना बचाऊं तै यो बिचारा जान तै ज्यागा । कबूत्तर नैं ना छोड्डूं तै बाज भूक्खा मर ज्यागा । माड़ी वार वे सोच-बिचार करदे रहे । फेर वे भित्तर-ए-भित्तर हाँस्से ।**" यहाँ इतने कम शब्दों में राजा के मन में चलने वाली दुविधा को आकार दे दिया गया है कि बिहारी की काव्य-कला याद आती है। राजा जब "भित्तर-ऐ भित्तर हाँस्से" तो स्पष्ट हो गया कि दुविधा समाप्त हो चुकी है और वे एक निश्चित कर्त्तव्य का पालन करने के लिए कटिबद्ध हो चुके हैं। अवसर राजा के जीवन की कठिन से कठिन परीक्षा का है परन्तु राजा को वह एक खेल जैसा प्रतीत हो रहा है। इसीलिए ऐसी कठिन परिस्थिति में भी वे भीतर ही भीतर हँस सकते हैं। यह हँसी धर्म के आधार पर कठिनाई का उपहास करने वाली हँसी है। परिस्थितियों को स्वयं पर हावी न होने देने की दृढ़ता से पैदा होने वाली हँसी है यह। कहानी का यह छोटा-सा वाक्य अर्थ की अनेक परतें अपने में समेटे हुए है। एक ओर यह राजा के **जीवट** को तो दूसरी ओर परीक्षा के **बौनेपन** को उभारता है। दोनों के बीच का तनाव इस अकेले वाक्य से उद्घाटित हो जाता है। उल्लेखनीय है कि ऐसे वाक्य उस हरियाणवी में लिखे गए हैं, जिसमें लिखित कहानियों व गद्य के अन्य रूपों की कोई परम्परा नहीं है। स्पष्ट है कि ऐसे व्यंजक वाक्य कहानियों के गठन तथा विन्यास में अपनी अर्थ-समृद्ध भूमिका तो निभाते ही हैं, **हरियाणवी के आगामी साहित्य को अत्यंत ऊर्जस्वी परम्परा की विरासत भी सौंपते हैं ।**

सुगठित कथा-विन्यास इस विरासत की विशेषता है। सभी कहानियां मनुष्य-मात्र के लिए

मूल्यवान् विचार अभिव्यक्त करती हैं। ये विचार पूरी कहानी के माध्यम से भी व्यंजित होते हैं और कहानी के बीच-बीच में भी प्रसंगानुसार उभरते हैं। कहानी के बीच में आने वाले विचार प्रायः कथा-प्रवाह में बाधा उपस्थित करते रहे हैं परन्तु प्रस्तुत कहानियां विचारों को इस कुशलता से व्यक्त करती हैं कि न कथा-प्रवाह बाधित होता है और न ही विचार मखमल में पैबंद की तरह अलग से आकर्षित करते हैं। कहीं ये विचार संवादों के रूप में व्यक्त हुए हैं तो कहीं वर्णन के रूप में। संवाद शैली जैन आगमों में ज्ञान-प्राप्ति के प्रमुख साधन के रूप में प्रयुक्त होती रही है और इस सुदृढ़ परम्परा का दक्ष उपयोग इन कहानियों में किया गया है। 'परभू के दरसन' शीर्षक कहानी में भगवान् महावीर ने फरमाया है, **"हे गोत्तम! न्यूं-ए होया करै । जो भूंडे करम आदमी नै पैह्ल्यां कर राक्खे हों, जिब ताईं उनका फल ना भोग ले, वे कटते कोन्यां अर आपणे टैम पै परगट होया करैं । नंदन मनियार बेमारी तै छूट्या-ए कोन्यां ।"** यहां जैन-दर्शन के कर्म-सिद्धान्त को बताया गया है। नंदन मनियार के विषय में बताते हुए भगवान् महावीर इस सिद्धांत को कह देते हैं। सम्पूर्ण कथा-विन्यास के बीच में आया यह सिद्धान्त और विचार कथा प्रवाह को बाधित करने के स्थान पर गति प्रदान करता हैं। 'नंदन' नामक मुख्य पात्र की कहानी इस से और अधिक उजागर होती है। यही है **'विचार'** को भी कहानी-कला का अंग बनाकर उपयोग करने का सामर्थ्य, जिस से ये कहानियां सम्पन्न हैं। 'सुथराई का घमण्ड' शीर्षक कहानी में सनत्कुमार के त्रिलोक-विख्यात रूप-सौंदर्य को देखने दो देवता उनके पास आते हैं। राजदरबार में वे सनत्कुमार के सौंदर्य के साथ-साथ उसके सौंदर्य-विषयक अहंकार को भी देखते हैं। तभी उसे कोढ़ हो जाता है। वह वैराग्य-भाव में निमज्जित होकर मुनि-दीक्षा अंगीकार कर लेता है। वहीं दोनों देव तपस्वी मुनिवर सनत्कुमार के पास वैद्य बनकर आते हैं और उनके सम्मुख उन्हें नीरोग बना देने का प्रस्ताव रखते हैं। मुनिवर अपनी उंगली पर थोड़ा- सा थूक लेकर अपने रोगी शरीर पर लगाते हैं। जहां थूक लगता है, वहीं शरीर पूर्ण स्वस्थ हो जाता है। तब मुनि सनत्कुमार कहते हैं, **"सरीर के रोग मेट्टण खात्तर तै मेरे धोरै घणी-ए सिद्धी सैं। पर सरीर तै मेरा कोये बी मतलब कोन्या । यो बेमार रहै अक ठीक रहै, मन्नैं के । मैं तै आतमा पैं चड्ढ्या होया करमां का मैल धोणा चाहूं सूं । या तै मेरी कमअकली थी अक् ईब ताईं मैं सरीर के रूप नैं-ए देखदा रह्या ।"** स्पष्ट है कि यहां एक दार्शनिक विचार रूपायित किया गया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहानी दार्शनिकता का संवहन करते हुए भी बोझिलता से पूर्णतः दूर व सुरक्षित बनी रही। वैचारिकता उभरी तो कथानक की घटनाओं के कुशल ताने-बाने से स्वयमेव उभरी, कहानी पर उसे आरोपित नहीं किया गया। यही कारण है कि **एक दार्शनिक विचार भी पाठक के लिए हृदयग्राही बन गया । विचार यदि अनुभूति बन जाये तो वह साहित्यिक उपलब्धि का चरम शिखर होता है,** जिसे उपरोक्त उद्धरण में लेखकीय क्षमता ने सहजता से स्पर्श किया है। अनुभूति बन जाने वाला एक और विचार 'मामन सेट के बलद' शीर्षक कहानी में भगवान्

महावीर के मुखारविंद से व्यक्त हुआ है- "**जिस धन तै आदमी का जी आच्छे काम करण मैं लाग्गै ओ धन पुन्न का अर जिस तै जी मैं कोए आच्छा काम करण का ख्याल ना आवै ओ धन पाप का हो सै ।**" यहां पाप और पुण्य के धन के बीच अंतर कितनी सादगी से बता दिया गया है! अनुभव से आलोकित हो उठने वाले विचार के रूप में यह पूरी कहानी उभरी है । इसी प्रकार ' करणी अर भरणी' शीर्षक कहानी में भी घटना- संकुलता के बीचों-बीच चलने वाले संवादों में से एक विचार आया है-"**या राज-पाट की भूख घणी माड़ी हो सै ।**" यहां '**माड़ी**' शब्द की अर्थ-व्यंजकता देखते ही बनती है । हरियाणवी का ठेठ शब्द है यह, जो तृष्णा की हीनता से लेकर लोभी व्यक्ति के संताप और उसकी नीचता तक अनेक अर्थ व्यक्त कर रहा है। उपरोक्त सभी तथा ऐसे ही अन्य विचार मनुष्यता की रक्षा एवम् वृद्धि के लिए कितने मूल्यवान् हैं, यह अलग से बताने की आवश्यकता नहीं । आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न पात्रों के जीवन-संदर्भों से कहानी में उगते इन विचारों को आचरण से सार्थक किया जाए। आचरण भावात्मक सक्रियता के बीज से उगता है और ऐसे बीज आते हैं इन कहानियों के प्रभाव से। विचार, अनुभव और संवेदनायें इन रचनाओं में परस्पर इस सीमा तक संगुम्फित हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करना उनके साथ अन्याय करने जैसा लगता है। यह इनके कथानक का सुगठित विन्यास भी है और समर्थ मूल्यों का 'कहानी' के रूप में समर्थ संवहन भी ।

इन कहानियों में कथा-रचना की एकाधिक पद्धतियों के ऊर्जस्वी प्रयोग से वैविध्य की पर्याप्त सृष्टि प्राप्त होती है । वर्णन कथा-रचना की सर्वाधिक उपयोग की गई पद्धति है । कारण यह कि वर्णन से कथा-रस की सृष्टि भी होती है और कहानी इस से आगे भी बढ़ती है। आवश्यकतानुसार कभी तेज गति से तो कभी मंद गति से। वर्णन से एक ही बात को रोचक ढंग से विस्तार भी दिया जा सकता है और विस्तृत क्रिया-व्यापार को संक्षिप्त भी किया जा सकता है। जो बातें किसी भी अन्य पद्धति व माध्यम से व्यक्त नहीं की जा सकतीं उनके लिए वर्णन एक सक्षम पद्धति है। प्रस्तुत पुस्तक में इस पद्धति का समर्थ प्रयोग स्थान-स्थान पर किया गया है। 'दयालु राज्जा' शीर्षक कहानी के इस उद्धरण में वर्णन की कला द्रष्टव्य है-"**जिब्बै-ए राज्जा नैं सेवकां के हाथ एक तराज्जू मंगाया । उन् नैं एक पालड़े मैं कबूत्तर बिठाया अर दूसरे पालड़े मैं चक्कू तै आपणी देही का मांस काट-काट कै काड्ढण अर धरण लाग्गे । पर यो के? राज्जा नैं आपणे सरीर का आद्धा मांस काढ कै पालड़े पै धर दिया । फेर बी कबूत्तर आला पालड़ा-ए भारी रह्या । राज्जा मेघरथ की देही जाणुं लहू मैं न्हाई होई बेट्ठी थी । ताक्कत घटती जा थी । फेर भी उन नै धीरज ना छोड्या । आक्खर मैं राज्जा हिम्मत करकै पालड़े कान्नीं गए अर वे आपणे-आप पालड़े मैं जा कै बैठगे । भित्तर-ए-भित्तर उन् नैं संतोस था अक् उनका सरीर एक कबूत्तर की जान बचाण मैं काम आण लाग रह्या सै ।**" इस वर्णन से धारा प्रवाह कथा-रस की सृष्टि हुई है। कहानी तेजी से आगे बढ़ी है। विस्तृत

क्रिया-व्यापार संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त हो गया है कि इसके एक भी अंश को काट दिया जाये तो कहानी लड़खड़ा जायेगी। **एक-एक शब्द अपने होने की सार्थकता और अनिवार्यता स्वयं सिद्ध करता है** । यही है वर्णन का समर्थ प्रयोग, जो लगभग सभी कहानियों की विशेषता है।

इनकी एक और विशेषता है-चित्रात्मक भाषा की जीवंतता। हरियाणवी यों भी इस मामले में काफी समृद्ध है।' आनंद का खुज्जाना' में इस दृष्टि से ये वाक्य ध्यातव्य हैं– **"कपिल सोच मैं डूब ग्या । उसके मूं पै एक रंग आंदा अर चल्या जांदा । दूसरा रंग आंदा, फेर तीसरा । चाणचक खुसी तै उसका मूं खिल ग्या ।"** साफ-साफ घटित होती दिखाई देती है कहानी। कप्पिल की खुशी दिखाई देती है- उसका मुँह खिलने के रूप में। इसी प्रकार 'भगवान महावीर अर चण्डकोसिया सांप' की ये पंक्तियां भी उल्लेखनीय हैं- **"गुस्से मैं भरे फफकारते होए सांप नैं ध्यान मैं खड़े महाबीर के पायां मैं डंक मार्‌या । ईब कै उसके जैह्‌रीले दांद महाबीर के पां के गूंठे मैं गडगे। उनके गूंठे तै खून की जंगा दूध बैह्‌ण लाग्या ।"** भाषा का यह प्रयोग उस कौशल का पुष्ट प्रमाण है, जो अनेक कहानियों में स्थान-स्स्थान पर शब्द-रेखाओं से निर्मित होते चित्रों में मुखर होता है। ये चित्र कहानियों को जीवन्त रूप देने के साथ-साथ पाठक की कल्पना-शक्ति को जाग्रत भी करते हैं। यह कार्य अनेक उपमाओं ने भी बाखूबी सम्पन्न किया है। जैसे 'छिमा की मूरत' कहानी का यह अंश- **"फेर सुदरसन जमीन पै पलोथी ला कै बैठ ग्या । उसनैं ओड़े तै-ए भगवान् महाबीर की बंदना करी अर भित्तर-ए-भित्तर नमोक्कार मंतर पड़्‌ढण लाग्या । उसके भित्तर पहाड़ बरगी सान्ती थी ।"** यदि मन की शान्ति को यहां पहाड़ जैसी न कहा गया होता तो पाठक उसे देख नहीं सकता था। इस उपमा ने शान्ति की विराटता और अडिगता को एक साथ व्यंजित कर दिया ।

इन कहानियों के माध्यम से व्यंजित होने वाले कथा-कौशल की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है- ठेठ हरियाणवी का ठाठ। हरियाणवी लोक-जीवन की समृद्धि कहीं मुहावरों के रूप में आई है तो कहीं कहावतों के रूप में। ' आनन्द का खुज्जाना' में कप्पिल जब राजा के सामने अपराधी बन कर पेश हुआ तो **"उसकी आंख धरती मैं गड्‌डन नैं हो र्‌ही थी ।"** साथ ही 'दयालु राज्जा' में राजा अपने उत्तराधिकारी के विषय में जानने पर कहता है, **"थमनैं सोला आन्ने ठीक राय दी सै ।"** इसी प्रकार 'अनाथ कुण सै' में साधु ने जैसे ही राजा श्रेणिक को अनाथ कहा तो, **"या बात सुण कै राज्जा कै पतंगे लड़गे ।"** इसके अतिरिक्त 'साद्‌धू के सत्संग' में धर्म से दूर रहने वाले राजा को आचार्य केस्सी स्वामी जब धर्म के विषय में ज्ञान देकर आश्वस्त कर देते हैं तो कहानी कहती है, **"घणी बात के-राज्जा का पेट्‌टा भर ग्या ।"** ससुर ने बहुओं की समझदारी परखने के लिए जब धान के पांच-पांच दाने सभी को संभालने के लिए दिए तो बड़ी बहू ने 'अक्कल आपणी-आपणी' शीर्षक कहानी में सोचा- **"मेरा सुसरा तै बुड्‌ढाप्पे मैं अक्कल के पाच्छै लठ लिए हांडै सै ।"** इन सभी उद्धरणों में ठेठ हरियाणवी मुहावरों ने भाषा

को जो व्यंजक क्षमता प्रदान की है, वह निःसन्देह इन कहानियों को हरियाणवी की पूरी तरह अपनी कहानियां प्रमाणित करती है। **भाषा के साथ-साथ यह अनुभव की प्रामाणिकता एवम् परिपक्वता का सूचक भी है ।** पूर्णतः उचित बात के लिए **'सोला आन्ने ठीक'** तिलमिला उठने के लिए **'पतंगे लड़ना'**, अच्छी तरह सन्तुष्ट होने के लिए **'पेट्टा भरना'** और निरंतर मूर्खता के लिए **'अक्कल के पाच्छै लठ लिये हांडणा'** जैसे मुहावरों के प्रयोग ने इन कहानियों की भाषा को लोक-जीवन का जो रंग दिया है, वह इस कारण से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि हरियाणवी के पहले कहानी-संग्रह से इस सीमा तक परिपक्व भाषा की अपेक्षा सहजता से नहीं होती। इसीलिए भाषा का यह परिपक्व रूप पहली ही पुस्तक में पा कर पाठकों को सुखद आश्चर्य होगा। 'रोहिणिया चोर' में नगर के व्यापारी जब बढ़ती चोरियों की शिकायत राजा से करते हैं तो राजा के सामने अपने दरबारियों की झूठी राज्य-प्रशंसा बेनकाब हो उठती है। तब राजा सोचता है- **"कोए तै ईसा होंदा जो साच्ची बतांदा । आड़ै तै सारे कूएं मैं-ए भांग पड़ र्‌ही सै ।"** चोर की अत्यंत चतुराई को इसी कहानी में यह कह कर व्यक्त किया गया है कि वह **"गाड्डी की गाड्डी अकल ले र्‌हया था ।"** भगवान् महावीर की देशना के विषय में लिखा गया है, **"सूक्खे धान्नां पै धरम का पाणी एक सांस बरसै था ।"** हरियाणा की इन कहावतों ने इन कहानियों की भाषा को और अधिक गरिमा प्रदान की है। भरपूर दुःख में जब भरपूर सुख मिल जाये तो कहा जाता है कि **"सूक्खे धान्नां मैं पाणी आ ग्या ।"** दूसरी ओर धाराप्रवाह बारिश के लिए यह मुहावरा प्रचलित है कि **"राम एक सांस बरसै सै ।"** कहावत के साथ मुहावरे का भी एक छोटे-से वाक्य में प्रयोग (सूक्खे धान्नां पै धरम का पाणी एक सांस बरसै था।) यह बताने के लिए पर्याप्त है कि लेखक को एक ओर हरियाणवी पर पूरा अधिकार प्राप्त है तथा दूसरी ओर लेखक की साहित्यिक क्षमतायें भी असंदिग्ध हैं। इन दोनों के मणि-कंचन संयोग के बिना इतना समर्थ वाक्य नहीं गढ़ा जा सकता था। इन कहानियों में ऐसे वाक्य अनेक हैं।

हरियाणवी के अनेक ऐसे ठेठ प्रयोगों से ये रचनायें सुसज्जित हैं, जिनका किसी अन्य भाषा में पूर्णतः ठीक-ठीक अनुवाद होना लगभग असंभव है। ऐसे प्रयोग प्रत्येक भाषा के पूरी तरह अपने और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने वाले प्रयोग होते हैं। 'साच्चा भगत कामदेव सरावग' में कामदेव नामक श्रावक की साधना की परीक्षा लेने आने वाला देव हाथी बनकर कामदेव को पांवों तले रौंदते हुए कहता है-**"तेरे हाड-हाड दरड़ द्यूंगा ।"** इस प्रयोग की व्याख्या तो की जा सकती है परन्तु ठीक-ठीक यही अभिव्यक्ति इतने ही शब्दों में संभवतः विश्व की किसी भाषा में नहीं हो सकती। हरियाणवी के उक्त वाक्य में ही संपूर्ण ऊर्जस्विता के साथ इस स्थिति का समस्त तीखापन व अर्थ- गौरव व्यक्त हो सकता है। 'रोहिणिया चोर' में चोरियों की शिकायत राजा से व्यापारी इन शब्दों में करते हैं-**"म्हाराज! हम तै चोरियां नैं खा लिए ।"**

आशय यह कि चोरियों से हमें इतनी पीड़ा हो रही है जितनी किसी जानवर द्वारा खा लेने पर होती है। घनीभूत पीड़ा की यह अभिव्यक्ति हरियाणवी की अपनी विशेषता (जो शेष में नहीं) है। 'छिमा की मूरत' का अर्जुन माली जब प्रतिदिन न्यूनतम छह पुरुषों और एक स्त्री को मारने लगा तो "**सारी नगरी मैं रोहा-राट माच ग्या ।**" तुलना करके देखा जा सकता है कि हिन्दी के '**हाहाकार**' से हरियाणवी का '**रोहा राट**' शब्द कितना अधिक कारुणिक व मार्मिक है! 'अनाथ कुण से' में राजा की गर्वोक्ति है- "**मैं तै आपणी परजा का नाथ सूं अर कती लोह-लाठ ।**" यहां '**लोह-लाठ**' भी हरियाणवी का पूरी तरह अपना प्रयोग है। इतना सशक्त और प्रभावशाली प्रयोग है यह कि "**कत्ती लोह-लाठ!**" इन सभी प्रयोगों के विषय में यह कहना कदाचित् आवश्यक है कि इनमें से एक भी 'प्रयोग के लिए प्रयोग' नहीं किया गया है और न ही अपना हरियाणवी पांडित्य पदर्शित करने के लिए कहानियों में इन्हे बलात् ठूँसा गया है। कथा-प्रवाह में ये सभी प्रयोग इस प्रकार आये हैं कि इनके आने का अलग से आभास तक नहीं होता। कहानियों के रूप-विधान हेतु ये प्रयोग उनके लिए इतने अनिवार्य बन पड़े हैं कि कहानियों के साथ अन्याय किए बिना इन्हें उन से अलग नहीं किया जा सकता। यही है ठेठ हरियाणवी का ठाठ।

शब्द-चयन से लेकर वाक्य-गठन तक, स्थिति वर्णन से लेकर संवाद-योजना तक, कथानक से लेकर चरित्र-निर्माण तक और वातावरण-चित्रण से लेकर व्यंजक भाषा तक- कथा-रचना का एक भी पक्ष ऐसा नहीं, जिसकी दृष्टि से इन कहानियों को कमजोर कहा जा सके । ऐसा बहुत कम होता है कि किसी भाषा में पहले-पहल (गद्य-रूप) कहानियों की रचना हो और वह भी अत्यधिक सजग निपुणता के साथ! यह दुर्लभ उपलब्धि इस पुस्तक की भी है और हरियाणवी गद्य-साहित्य की भी। जैन धर्म प्रभावक वत्सल-निधि गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी महाराज का इन कहानियों के माध्यम से रूपायित होने वाला कथाकार रूप श्रेयस्कर भी है और प्रेरक भी। इस उत्कृष्ट, अद्वितीय एवम् ऐतिहासिक महत्त्व की कृति प्रस्तुत करने के लिए उनकी सृजन-क्षमता को बारम्बार वंदन।

— [signature]

हरियाणवी जैन कथायें

परभू के दरसन

एक बर राजगीर के गुणशील बाग मैं भगवान महावीर के दरसन करण राज्जा सरेणिक ठाठ-बाट गेल्यां आया। दरसन करकै ओ आपणे महलां मैं चाल्या गया। उसके जाएं पाछै, माड़ी ए वार होई थी, अक एक ओर अजनबी-सा राज्जा उनके दरसन करण आया। ओ सरेणिक तै घणा-ए सुथरा था। उसकी गेल्यां सरेणिक तै सो गुणे सेवक अर लोग-लुगाई थे। उसके अरथ, हात्थी, घोड़े अर दास-दास्सी भी घणे-ए सुथरे अर सब तै न्यारे चिमकण आले थे।

इन्दरभूती गोत्तम (जो महावीर के चेल्ले थे) के देखते-ए-देख्यां वे सारे न्यूं गैब हो गे जाणुं असमान मैं बिजली चिमकी हो, अर जिब्बै-ए गैब हो गी हो। यो देख कै गोत्तम स्वामी नैं घणा ताज्जब होया। उन नैं भगवान महावीर स्वामी की बंदना करी अर सुआल बूज्झया-

"हे परभू! मन्नैं आपणी आंख्यां तै ईसा कोए दरसन करण आला नहीं दीख्या जो आंधी-बिजली की तरियां आया हो अर चाणचक हवा की तरियां गैब हो ग्या हो। हे भगवान! यो कुण से मुलक का राज्जा था, मेरे तै बताण की किरपा करो।"

भगवान बोल्ले, "हे गोत्तम! यो किसे मुलक का राज्जा ना था। यो तै दर्दुर नां का देव था। तम नैं ठीक बूज्झी, अक यो बिजली की तरियां आया अर आंधी की तरियां चाल्या क्यूं गया?"

"हां भगवान! मैं यो हे जाणना चाहूं सूं।"

"तै सुणो गोत्तम! यो दर्दुर देव इस्से सहर मैं रह्या करता। इसके तीसरे पूरब जनम का नां था- सेट नंदन मनियार। एक बर यो मेरे समोसरण मैं आया था। मेरी बाणी सुण कै इसनै सरावग के बरत ले लिए थे। इस के जी मैं पूरी सरधा होगी थी। नेम-बरत पालती हाणां इसनैं दुनिया के भले के घणे-ए काम करे थे। उस टैम इसनैं नंदा नां की एक बौड़ी भी बणवाई थी। राज्जा सरेणिक तै इसनै इस काम की इजाजत मांगी थी। सरेणिक नै बौड़ी बणान का काम आच्छा सिमझ कै इजाजत दे दी थी।

बौड़ी बण कै त्यार हो गी तै राजगीर की जन्ता नैं फैदा होया। बौड़ी का पाणी खसबू आल़ा था। उसमैं लोग न्हाते। आण-जाण आल़े मुसाफर अराम करते। दुनिया नंदन मनियार की बड़ाई करदी, अर उस तै धन्न-धन्न कहती। नंदन नै आपणी बड़ाई आच्छी लागती। बौड़ी बणवाएं पाछे इसनैं लोग्गां की भलाई खात्तर बाग, धरमसाल़ा, होसधालय, दानसाल़ा, अलंकार साल़ा, अर चित्तरसाल़ा बणवाई। सारे लोग उनका फैदा ठाण लाग्गे। मनियार की घणी-ए बडाई होण लाग गी।

जिब तै नंदन नैं बरत लिये थे, उसनै साधुआं की बाणी सुणन का मोक्का नहीं मिल्या था। जाएं तै ओ आपणे बरतां नैं भूल ग्या अर दुनिया की बडाई मैं-ए बिचल़ ग्या।

समै कदे एक जीसा कोन्यां रहंदा। समै खराब आया। उसके सरीर मैं कई बेमारी लाग गी। उसनै घणे-ए इलाज कराए पर कोए फैदा ना होया। इलाज करण खात्तर दूर-दूर तै बैद भाज्जे आए। सब नैं आपणा-आपणा ग्यान अर तजरबा अजमाया, पर कोए-सा भी कामयाब कोन्यां होया।"

"हे परभू! ईसे आच्छे-आच्छे काम करण आलां का भी बेमारी ते पांडा ना छूटता?" गोत्तम नैं बीच मैं-ए हाथ जोड़ कै बूज्झ्या।

"हां गोत्तम! न्यूं ए होया करै। जो भूंडे करम आदमी नैं पहल्यां कर राक्खे हों, जिब ताईं उनका फल़ ना भोग ले, वे कटते कोन्यां। ओं आपणे टैम पै परगट होया करैं। उदै मैं आया करैं। करमां की दुआई बैद धोरै ना होती। हे गोत्तम! नंदन मनियार बेमारी ते छूट्या कोन्यां।

आग्गै सुणो- नंदन मनियार घणा-ए नाउमेद हो ग्या। आक्खर मैं उसनै एक बेमारी खतम करण खात्तर भारी इनाम अर पीशे देण की डूंडी पिटवाई , पर वा भी बेकार गई। उसका किस्से भी तरियां इलाज ना होया। उसकी उमेद टूट गी। मरण का टैम नजदीक आता रह्या। उसका जी उसकी बणवाई होई बौड़ी मैं लाग्या रह्या। धरम-ध्यान उसका छूट ग्या।

टैम आया, अर ओ मर ग्या।

... ओ नंदन मनियार सेट मरें पाछै आपणी बौड़ी मैं मींडक के रूप मैं पैदा होया। बौड़ी पै आन्दे-जान्दे, नहान्दे, अराम करण आल़े, बेमारियां ते छूट्टण आल़े, सारे लोग दान लेत्ते, अलंकार लेत्ते अर सदाबरत की रोट्टी खान्दे होए लोग नंदन मनियार की दिन-रात बडाई कर-कर कै छिक्या ना करते। मींडक बौड़ी मैं रह्वै था। ओ बार-बार नंदन मनियार का नां सुणदा रह्या, सुणदा रह्या। ओ भित्तर-ए भित्तर सोच्चण लाग्या, 'यो नंदन मनियार कुण था? यो नाम तै ईसा लाग्गै सै जाणुं सुण राख्या हो!'

दन-रात उसके कान्नां मैं पड़ती होई बात एक दन उसके दमाग मैं आ गी। उस कै आपणा पाछला जनम याद आ ग्या। ओ समझ ग्या, अक

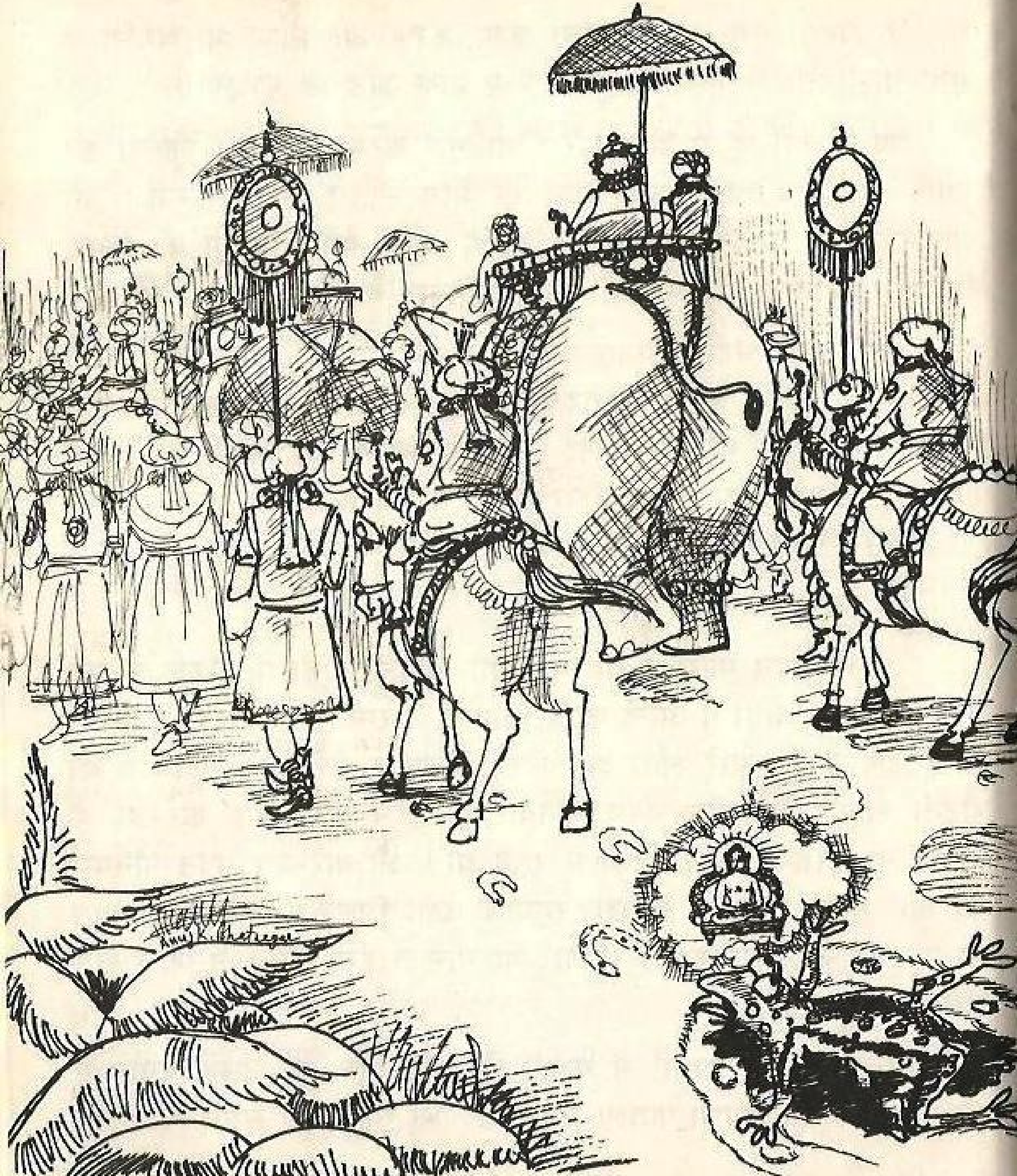

मैं-ए सेट नंदन मणिहार था। या बौड़ी मन्नैं बणवाई थी। मन्नैं आपणे लिए होए बरत तोड़ दिए थे। बौड़ी मैं मेरा मोह मरण ताईं भी कम नहीं होया था। उस मोह का फल़ मन्नैं मिल्या। मरें पाच्छै मन्नैं आड़े बौड़ी मैं मींडक बण कै पैदा होणा पड़्या।

मींडक के रूप मैं पैदा होण आले़ नंदन मनियार नै आपणा पाछला जनम आपणी आंख्यां के सामीं हाथ की लकीरां की तरियां कत्ती साफ दीक्खण लाग्या।"

"मींडक बणे नंदन मनियार का फेर के होया भंते (भगवान)! मैं न्यूं ओर जाणना चाहूं सूं।"

भगवान नै आग्गै बताई-

"मींडक बौड़ी मैं-ए रहता रह्या। एक बर कई साल पाछै,राजगीर मैं दुबारै मेरा आणा होया। समोसरण रच्या गया। सरेणिक फेर दरसन करण आवै था। ओ बौड़ी पै ठहर्या। दुनिया बार-बार मेरी भगती तै बडाई करण लाग रही थी।

मींडक नैं सुणी तै उसके जी मैं मेरे समोसरण मैं आ कै, दरसन करण की भावना बण गी। ओ मेरे दरसन करण नै चाल पड़्या। पर करमां के लेख तै कुछ ओर-ए थे। आपणे छोट्टे से सरीर तै,फुदक-फुदक कै चालती हाणां ओ एक घोड़े के पां तले़ आ ग्या। ओ रगड़्या गया। सरीर तै खून चाल पड़्या। ओ आपणे घायल सरीर नै ले कै, राह मैं तै एक कान्नीं हट लिया।

सरीर मैं बेदना लाग र्ही थी। उस टैम उसके मन मैं तीर्थंकर के दरसन करण के भाव थे। जाएं तै उसका मन पाछले जनम मैं लिए होए

बरतां मैं जम ग्या। उसनैं आपणा सरीर छोडती हाणां मेरी बंदना करी। नमोक्कार मंतर पढ़्या, अर सरीर छोड दिया।"

"भंते! फेर के होया? यो बताण की भी किरपा करो।"

"हे गोत्तम! मींडक देवलोक मैं देव बण ग्या। देव बण कै भी मींडक के जनम मैं करे होए पुन्न तै उसका ध्यान धरम मैं लाग्या रह्या। जाएं तै यो तीर्थंकर की बंदना करण खात्तर वैक्रीय सरीर (एक सरीर तै कई रुप बणान की बिद्या) धारण कर कै आड़ै आया था। वैक्रीय सरीर जिब गैब होवै सै तै उसका कोए कानुन कोन्यां होंदा। ओ असमान मैं चिमकी होई बिजली की तरियां गैब हो ज्या सै।"

"भगवान! या साच्ची कहाणी सुण कै आज मैं हैरान सूं। इस कथा तै मन्नैं बेरा पाट्या अक किस्से भी आदमी मैं या चीज मैं मोह का के नतीज्जा हो सै!"

"गोत्तम! लिए होए बरत तोड़ण तै सरधा भी झूट्ठी हो ज्या सै।"

"भगवान! आप नै जो बात बताई, उस पै मेरी पूरी सरधा सै।" न्यूं कह कै गोत्तम भगवान के चरणां मैं झुक गे।

❑❑

आनंद का खुज्जाना

"मां .... तू क्यूं रोवै सै?" छोट्टे-से बाल़क कपिल नैं आपणी मां की आंक्खां मैं आंस्सू देक्खे तै बूज्झ्या।

"हां बेट्टा .... के करूं ? बात ईसी-ए सै। ओ देख, नए पुरोह्त का जलूस लिकड़न लाग रह्या सै। कोए टैम था जिब म्हाराज जितसतरू म्हारा घणा-ए ख्याल राख्या करते, पर जिब तै तेरे बाब्बू गए, म्हारे कान्नीं लखाणा भी भूल गे।" मां नै कही।

"ईब मेरे बाब्बू कित गए ?" बाल़क नैं फिर बूज्झ्या।

मां नैं धोत्ती तै आपणी आंख पूंझी। बोल्ली, "बेट्टा ..... के बताऊं तन्नै? तेरे बाब्बू राज्जा के पुरोह्त थे। राज्जा कोए काम उन तै बूज्झे बिना कर्‌या-ए ना करै था। परजा मैं उनका पूरा-ए मान था। उनके मरें पाछै तै म्हारा सब किमै खू ग्या। जै आज तेरे बाब्बू होंदे तै यो जलूस उनका होंदा। उनके बिना हम कितणे गरीब हो गे...।"

बाल़क पै मां का दुख बरदास कोन्यां होया। बोल्या, "मां ! के मैं भी पढ़-लिख कै आपणे बाब्बू की पदवी हास्सल कर सकूं सूं?"

"कर क्यूं ना सकदा, जै तू मैहनत तै पढ़ैगा तै राजपुरोह्त बण सकै सै।" मां नैं कही।

"मां! ईब तू रोणा छोड दे । मैं पढ-लिख कै राजपुरोह्त बणूंगा।" बेट्टे नैं मां की आंख पूंझते होए कही।

कुछ दन बीत गे। बाल़क कपिल पड़्ढण की जिद करण लाग्या।

मां ने सोच्ची, 'इस नगरी मैं मेरे बेट्टे तै जल़ण आल़े घणे-ए सैं। लोग्गां नै मेरे बेट्टे के जी की बात सिमझ ली तै वे उसनै पड़्ढण-ए ना दें। उलटा-सीधा भका देंगे। उसके पड़्ढण-लिक्खण का एंतजाम तै सरावस्ती मैं कर देणा चहिए। ओड़े के अचार्य इन्दर दत्त इसके बाब्बू के आच्छे ढब्बी सैं। उनकी देख-रेख मैं छोरा आच्छी तरियां पढ-लिख सकै सै।' न्यूं सोच कै एक दन मां नै कपिल सरावस्ती भेज दिया। ओड़ै छोरा अचार्य जी तै मिला। अचार्य जी नैं बाल़क की पड़्ढाई की जुम्मेदारी आपणे सिर ले ली। उसके रैह्ण का एंतजाम ओड़ै के नगर सेट नैं कर दिया।

धीरे-धीरे कपिल बड़्डा हो ग्या। होणी नैं तै कुछ ओर-ए मंजूर था। नगर सेट कै रैहण आली एक दास्सी तै कपिल की मोहबत हो गी। आपणा-आप्पा कपिल पै सिंभल़ा कोन्यां। परेम की आंद्धी मैं बैह्कै उसनैं पढणा-लिखणा छोड दिया। अचार्य इन्दर दत्त नैं ओ घणा-ए सिमझाया। धमकाया-धमकूया भी पर कपिल कै ना लाग्गी एक भी। ओ तै परेम मैं बौल़ा हो र्‌ह्या था।

एक बर नगरी मैं बनड़्यां का बड़्डा ए त्युहार मन्नै था। जुआन छोरी-छोरे सज-धज कै ओड़ै जाण लाग रे थे। दास्सी नैं भी कपिल तै बढिया कपड़े-लत्ते अर गहणे मांग्गे। मिट्ठा-सा उलाहणा देंदी होई बोल्ली, "ईब तन्नै मेरा पल्ला पकड़्या सै तै मेरे जी की बात भी तै तूहे पूरी करैगा। ईब तन्नै छोड कै मैं किसके घरां जां। ओर किस तै कहूं आपणे जी की बात?"

कपिल सोच मैं पड़ ग्या। ओ ईब कित जावै, के करै, किसतै कहूवै

अर के कहवै? ओ आप्पै-ए ओरां कै रहवै था। उसकी सोच देख कै दास्सी नै सलाह दी अक "तू बाह्मण का सै। आड़े का राज्जा रोज तड़कै-तड़क दो मास्से सोन्ना दान कर्‌या करै। जो बाह्मण सब तै पहलां जा के असीरवाद दे उस्सै तै ओ सोन्ना दिया करै सै। तू तौला-सा राज्जा तै असीरवाद देण पहौंच जइए, सोन्ना तेरे हाथ लाग ज्यागा। ईब हाल तै मैं उस्सै तै गुजारा कर ल्यूंगी।"

या राय कपिल कै कत्ती जँच गी। सारी रात ओ याहे सोचदा रह्या। रात के तीसरे पैहर ऊट्ठ्या अर सोन्ना लेण खात्तर चाल पड़्या। अंधेरे मैं एक आदमी नैं जांदा देख कै पहरेदार चिल्लाए, "रै कुण सै .... कुण सै! जो इतणी रात नै भी हांडै सै । लाग्गै है- कोए चोर सै। पकड़ो . .... पकड़ ल्यो ....."

कपिल चाणचक होए सोर तै डर ग्या। बोल्या, "मैं चोर कोन्यां। मैं तो बाह्मण का छोरा सूं। भिक्सा लेण खात्तर राज्जा कै जां था।"

पहरेदारां नैं सोच्ची-अक, पकड़्या गया तै भान्ने मिलावै सै। उननैं ओ पाकड़ कै कैद मैं टूंस दिया।

आपणे आप नैं चोरां, डाकुआं अर बदमास्सां के बीच मैं देख कै कपिल नैं आपणे ऊपर घणी-ए सरम आई। उसनैं हट-हट कै मां याद आण लाग्गी। सोच्चण लाग्या,–जिब लोग्गां तै उसनै बेरा पाट्टैगा, अक उसका छोरा कैदखान्ने मैं सै तै उसपै के बित्तैगी? भित्तर ऐ भित्तर उसनै आपणे आप तै नफरत-सी होण लाग्गी।

तड़का होया। राज्जा परसेनजित सिंघासन पै बैट्ठे थे। मुजिरम पेस होण लाग्गे। कपिल का भी नंबर आया। सरम के मारे उसकी आंख

धरती मैं गड्डन नैं हो र्‌ही थी। राज्जा नैं ओ देख्या तै सोच्ची, यो तै ऊंच्चे घर का छोरा लाग्गै सै। पर, बेरा न क्यूं यो पकड़्या गया। न्यूं लाग्गै सै जाणुं गलती तै यो पाकड़ लिया हो। उसनैं बूज्झ्या, "रै कुण सै तू? रात नैं के करै था?"

"म्हाराज! मैं बाहमण का सूं। मन्नै सुणी थी, आप सोन्ना दान कर्‌या करो। उस्सै खात्तर मैं रात नै लिकड़्या था। आपके पहरेदारां नै मैं चोर सिमझ कै पाकड़ लिया।" कपिल नैं नरमाई तै जुआब दिया।

राज्जा नैं फेर बूज्झी,"साच्ची बता, तू कुण सै? साच्ची बोल्लैगा तै छूट भी सकै सै। झूठ बोल्लैगा तै करड़ी सजा मिल्लैगी।"

कपिल बोल्या,"म्हाराज। ऊं तै मैं चोर कोन्यां पर चोर सूं भी।"

"के मतलब? न्यूं कूक्कर?" राजा नै फेर बूज्झी।

"म्हाराज! मैं सुरगीय राजपुरोहत कस्सप का छोरा सूं। आड़ै पड्ढण आया था। पर ईब मन्नै पढणा छोड दिया। मन्नै आपणी मां अर नगर सेट तै अग्या लीए बिना उसकी दास्सी तै ब्याह कर लिया। या चोरी सै। इस नात्ते मैं चोर होया। अर मन्नैं किस्से की कोए चीज नहीं ठाई, इस नात्ते मैं चोर कोन्यां होया। मैं जो कुछ कहूं सूं ओ राई-रत्ती साच सै।"

राज्जा कै कपिल की बात्तां का यकीन आ ग्या। ओ बोल्या, "कपिल! मांग ले जो कुछ मांगणा हो। जो तू मांगैगा, मैं तन्नैं ओ हे द्‌यूंगा। यो मेरा बचन सै।"

बाहमण का सोच्चण लाग्या- राज्जा तै के मांगूं? जो मांगूंगा ओ हे राज्जा जरूर देगा। यो बचन सै राज्जा का। कपिल नैं हिसाब लाणा सरू कर्‌या-

दो मास्से सोन्ना तै थोड़ा र्‌हैगा। दो तोले मांगूं। यो भी थोड़ा पड़ैगा, जिब्बै-ए उसके दमाग मैं आई। फेर तै दो सेर सोन्ना मांगणा चहिए,जुकर घणे दन ताईं ठाठ तै गुजारा चाल्लैं जा। एक दन तै यो भी खतम हो ज्यागा, जाएं तै दो मण सोन्ना मांगणा ठीक र्‌हैगा।

कपिल न्यूं ए सोच्चें गया। आक्खर मैं ओ इस नतीज्जे पै पहौंच्या , मन्नैं राज्जा तै पूरा-ए राज मांग लेणा चहिए। राज्जा आग्गै ओ आपणी बात कहूण आला-ए था, अक उसके दमाग मैं बीजली-सी चिमकी! एक नई बात उसके जी मैं आई–कपिल तन्नैं धिक्कार सै! तू इतणा गिर ग्या, जो राज्जा तन्नैं इनाम देणा चाहूवै सै, तू उस्सै नैं बरबाद करण की सोच्चण लाग र्‌हूया सै। धिक्कार सै मन्नैं, अर धिक्कार सै मेरे जी की तिरिस्ना नैं।

फेर मैं के मांगूं? कपिल सोच मैं डूब ग्या। उसके मूं पै एक रंग आंदा अर चल्या जांदा। दूसरा रंग आंदा फेर तीसरा। चाणचक खुसी तै उसका मूं खिल ग्या। उन्नैं सोच्ची–उमेद अर तिरिस्ना तै अकास की तरियां अनंत सैं। इनका कित्तै भी अंत कोन्यां। मांगण तै कदे झोली कोन्यां भरती। आदमी की तै आतमा मैं ए सब किमे सै।

कपिल चुप रहूया। राजा ने टोक्या, “जो चहिए ओ मांग ले। बोलबाला क्यूं खड़्या सै?”

फेर कपिल कहूण लाग्या- “म्हाराज ! जो मन्नैं चहिए था, आज ओ मिल ग्या। मन्नैं आपणा आप्पा आड़ै आ कै पिछाण लिया। मन्नैं कदे भी जो ना सपड़े, आनंद का ईसा खुज्जाना मिल ग्या। ओ खुज्जाना सै-

आतम-ग्यान का। संसारिक धन ले कै ईब मैं के करूंगा?"

न्यूं कह कै कपिल नैं उस्सै टैम आपणे हात्थां तै आपणे बालां का लोच कर लिया। सब किमे छोड दिया। मुनी-धरम की दिक्सा ले ली। कई बरसां तांईं, करड़ा तप कर्‌या। आपणी आतमा सुद्ध बणा ली अर हमेस्सां खात्तर, तिरिस्ना अर मोह के कैदखान्ने तै छूट ग्या। उसनै केवल ग्यान हो ग्या, अर आक्खर मैं मुकती मैं गया।

दयालु राज्जा

भोत पराणी बात सै। पुण्डरीकणी नां की एक नगरी थी। ओड़े के राज्जा थे- धरमरथ। वे न्यां करण आले, दया करण आले अर बहादर राज्जा थे।

राज्जा के दो छोरे थे। एक का नां था- मेघरथ, दूसरे का था- दृढ़रथ। दोन्नू छोरां मैं बाप के गुण थे।

एक दन राज्जा नैं भरे दरबार मैं घोसणा करी– ईब मैं बूड्ढा हो लिया। राज-काज तै ईब मैं छूटणा चाहूं सूं। न्यूं सोच्चूं सूं अक, बचे होए टैम मैं धरम-करम करण की कोसिस करूं। संजम (सिन्न्यास) की राही चाल्लूं। दोन्नूं राजकमार लायक सैं। थम जिसनै कहो, उस्से नै राज्जा बणा दें।"

राज्जा की बात सुण कै दरबारी राज्जी हो गे। सारे कट्ठे बोल्ले, "म्हाराज ! धन्न सै आपनैं। आच्छे राज्जा की या हे पिछाण होया करै। आपणे बालकां नैं काब्बल बणा दे अर बची होई जिन्दगी धरम-करम मैं बितावै। दोन्नूं-ए राजकुंवार तारीफ के लायक सैं। गद्दी देण की बात आई तै गद्दी का पहला हक तै बड्डे राजकुंवार का ए होया करै सै। या हे रीत सै। आग्गै जीसी थारी मरजी।"

"थमनैं सोला आन्ने ठीक राय दी सै। ईब गद्दी पै मेरी जंगा मेघरथ नैं ए बैठणा चहिए।"

राज्जा नैं मेघरथ ताहीं राज्जा बणा दिया। परजा मेघरथ बरगे लायक न्यां करण आले अर मन के मुताबक राज्जा नैं पा कै निहाल हो गी।

मेघरथ दन-रात परजा की भलाई सोच्चण मैं लाग्या रहंदा। उसका जी घणा नरम था। राजकाज मैं ओ लाग्या रैहूता पर फेर भी बरत-बुरत, पोसा अर नित्त / नेम पालण में पाछै कोन्यां रहूया करता।

परजा उसकी तारीफ मैं कहूया करती- "यो कीसा राज्जा सै ! सारे ठाठ-बाट सैं फेर भी साधुआं बरगा साद्दा अर सरल जीवन बितावै सै।"

एक बर की बात सै। राज्जा मेघरथ दरबार मैं बैट्ठे किसे बात पै सोच-बिचार करैं थे। चाणचक उनकी गोदी मैं एक कबूत्तर आ पडूया। कबूत्तर नैं बेबसी तै राज्जा कान्नीं देख्या। राज्जा नैं सोच्ची अक कबूत्तर नैं आपणी जान का डर सै। बचता होया मेरे धोरै आया सै। मन्नैं चहिए मैं इसनैं बचाऊं, अभैदान दूयूं। राज्जा नैं उसतै प्यार करूया।

कबूत्तर नैं जिब देख लिया अक आड़ै कोए खतरा नां सै तै ओ माणसां की ढाल़ बोल्या, "मेरे पाच्छै एक खतरनाक बाज लाग रहूया सै। ओ मन्नै मार कै खाणा चाहूवै सै। मेरे बरगे कमजोर पराणी नैं बचाओ। मेरी रिक्शा करो।"

राज्जा बोल्या- मैं तन्नै सरण दूयूं सूं। तौं बेखटकै हो कै रूहो।

जिब्बै-ए राज्जा नैं देख्या- एक बाज उड़दा होया आया अर स्याम्मी भींत पै बैठ ग्या। बाज नैं कही, "मेरा सिकार छोड़ दूयो। मैं कई दिनां तै भूक्खा सूं। मैं इन्नैं खाणा चाहूं सूं।"

राज्जा नैं स्यांती तै जुआब दिया, "आपणा पेट भरण खात्तर किस्से कमजोर पराणी की जान लेणा तै पाप सै। तमनैं हमेस्सां प्राप तै दूर रैहूणा चहिए। ऊं भी यो कबूत्तर मेरी सरण मैं आया सै। मैं तै इस सरण मैं आए होए नैं बचाऊंगा। यो मेरा धरम सै।"

बाज नैं जुआब दिया, "राज्जा ! मन्नै थारी बड्डी-२ बात्तां ते के लेणा से ? मन्नैं तै भूख लाग रही से। आप मेरा खाणा मेरे तै सोंप द्यो। जे मैं भूख तै मर ग्या तै इस हत्या का पाप भी आप कै ए लाग्गैगा।

"थम इब्बे मेरी रसोई मैं चाल्लो। ओड़ै तरां-तरां के पकवान बण रहे सैं, वे खा के आपणी भूख मिटा लियो।"

बाज नैं कही, "मैं तै मांस खाण आला जीव सूं। थारी गेल्लां ओड़ै जा कै के करूंगा ? मन्नैं तै कबूत्तर उलटा दे द्यो। इसनैं खा कै ए मैं आपणी भूख मिटाऊंगा।"

राज्जा नैं सोच्ची- मैं तै बड़े धरम संकट मैं फँस ग्या। कबूत्तर नैं ना बचाऊं तै यो बिचारा जान तै ज्यागा। कबूत्तर नैं ना छोड्डूं तै बाज भूक्खा मर ज्यागा।" माड़ी वार वे सोच-बिचार करदे रहे।

फेर वे भित्तर-ए-भित्तर हांसे। उन नैं बाज तै कहीं, "थम कबूत्तर की जंगा मेरा मांस ले ल्यो।" जिब्बे ए राज्जा नैं सेवकां कै हाथ एक तराज्जू मंगाई। उन नैं एक पलड़े मैं कबूत्तर बिठाया अर दूसरे पलड़े मैं चक्कू तै आपणी देही का मांस काट-काट कै धरण लाग्गे।

पर यो के ? राज्जा नैं आपणे सरीर का आद्धा मांस काढ़ कै पालड़े पै धर दिया। फेर भी कबूत्तर आला पलड़ा ए भारी रह्या। राज्जा मेघरथ की देही जाणुं लहू मैं न्हाई होई बैट्ठी थी। ताक्कत घटती जा थी। फेर भी उन नैं धीरज ना छोड्या।

आक्खर मैं राज्जा हिम्मत करकै पलड़े कान्नीं गए। अर वे आपणे-आप पालड़े मैं जा कै बैठ गे। भित्तर-ए-भित्तर उननैं संतोस था अक उनका सरीर एक कबूत्तर की जान बचाण मैं काम आण लाग रह्या से।

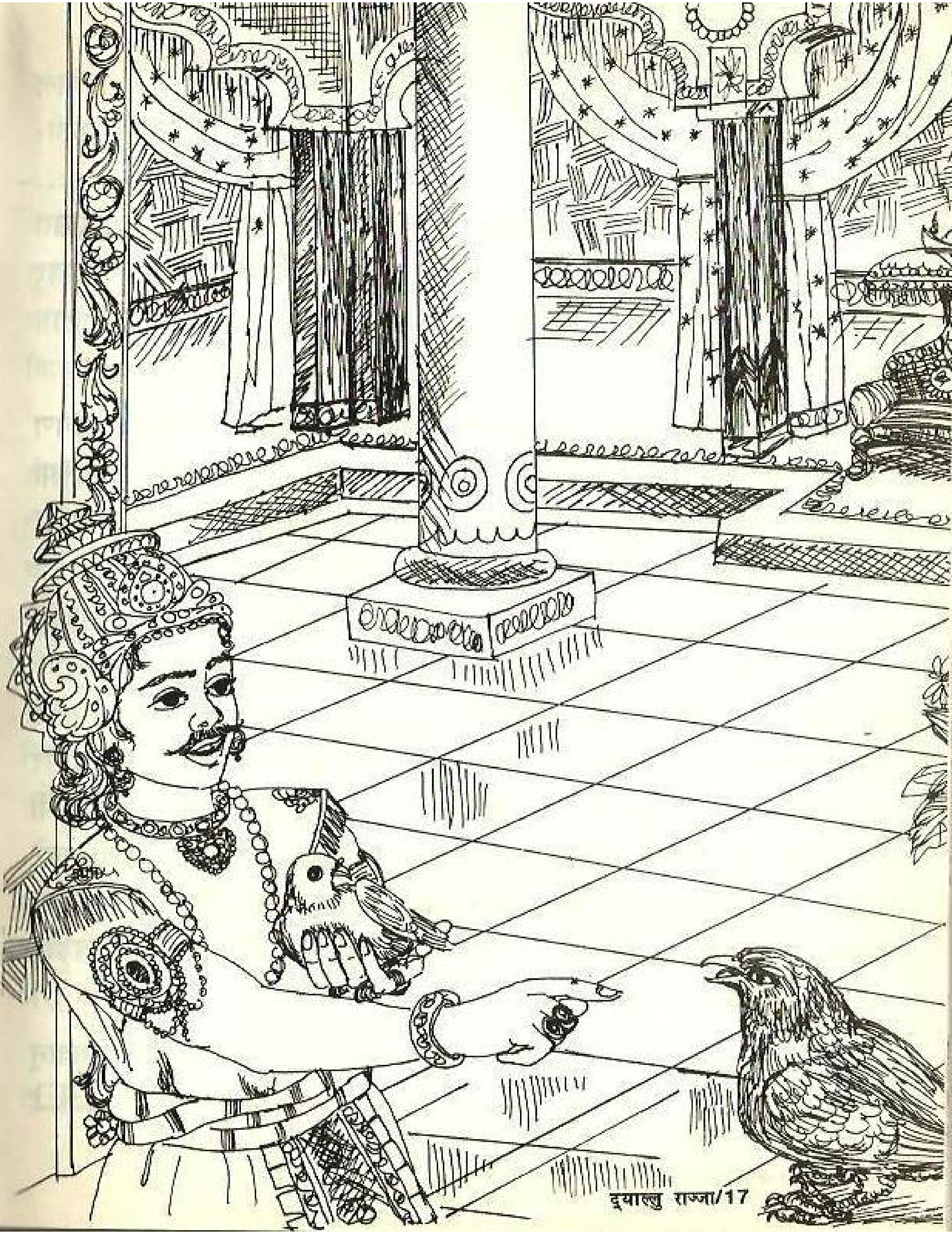

दरबार के लोग यो सीन देख कै हाहाकार करण लाग्गे। सब नैं मिल कै राज्जा आग्गे हाथ जोड़े अक यो काम मतन्या करो। सबनै कही- ''म्हाराज! यो बाज दुष्ट सै। हम इसनैं इब्बे ए मार कै भजा देंगे ..... पर आप आपणे आप नैं कुरबान मत न्या करो। राज्जा आपणी बात तै कत्ती ए ना डिग्गे। उन नैं आपणे मरण का डर ना था। वे तै भित्तर -ए-भित्तर राज्जी थे,अक आपणी कुरबानी कर कै वे एक पराणी की जान बचावैं सैं।

चाणचक ओड़े एक देवता परगट होया। ओ राज्जा तै माफी मांगण लाग्या। पलक झपकतें ए सारा सीन बदल ग्या। राज्जा नैं अर सारे दरबारियां नैं देख्या, ओडै ना तै कबूत्तर से अर ना बाज। फेर राज्जा नैं आपणा सरीर देख्या तै बेरा ना क्यूकर उनका सरीर भी पहलां बरगा हो ग्या था।

देवता नैं झुकते होए कही-''म्हाराज ! मैं देवां की सभा मैं बैठ्या था। म्हारे राज्जा इंदर नैं आपके दया-भाव की घणी ए तारीफ करी थी। न्यूं कही अक सारी धरती पै मेघरथ बरगा दया करण आला ओर कोए राज्जा कोन्यां। मन्नैं यकीन-ए ना आया। मैं थारा हिंतान लेण खातर चाल पड्या। बाज का रूप धर कै, मैं आड़े आया था। ओ कबूत्तर भी मेरी माया थी। मन्नैं थारा हिंतान लिया। हिंतान मैं आप कत्ती खरे लिकड़े। साचें-ए आप जीस्सा दया करण आला इस दुनिया मैं दूसरा कोन्यां। न्यूं कह् कै ओ भी गैब हो ग्या। इस बात तै राज्जा की बड़ाई चारूं कान्नीं दूर-दूर ताईं होण लाग्गी।

बाद मैं राज्जा मेघरथ जैन धरम के सोलहमें तीरथंकर भगवान् शांतिनाथ बणे। □□

अनाथ कूण सै

पराणे जमान्ने की बात सै। मगध देस का राज्जा था-सरेणिक। दूर-दूर ताईं ओ घणा मस्हूर था। चारूं कान्नीं उसकी जै-जैकार होया करती। उसकै घमण्ड हो ग्या था। उन्नै बाण पड़ गी, अक आपणे आग्गै किस्से की बात कोन्यां सुणनी।

उस राज्जा नै हांडण मैं सुआद आया करता। एक बर सरेणिक हांडता-हांडता एक बाग मैं पहौंच ग्या। बाग घणा सुथरा अर हर्या-भर्या था। राज्जा ओड़ै माड़ी वार ठैर कै, अराम करणा चाह्वै था। चाणचक बाग के एक कूणे तै महक आई, अर राज्जा नैं खींच कै लेगी। ओ महक कान्हीं चाल्लण लाग्या। माड़ी दूर जा कै नैं उत्ती दीख्या-अक एक साद्धू आंख मीच कै ध्यान करण लाग रह्या सै। उसकी उमर पूरी ठेठ जुआनी की थी। उसकै मूं तैं धरम का तेज चिमकै था। ईसे भोले, नीडर अर चिमकते होए मूं आले साधू नैं देख कै, राज्जा पै घणा-ए असर होया। ओ उसके धोरै डिगर ग्या, अर ओड़ै-ए बैठ ग्या।

माड़ा-हा टैम बीत्या। जुवान साधू नै आपणी मीट्ठी हांसी तै राज्जा का दिल जीत लिया। राज्जा नैं बूज्झी, "मुनी जी..... थारी उमर तै साधुआं बरगी करड़ी ज्यंदगी बिताण कै लायक कोन्यां। फेर थम नैं इस भरी जुवानी मैं साधू बणन की क्यां खातर सोच्ची?"

साधू बोल्या, "राज्जा.... मैं के करता। मैं अनाथ था अर मेरा इस दुनिया मैं कोए भी कोन्यां था। साधू बणन के अलावा ओर मैं कर भी के सकूं था?"

सरेणिक नैं साधू का जुआब जँच्या कोन्यां। भित्तर-ए-भित्तर दरद भी होया। सोच्चण लाग्या–मैं तै आपणे आप नैं घणा हे बड्डा राज्जा जाणूं था। मेरे राज मैं ईसे-ईसे माणस लाचार हो कै, साधू बणैं सैं। धिक्कार सै मन्नैं अर मेरे राज-पाट नैं।

सरेणिक नै कही–"मुनी जी! मैं थारा नाथ बणूं सूं। मैं थमनैं लाचार कोन्यां रैहण द्यूं। थम यो साधू का बाणा छोड द्यो, अर मेरी गेल्लां महलां मैं चाल्लो। मैं थम नैं माल्ला-माल कर द्यूंगा।"

साधू नैं जुआब दिया, "जो आप्पै अनाथ होवै, ओ दूसरां का नाथ क्यूकर हो सकै सै?"

या बात सुण कै राज्जा कै पतंगे लड़गे। बोल्या, "ईब ताईं तन्नै मैं पिछाणा कोन्यां। मैं सारी दुनिया मैं मस्हूर राज्जा सरेणिक सूं।"

"मैं थम नैं आच्छी तरियां जाणूं सूं। ईसी बात कोन्यां अक मैं थम नै गौलता कोन्यां।" साधू नैं कही।

राज्जा नैं बूज्झ्या, अक "जाणै सै तै फेर मैं अनाथ क्यूकर ला लिया? मैं तै आपणी परजा का नाथ सूं अर कती लोह-लाट। कोए हला नहीं सकदा मेरी गद्दी नैं।"

"रै राज्जा! जिस गद्दी के घमण्ड मैं तू चौड़ा हो रह्या सै वा मरण के दुख नैं दूर कर सकै सै? तेरी धन-दोलत तन्नैं बुढापे तै बचा सकै सै? तेरा कुणबा अर तेरी परजा तन्नैं बेमार होण तै बचा सकै सै?" साधू नै बूज्झ्या।

राज्जा धोरै इस बात का कोए जुआब ना था। ओ बोल-बाल्ला बैठ्या रह्या।

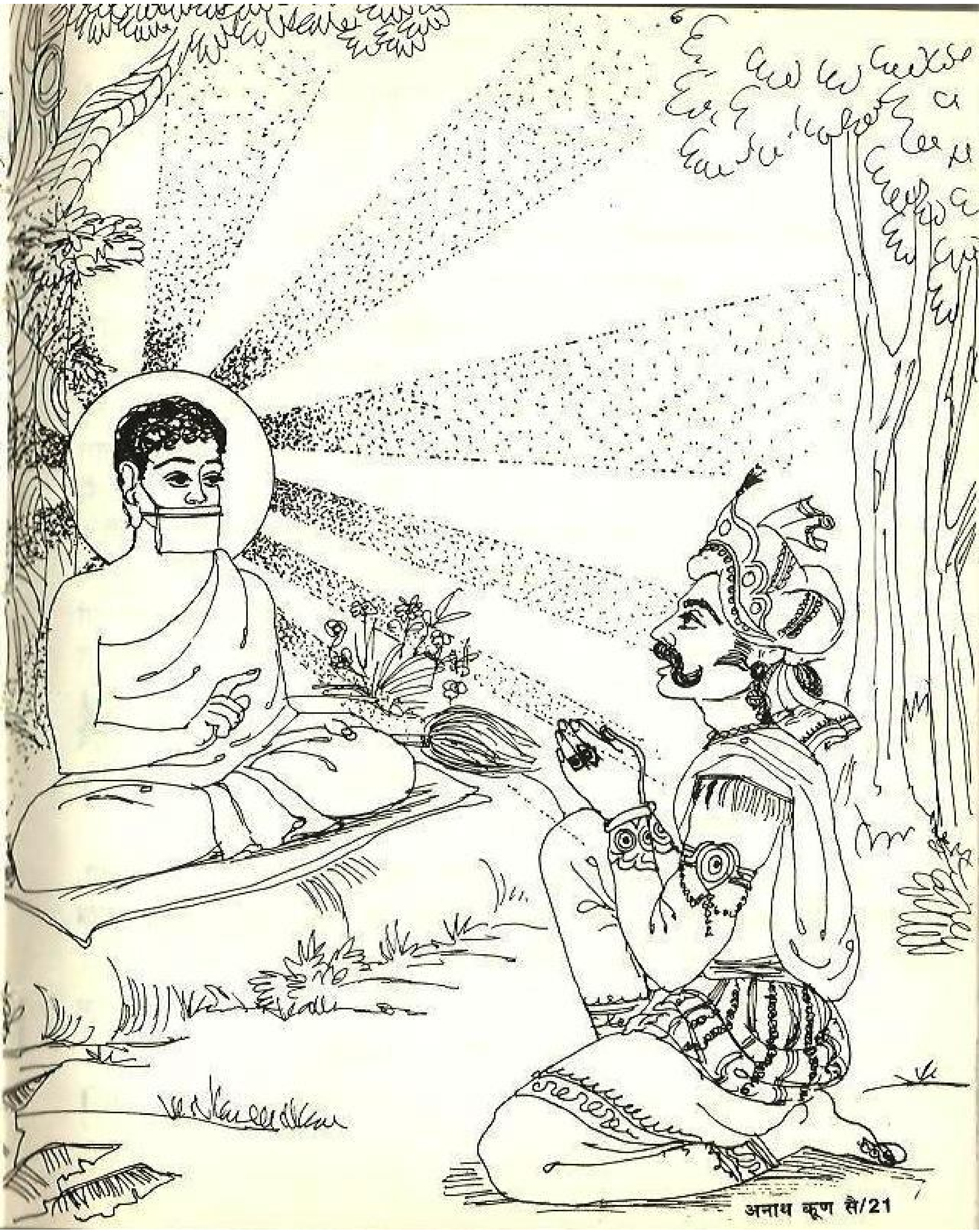

"कोए टैम था, जिब मैं भी संसार की चिमक मैं बौला हो रह्या था। मेरै भी धन-दोलत थी, नोकर-चाक्कर थे, किसे भी चीज की कमी ना थी पर एक दन.... साधू नै बात आद्धम छोड दी।"

"पूरी बात बताओ जी।" राज्जा नै बेनती करी।

"एक दन मेरी आंख्यां मैं तकलीफ हो गी। दूर-दूर तै बैद बलाए। रपिया-पीसा घणा-ए लाया। मेरे मां-बाप, भाई-बाहण, रिस्ते-नात्ते मेरी तकलीफ तै दुखी थे पर कोए मन्नैं ठीक नहीं कर सके। मन्नै मैसूस कर्या, अक मैं अनाथ सूं। मेरी तकलीफ तो किस्से के भी बस की कोन्यां थी। मन्नै न्यू लाग्या, अक इस दरद नैं कोए ओर ठीक कोन्यां कर सकदा। ऊसी हालत मैं, मैं कती अनाथ बरगा था। मेरे घर के भी अनाथ थे। मेरे जी मैं आई- एक यो सरीर तै खतम होणा सै। सब कुछ सै तै बस आतमा-ए सै। मन्नै सरीर का ध्यान छोड कै नै, आतमा का ध्यान करणा चहिए। न्यूं-ए सोच्चण लाग रह्या था अक मन्नैं नींद आ गी। मैं तड़कैं उठ्या। मेरी आंख्यां की बेमारी ठीक हो गी थी। फेर मैं आतमा की सच्चाई टोहण खातर घर तै लिकड़ आया। अर साधू बण ग्या। ईब मन्नैं सच्चाई का बेरा काढ़ लिया सै। आतमा-ए नाथ सै। ओए साच्चा साथ्थी सै। धन-दोलत अर मस्हूरी कद्दे किस्सैं के भी साच्चे हमदरद कोन्यां होए। जै मेरी बातां तै थम नैं तकलीफ होई हो तै मन्नै छिमा करियो।" न्यूं कह कै साद्धू चुप्प हो गे।

राज्जा सरेणिक का सारा नसा झड़ लिया था। ओ हाथ जोड़ कै बोल्या, "आज तै मैं आपणे-आप नैं घणी किसमत आला जाणूं सूं। थम नैं मेरी आंख खोल दी?" न्यू कह कै राज्जा साद्धू के पायां मैं पड़ ग्या।

साद्धू तै ग्यान ले कै सरेणिक उलटा आया। उस दन तै ओ धरम नैं मान्नण आला अर दया करण आला बण ग्या।

ग्यान देण आले उस साद्धू का नां अनाथी मुनि था। ❑❑

छिमा की मूरत

राजगीर मैं एक माली रह्या करदा। उसका नां अरजन था। नगरी तै बाहर उसका एक सुथरा-सा बाग था। उसमैं भांत-भांत के घणे-ए फूल खिल्या करदे। माली उन फूलां नै बजार मैं बेच कै आपणा गुजारा कर्या करता।

बाग मैं एक देवतै का मंदर भी था। माली नित्त नेम उसकी पूज्जा कर्या करता। देवतै का नां था- मुद्गरपाणी। उसके हाथ मैं हर टैम मोदगर रह्या करता। जाएं तै उसका नां मुद्गरपाणी पाक ग्या था। सरू तै ए माली उस नै आपणा दादूदालाही देव मान्या करदा, अर पूज्या करता।

एक बर की बात सै। छे दुसट आदमी उसके बाग मैं बड़गे। माली आपणी घरआली गेल्लां फूल कट्टे करै था। माली की घरआली का रूप देख कै दुष्टां के जी मैं पाप आ ग्या। उनका जी कर्या, अक इसकी घर आली नैं कितै ले चाल्लैं।

माड़ी वार पाछै माली देवतै की पूज्जा करण खात्तर मंदर मैं गया। दुष्टां नै ओ ओड़ै-ए पाकड़ लिया, अर जेवड़ी गेल्यां जूड़ दिया। फेर उसकी घर आली तै भूंडा ब्योहार करण लाग गे। न्यूं देखकै माली का खून उबाला खा ग्या। उसनैं जेवड़ी तै छूट्टण की घणी-ए कोसिस करी पर ओ छूट ना सक्या।

जिब माली की कोए पार ना बसाई तो उसनै देवता याद कर्या। भित्तर-ए-भित्तर कही, अक, "तेरी आंक्खां आग्गै मेरी घर आली गेलां दुसट

यो भूंडा ब्यौहार करण लाग र्‌हे सैं, अर तू बोलबाला लखावै सै? के साल तै मैं तन्नैं पूज्जण लाग र्‌ह्या सूं। फेर भी तू मेरी घर आली का पांडा इन दुसटां तै नहीं छुटवा सकदा। तेरे देवता होण का, अर कई बरस तै तन्नै पूज्जण का, मन्नैं के फैदा होया? जै तेरे भित्तर सकती सै तै तू मन्नैं सकती दे जिसतैं मैं आपणी घर आली नैं बच्या सकूं, अर इन दुष्टां नै इनकी करणी का सुआद चखा द्यूं।" न्यू कहते-ए ओ देवता माली के सरीर मैं बड़ ग्या। बड़तें-ए उसके सरीर मैं बेतदाद ताकत आ गी। अंगड़ाई लेंदे-ए जेवड़ी टूट गी। माली छूट ग्या। गुस्से मैं भर कै उसनैं, दे मोद्‌गर अर दे मोद्‌गर, वे छैऊं दुसट अर आपणी घर आली मार गरे।

गुस्सा इतणा टाड्डा था अक माली हमेस्सां खात्तर बैहक ग्या। उसके सामीं जो कोए आत्ता उस्से नैं ओ मार देंदा। ईब यो उसका रोज का-ए काम होग्या। उसनैं कसम खा ली-आए दन मैं छह मरदां नैं अर एक लुगाई नैं जरूर मारूंगा। सारी नगर मैं रोहा-राट माच ग्या।

राज्जा नैं चिन्ता होई। राज्जा सरेणिक नैं आपणे करमचारियां तै या सिमस्या हल करण की कही, पर कोए भी कामयाब कोन्यां होया। फेर यो फैसला होया-नगर के कुआड़ दन-रात बंद राक्खो, जिसतैं अरजन माली नैं नगरी मैं बड़ण का ए मोक्का ना मिल्लै। राज्जा के हुकम तैं नगर के कुआड़ मार दिए। अर न्यू करदे- करदे छह म्हीने बीत गे।

करम कर कै, एक दन भगवान महावीर ओड़ै पधार गे। नगर के बाहर वे बाग मैं ठैर गे। ओ बाग राज्जा का था। नगरी के लोग्गां नैं बेरा पाट्‌या तो सबनैं बंदना करण की सोच्ची पर अरजन माली के भै तै किस्से की भी नगरी के बाहर जाण की हिम्मत कोन्यां पड़ी। सबनैं घरां

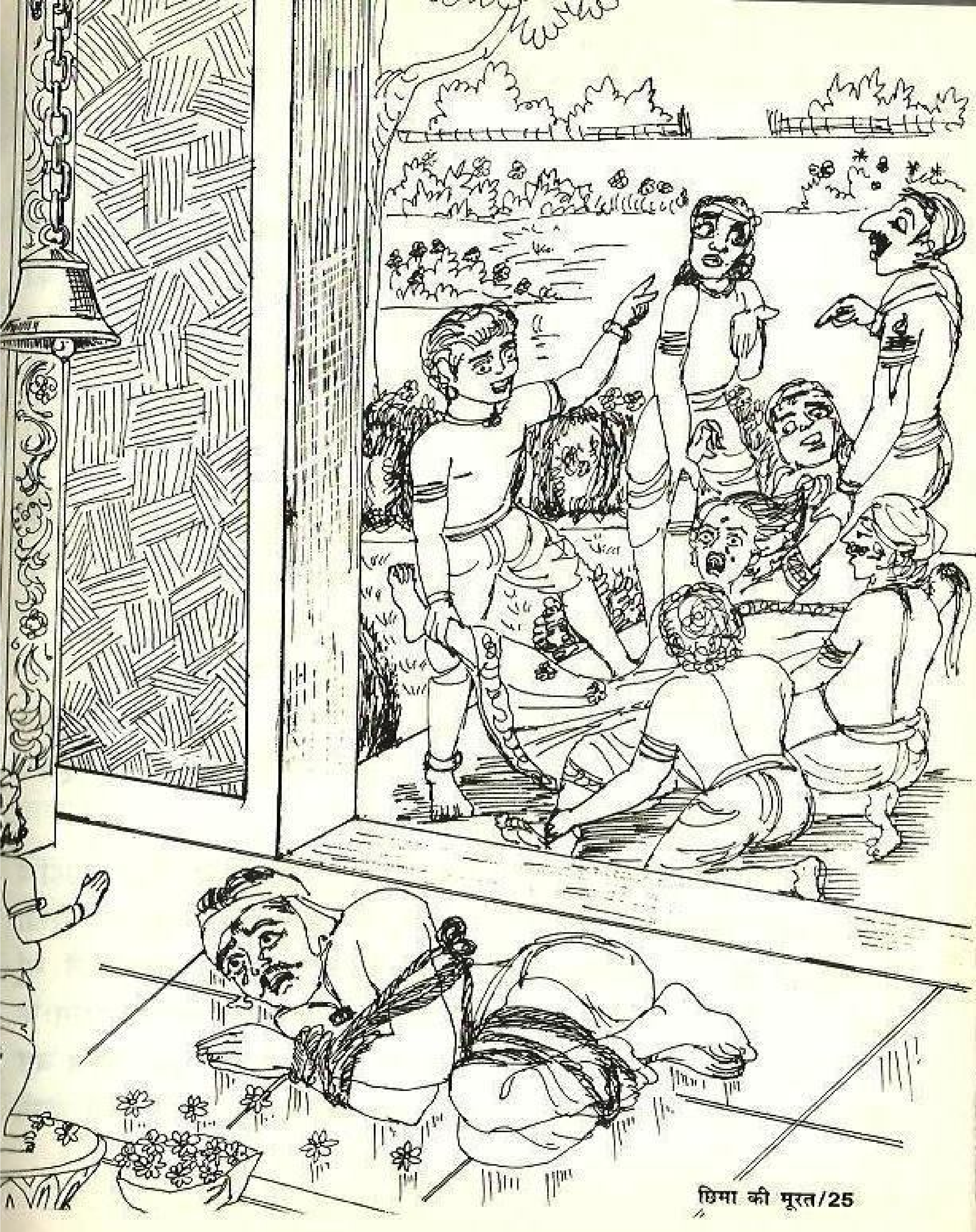

बैट्‌ठे-बैट्‌ठे, भित्तर-ए-भित्तर भगवान महावीर आग्गै हाथ जोड़ लिए।

उस नगरी मैं भगवान का एक भगत रह्‌या करदा। उसका नां था- सुदरसन। उसनै मां-बाप तै कही, "मैं भगवान महावीर के दरसन करण जाऊं सूं। मन्नैं आग्या द्‌यो।" न्यूं सुण कै मां-बाप नैं उसतै अरजन माली के खतरनाक कारनाम्मे बताए, अर उस तै घरां-ए बैट्‌ठे रैह्‌ण की रै दी। सुदरसन नैं कही, "भगवान महावीर पधारैं अर मैं उनके दरसन ना कर कै, घरां-ए पड़्‌या रहूं, या मेरे बस की बात कोन्यां। चाहे मन्नैं मरणा पड़े पर मैं भगवान के दरसन करण जरूर जांगा।" न्यूं कह्‌ कै ओ बाग कान्नीं चाल पड़्‌या।

अरजन माली नैं सुदरसन आता दीख्या। उसनै मोद्‌गरा तणा लिया। सोच्चा- घणे दन पाछे यो सिकार हाथ आया सै। ओ आग्गै चाल्या। सुदरसन नैं अरजन आंदा दीख्या। ओ सिमझ ग्या, ईब मुसीबत आण आली सै। इस टैम भगवान का सुमरण करणा चहिए। फेर सुदरसन जमीन पै पलोथी ला कै बैठ ग्या। उसनैं ओड़े तै-ए भगवान महावीर की बंदना करी/अर भित्तर-ए-भित्तर नमोक्कार मंतर पड़्‌ढण लाग्या। उसके भित्तर पहाड़ बरगी शान्ती थी।

गुस्से मैं भर कै हाथ मैं मोद्‌गर तणाएं अरजन तौला-सा ओड़े-ए पहोंच लिया। उसनैं सुदरसन पै मोद्‌गर खैंच के मारण की कोसिस करी, पर देक्खो ताज्जब की बात.... अरजन का हाथ हवा मैं-ए थम ग्या। पहल्यां तैं न्यूं कद्‌दे ना होई थी। उसनैं आपणी पूरी ताक्कत अजमा ली पर सुदरसन कै मोद्‌गर लाग्या कोन्यां। आक्खर मैं अरजन माली के सरीर मैं जो देवता बड़ रह्‌या था, उसकी ताक्कत धरम की मूरत बणे होए सुदरसन के आग्गै हीणी

पड़गी। देवता अरजन माली नैं छोड कै चाल्या गया।

माली बेहोंस हो कै ढै पड़्या। सुदरसन नै ध्यान खोल्या।जमीन पै पड़्या होया अरजन ठाया। अरजन नैं जिब होंस आई तै आपणी आंक्खां आग्गै सुदरसन के रूप मैं धरम-ए खड़्या दीख्या।

उसनैं सुदरसन तै बूज्झी, "थम कुण सो? कित रहो सो?"

सुदरसन नैं जुआब दीया, "मैं एक जैन सरावक सूं। राजगीर मैं रह्या करूं सूं। ईब भगवान महावीर के दरसन करण जां सूं।"

अरजन के मन मैं ख्याल आया-- जिन का भगत इतणा पहौंच्या होया सै, अर उस तै देवता की ताक्कत भी हार गी, तै उसके गरू कितणे पहौंच्चे होए होंगे। हुमाये मैं भर कै उसनैं बूज्झ्या--"मैं भी भगवान महावीर के दरसन कर सकूं सूं के ?"

"हां....हां! कर क्यूं ना सकै! चाल मेरी गेल्लां।" सुदरसन बोल्या, "भगवान महावीर सब नैं सरण दिया करैं सैं। वे तेरा भी किल्लाण करैंगे।" फेर अरजन नैं ले कै सुदरसन भगवान महावीर के चरणां मैं गया। दूर-दूर के लोग्गां नैं यो चिमत्कार देख्या। सुदरसन के ब्योहार तै अरजन क्यूकर बदल ग्या, सारे या बात जाणना चाह्वैं थे। वे भी सारे-के-सारे भगवान महावीर के चरणां मैं पहौंच गे।

भगवान नैं अरजन माली तैं अर ओड़ै कट्ठे होए सारे लोग्गां तैं धरम की बाणी सुणाई। भीड़-ए-भीड़ "भगवान महावीर की.........जै' के नारे लाण लाग्गी अर जे-जैकार तै चारूं दिसा गुंजा दी। आए होए लोग आप-आपणे घरां नैं चाले गए। अरजन नैं भगवान तै बुज्झ्या, "भंते! मेरे

बरगे पाप्पी अर हत्यारे का भी कदे किल्लाण हो सकै से? मन्नै तै छह म्हीनां मैं हजारां माणस अर लुगाई मारे सैं।"

"हां! हो क्यूं ना सकदा।" परभू नैं समझाया, "देख अरजन, जो बीत ग्या उसका पच्छाताप कर्या अर आगै तू आपणी अगत नैं सिम्भाल़ ले। आपणे मन मैं रैहूण आल़े किरोध राक्सस नैं हटा कै, उसकी जंगा धरम नैं भित्तर बसा ले। तेरा किल्लाण जरूर हो ज्यागा।"

अरजन नैं भगवान के चरणां मैं मुनी-दीक्सा ले ली। ईब ओ नरमाई, दया अर अहिंसा की खान बण ग्या।

छह म्हीने ताईं अरजन मुनी नैं करड़ी तिपस्या करी। तिपस्या के टैम घणे-ए माणसां नैं उस तै भांत-भांत के दुख दीये पर अरजन मुनी आपणी राही तै हटे कोन्यां। वे धरम अर छिमा की मूरत बण ग्ये। एक दन उन नैं केवल ग्यान भी हास्सल हो ग्या। उनकी आतमा संसार के जनम-मरण तै छूट गी।

□□

रोहिणिया चोर

मगध देस की राजधान्नी राजगीर मैं रोज-रोज चोरी होया करती। कदूदे किसे कै, कदूदे किसे कै। ओड़े के लोग घणे दुखी हो रे थे। सब तै घणे दुखी थे-ब्योपारी। ब्योपारी जिब छिक कै दुखी हो लिए तो उन नैं एक दन राज्जा सरेणिक आग्गै पुकार करी–"म्हाराज! हम तै चोरियां नै खा लिए। पहलां तै ईसी चोरी ना होया करती। चोर सारा माल ठा कै ईसे भाज्जैं सैं, अक टोहे कोन्यां पाते। इतणे ऊत सैं, अक आपणा एक भी निसान कोन्यां छोडदे, कदे कोए माड़ा-मोट्टा बेरा-ए काढ़ ले। जे ये चोरी न्यूं-ए होती रही, तो एक दन हम सारे के सारे मंगतां की तरियां, गाल्लां मैं भीख मांगदे हांडैंगे।"

या बात सुणकै राज्जा नै ताज्जब होया। भितर-ए-भित्तर ओ सोचण लाग्या– मेरे दरबारी तै गाते-गाते कोन्यां छिकते, अक परजा मोज ले रूही से। किस्सै नैं सूईं जोड दुख भी कोन्यां। कोए तै ईसा होंदा जो साच्ची बतांदा। आड़ै तै सारे कूएं मैं ऐ भांग पड़ रूही से। राज्जा नैं ब्योपारी समझाए। उन तै चोरां नैं पकड़ण की तसल्ली दी। ब्योपारी चले गए।

ब्योपारियां के जात्ते हें राज्जा नैं सहूर का कोतवाल बलाण खातर, आपणे एक नोकर हाथ हुकम भेज्या। हालों-हाल दरबार मैं हाज्जर होण का हुकम सुण कै कोतवाल की फूंक सरक गी। लत्ते-कपड़े पहूर कै नैं ओ जिब्बे ऐ भाज्या। राज्जा धोरै पहोंच्या। राज्जा नैं उस तै ब्योपारियां की चोरी बाबत सुआल बूज्झे।

कोतवाल बोल्या, "म्हाराज! चोरी रोकण खातर मन्नैं तो आपणी ओड़ तै पूरा-ए हांगा ला लिया। ओ चोर इतणा ऊत अर चात्तर सै अक थ्यांदा-ए कोन्यां। ईब मेरे मैं इतणी ल्याकत कोन्यां रही मैं उस नैं पाकड़ ल्यूं। मेरी तै या रै सै, अक किसे ओर जणे तै मेरा काम सोंप द्यो। आग्गै थारी राज्जी सै।"

न्यूं सुण कै राज्जा सोच्चण लाग्या।कोतवाल तै उसनै ओर बात भी बूज्झी।उन्नै बताया अक "लौहखुर का पोता रोहिणिया (रोहिणेय) ए सै जो यो करम करै सै। घणी कोसस कर ली म्हाराज .... पर किस्से तरियां भी ओ थ्याता कोन्यां।"

राज्जा आपणे दरबार कान्नीं देखण लाग्या। जाणुं बूझता हो–सै कोए जो उस नैं पाकड़ ले। सब की सिकल देखते-देखते राज्जा की नजर आपणे मंतरी अभै कुवार पै टिक गी। ओ बोल्या, "रै अभैकुवांर! मन्नै उम्मेद सै, तू उस नैं पकड़ण मैं कामयाब हो सकै सै। तू-ए आपणी अकल अर हुस्यारी दिखा। ईब या तेरी जुम्मेवारी सै अक तू रोहिणिय नैं पकड़ै।"

अभैकुवांर राज्जा के हुकम तै चोर नै पकड़ण की नई-नई तरकीब सोच्चण लाग्या। कोसस करण ल्याग्या। रोहिणिया भी उस तै घाट्य कोन्या था। गाड्डी की गाड्डी अकल ले रह्या था। ओ मंतरी नैं भी कोन्यां थ्याया।

एक बर रोहिणिया राजगीर मैं चोरी करण खातर लिकड्या। ओड़ै अभैकुवांर नैं पहल्यां तैं पहरेदार बिठ्या कै राक्खे थे। वे रोहिणिये कै पाछै लाग लिए, पर ओ तै उनका भी गरू था। सार्यां तै आंख-मिचाई देता होया

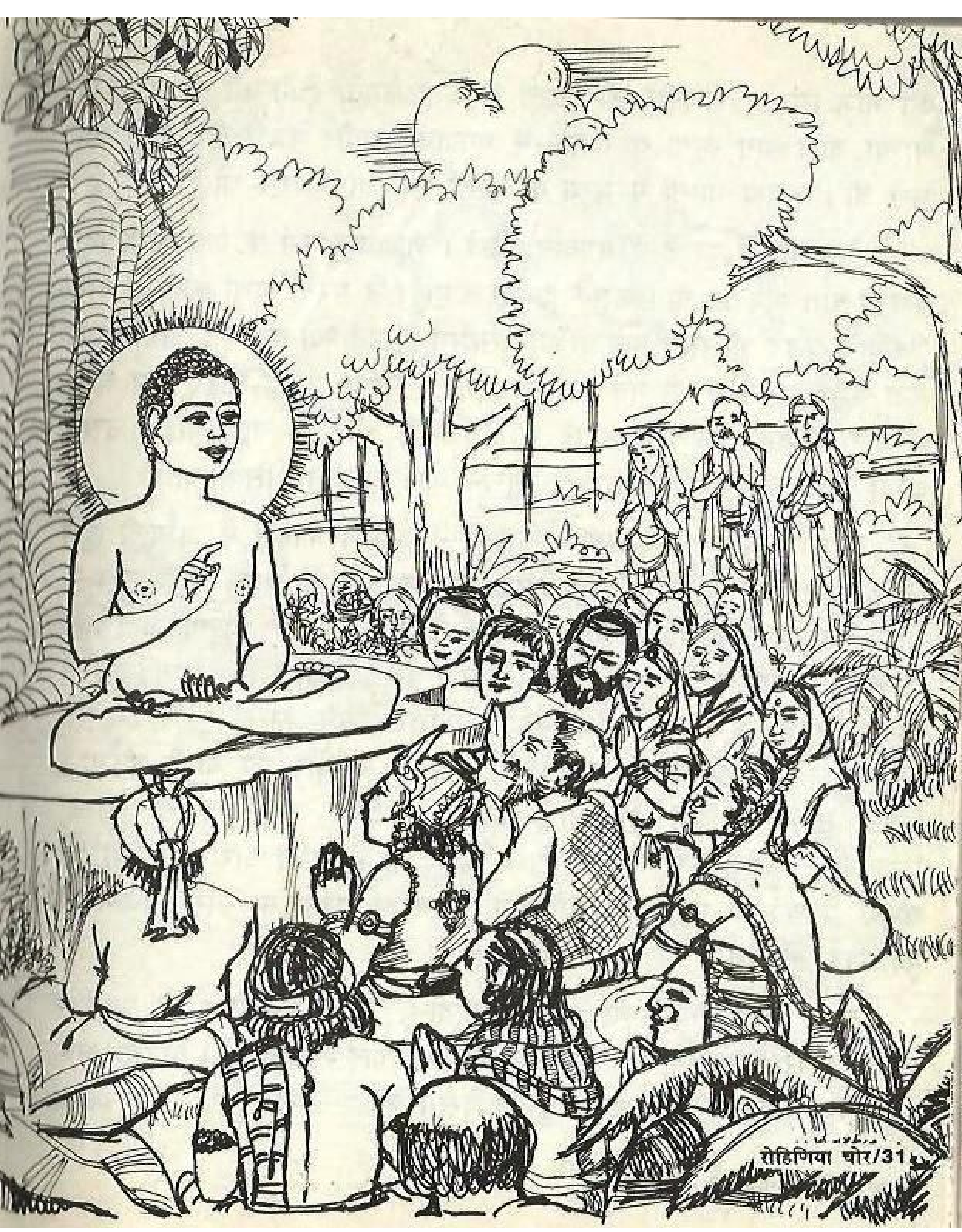

ओ भाज लिया। राजगीर की गाल्लां मैं कै लिकड़ता होया ओ जंगल कान्नीं भाज्या जाण लाग रहूया था। राह मैं भगवान महावीर की वाणी दुनिया बेट्ठी सुणै थी। सूक्खे धान्नां पै धरम का पाणी एक सांस बरसै था।

रोहिणिये नै दूर तै-ए भगवान देक्खे। चाणचक उस कै एक बीत्ती होई पराणी बात याद आ गी। उसके दादूदा लौहखुर नैं मरती हाणां कही थी अक "दखे तू कदूदे भी साधू-महात्मां धोरै सत्संग मैं मत न्या जाइये। अर उनकी बात कदूदे सुपने मैं भी मत न्या सुण लिए। म्हारा दादूद्दा-लाही काम चोरी सै अर यें चोरी करण तै हटावैं सैं।" उसकै ओर भी याद आई- उसनै दादूद्दा आग्गै कदूदे भी सत्संग ना सुणन का बचन भर लिया था।

यें सारी बात याद करकै रोहिणिये नैं आपणे कान्नां मैं आंगली ठूंस ली अर आपणा मूं उंघे तै फेर लिया जित भगवान की बाणी होण लाग री थी। पहरेदार पाछै लाग रूहे थे जाएं तै ईब भी ओ भाज्या जा था। चाणचक उसके पां मैं एक कांडा चाल ग्या। कांडा ईसा चाल्या,उस तै आग्गै ना भाज्या गया। कांडा काढण खात्तर उसनै कान्नां मैं तै आंगली काड्ढ़ी। जिब्बै-ए उसके कान्नां मैं भगवान महावीर की बाणी पड़गी। उसनै सुणी- "देवां की छांह कोन्यां पड़ती। उनकी आंख कोन्यां झिपकती। उनके गले मैं पड़ी माला कदूदे ना मुरझांदी अर उनके पां भी धरती पै कोन्यां पड़ते।" रोहिणिये नैं कांडा काडूढ्या अर भाजण मैं कामयाब हो ग्या।

सहर मैं चोरी कोन्यां थम्मीं। होंदी-ए रही। रोहिणिये नैं पकड़ण खात्तर मंतरी अभैकुवांर नै एक नई सकीम बणाई। उन्नैं बेरा पाट्या अक रोहिणिया राजगीर की सब तै सुथरी पेस्सा करण आली, रण्डी धोरै जाया

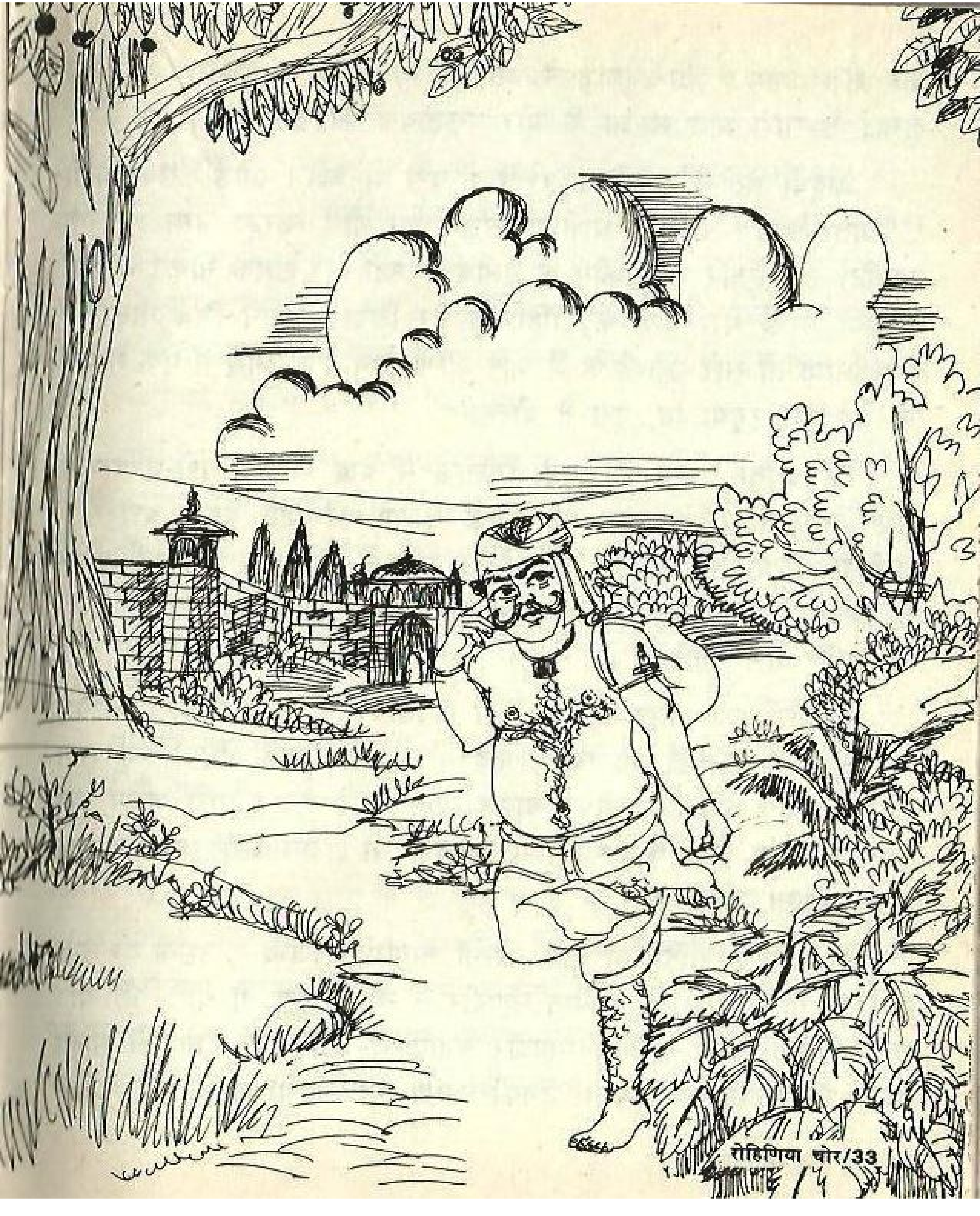

करे से। ओड़े अभेकुवांर नैं आपणा जाल बिछूया दिया। उस लुगाई तै सारी बात समझा कै चोर पकड़ावण की कही।

आद्धी रात नैं रोहिणिया रण्डी के घरां पहोंच्या। ओड़ै उसकी घणी-ए खातर होई। उस तै घणी ए सराब प्या दी। करड़ा नसा हो ग्या उसकै। अभेकुवांर की सकीम के मुताबक रण्डी अर उसके नोकर-चाकरां नैं देवां बरगा भेस बणा कै, रोहिणिया घेर लिया। उसनै जिब माड़ा-सा होस आया तो सारे उसकी जै-जै कार करण लाग गे। उनमैं तै एक नौकर जो देव बण र्‌हूया था, उस तै बोल्या-

"हे देवता ! थम नैं आड़े देवलोक मैं देख कै हम घणे-ए राज्जी होए। थम ने घणे-ए पुन्न कर राक्खे थे जो मरें पाछै देवता बण गे। आड़े का रिवाज सै अक जो कोए देवता बणै सै, ओ आपणे पाछले जनम का किस्सा सुणाया करै सै। थम भी तावले़ से सुणा द्‌यो। इंदर म्हाराज भी आड़ै आण आले़ सैं।

रोहिणिये की आंख खुल्ली। ओ हैरान रह ग्या। बड़बड़ाण लाग्या, "मैं सुरग मैं कित तै आ ग्या ? कदे यो सुपना दीखता हो !" न्यूं सुण कै देवी-देवता बणे होए नौकर-चाकर बोल्ले, "हे देव ! थारा जनम इस सुरग मैं होया सै। थम म्हारे मालक बणे सो। हम सारे थारा पाछला जनम सुणना चाहूवें सैं।"

न्यूं सुण कै रोहिणिया चारूं कान्नीं लखाया। जिब्बे-ए उसकै वा बात याद आ गी जो उस नैं भगवान महावीर तै न्यूं-ए सुण ली थीं। ओ याद करण लाग्या, अक भगवान महावीर बतावैं थे- देवी अर देवां की माला कद्‌दे भी मुरझाती कोन्या। उनकी आंख भी कोन्यां झपकती। उनके

सरीर की परछाई भी कोन्यां होती। उनके पां भी धरती पै कोन्यां टिकते। आड़े तै सारे-ए काम होण लाग रहे सैं। न्यूं लागै सै–ये सारे मन्नैं फंसाणा चाहवै सैं। न्यूं सोच कै ओ खड़ा हो लिया, तलवार सिंभाल ली। कड़क कै बोल्या, "मैं थारी सकीम आच्छी तरियां जाण ग्या। थम के मेरा कुछ बिगाड़ सको सो।" न्यूं कहते-एं रोहिणिया ओड़े तै लिक्कड़ लिया। मंतरी बेचारा लखांदा रै ग्या। उन्नैं सोच राक्खी थी–पाछले जनम का किस्सा कैती हाणा ओ जिब कैगा अक मैं चोर था तै हम उसनै पाकड़ लेंगे। उसकी सकीम पै पाणी फिर ग्या।

थोड़े दन पाछै एक दन एक जुआन राज्जा सरेणिक के दरबार मैं आया। राज्जा तै जैराम जी की करी। बोल्या, "म्हाराज ! मैं ओ चोर सूं जिस तै दुनिया डरै सै अर आज ताईं जिसनैं कोए पाकड़ ऐ ना सक्या। मन्नै चोरी कर-कर कै घणा-ए धन कट्ठा कर राख्या सै। ओ मैं आपणे धोरै कोन्यां राखणा चाहूता। वैभार नां के पहाड़ की गुफा मैं तै थम उसनै मंगा ल्यो।

राज्जा सुण कै अचम्भे मैं पड़ ग्या बोल्या- रै जुआन न्यूं कूक्कर ? के नां सै तेरा ?

जुआन बोल्या- मेरा नां रोहिणिया सै। मरती हाणां मेरे दाद्दा नैं मेरे तै कही थी अक साधुआं तै दूर रहिये पर एक दन मैं चोरी करकै भाज्या जाण लाग रह्या था। चाणचक मेरे पां मैं कांडा चाल ग्या। मैं उसनै काड्ढण लाग्या। जिब्बे-ए मेरे कान्नां मैं भगवान महावीर की बाणी पड़गी अक देवां की माला मुरझाती कोन्यां। ना उनकी आंख झिपकती, ना परछाई पड़ती। उनकै पसीना भी नहीं आता। धरती तै वे ऊपर रह्या

करैं। मन्नै इन बात्तां पै किम्मे ना ध्यान दिया। आग्गै चाल पड़्या। उस दन थारे मंतरी अभैकुवांर नै आपणी सकीम बणा कै मेरे तै फंसाण की कोसिस करी पर भगवान महावीर की उस बात नै मैं बचा लिया। जिब उनकी एक बात मेरे बरगे पुआड़े करण आले नैं बचा सकै सै, तै उनकी बाणी तै आदमी की सारी-ए जिंदगी का बेड़ा पार ला सकै सै। मैं आपणे पुआड़ां की सजा लेण खात्तर थारे दरबार मैं आपै-ए-आप आ ग्या। ईब थम नैं इख्त्यार सै। मन्नैं मेरे करमां की पूरी-ए सजा द्यो।"

रोहिणिये की इन बात्तां पै सहज्जै-सी किसे नै यकीन कोन्यां आया। पर, ओ आप्पै- ए सारी बताण लाग रह्या था। जाएं तै या झूठी भी ना हो सकै थी। सारे उस चोर की तारीफ करण लाग गे। राज्जा बोल्या, "तू चोर कोन्यां। पहल्यां कदे चोर रह्या होगा। ईब तै तन्नैं आपणी गल्ती मान कै नैं आपणे सारे पाप धो दिए। यो तन्नैं तारीफ जोगा काम कर्या। जा .... मैं तन्नैं अजाद करूं सूं।"

उस दिन तैं रोहिणिया कती बदल ग्या। फेर ओ भगवान महावीर के चरणां मैं पहोंच्या अर साद्धू बण ग्या।

❑❑

सुथराई का घमण्ड

एक बर इंदर म्हाराज नैं देवत्यां की पंच्यात मैं एक बात कही-"इस टैम धरती पै सनत्कुमार चक्करवरती बरगा राज्जा कोए दूसरा कोन्यां। उसकी हिम्मत का, धन-दौलत का, धीरज का अर अकलमंदी का मुकाबला कोए कर नहीं सकता। सब तैं बड्डी बात या सै अक ओ जितणा सुथरा जुआन सै, उतणा तै देवत्यां मैं भी कोए सुथरा कोन्यां।"

न्यूं सुण कै सारे देवता सनत्कुमार की घणी-ए बड़ाई करण लाग गे। ओड़ै दो देवता इसे थे, जिन पै सनत्कुमार की इतणी बडाई बरदास कोन्यां होई। उनके नां थे विजय अर वैजयन्त। दोनूं ऊठ कै खड़े हो गे। बोल्ले,"म्हाराज! थारी बात पै हाम नै सक सै। धरती तै घणी-ए लाम्बी-चौड़ी सै। फेर थामनै एकले सनत्कुमार की तारीफ मैं ओड बड्डी-बड्डी बात क्यूकर कह दी? अर ओ देवत्यां तै भी घणा सुथरा सै या बात म्हारी सिमझ मैं कोन्यां आई। जो थारी इजाजत हो तो हम सनत्कुमार का हिंतान ले कै देक्खें?" इन्दर नै होट्टां भित्तर हांसते होए उन दोनुआं तै सनत्कुमार का हिंतान लेण की छूट दे दी।

दोन्नूं देवां नै बुड्ढे बाह्मणां का भेस भर्या अर चक्करवरती सनत्कुमार की राजधानी हथनापुर मैं पहोंच गे। महल मैं बड़न लाग्गे ते पहरेदार नैं टोक्के, "महल मैं थम क्यूं बड़ो सो? किस तै के काम सै?"

बाह्मण बोल्ये – "हम चक्करवरती सनत्कुमार के दरसन करणा चाहवें सैं।"

"थम नैं माड़ी वार आड़ै-ए डटणा पड़ैगा। म्हाराज तो इब्बे न्हाण

लाग रे सैं।" पहरेदारां नै जुआब दिया।

"रे भाई! दखे ... हम तै बूड्ढे बाह्मण सैं। म्हारा टैम भी लवै-ए आ रह्या सै। के बेरा कद गिरड़ ज्यां! मरण तै पहल्यां राज्जा नै देख लैण दे। तेरा के बिगड़े सै?"

पहरेदार नैं वे ओड़े-ए थाम दिए अर आप राज्जा धोरै गया। बूड्ढे बाह्मणां की बात बताई। राज्जा मटणा ला कै न्हाण आला था। बोल्या, "दोनूं बाह्मणां नै इज्जत तै आड़े ए लीआ।"

पहरेदार नैं दोन्नूं महल मैं भेज दिए। राज्जा नै बूझी अक क्यां खात्तर आए? बाह्मण बोल्ले,"म्हाराज!जिस रूप की बड़ाई हाम नैं सुणी थी, दुनिया के लोग-लुगाई जिस की बड़ाई करदे होए कोन्यां छिकदे, आज ओ रूप देख कै हम धन्न हो गे।"

न्यूं सुण कै सन्त्कुमार मैं घमण्ड आ ग्या। ओ घमण्ड मैं भर कै बोल्या-"ईब्बै थम नैं के देख्या सै, जिब मैं गहणे-कपड़े पहर कै.. दाऊं जंच कै दरबार मैं जाऊंगा, जिब मेरी सुथराई देखियो। देखते-ए रै ज्याओगे।"

बाह्मण उलटे चले गए। दोन्नुआं नैं फैसला कर्‌या अक राज्जा नैं दरबार मैं देक्खैंगे।

माड़ी वार पाछै बाह्मण दरबार मैं पहोंच गे। राज्जा सनत्कुमार गहणां-कपड़ां तै सज्या-धज्या इतना सुथरा लाग्गै था जाणुं कामदेव की मूरती धरी हो। ओ रूप देख कै आंख सहजै-सी छिक्कैं-ए ना थीं। बाह्मणां तै राज्जा नै कही अक "क्यूं पंडज्जी! जीसा मन्नैं बताया था, ऊसा-ए सै ना मेरा रूप?"

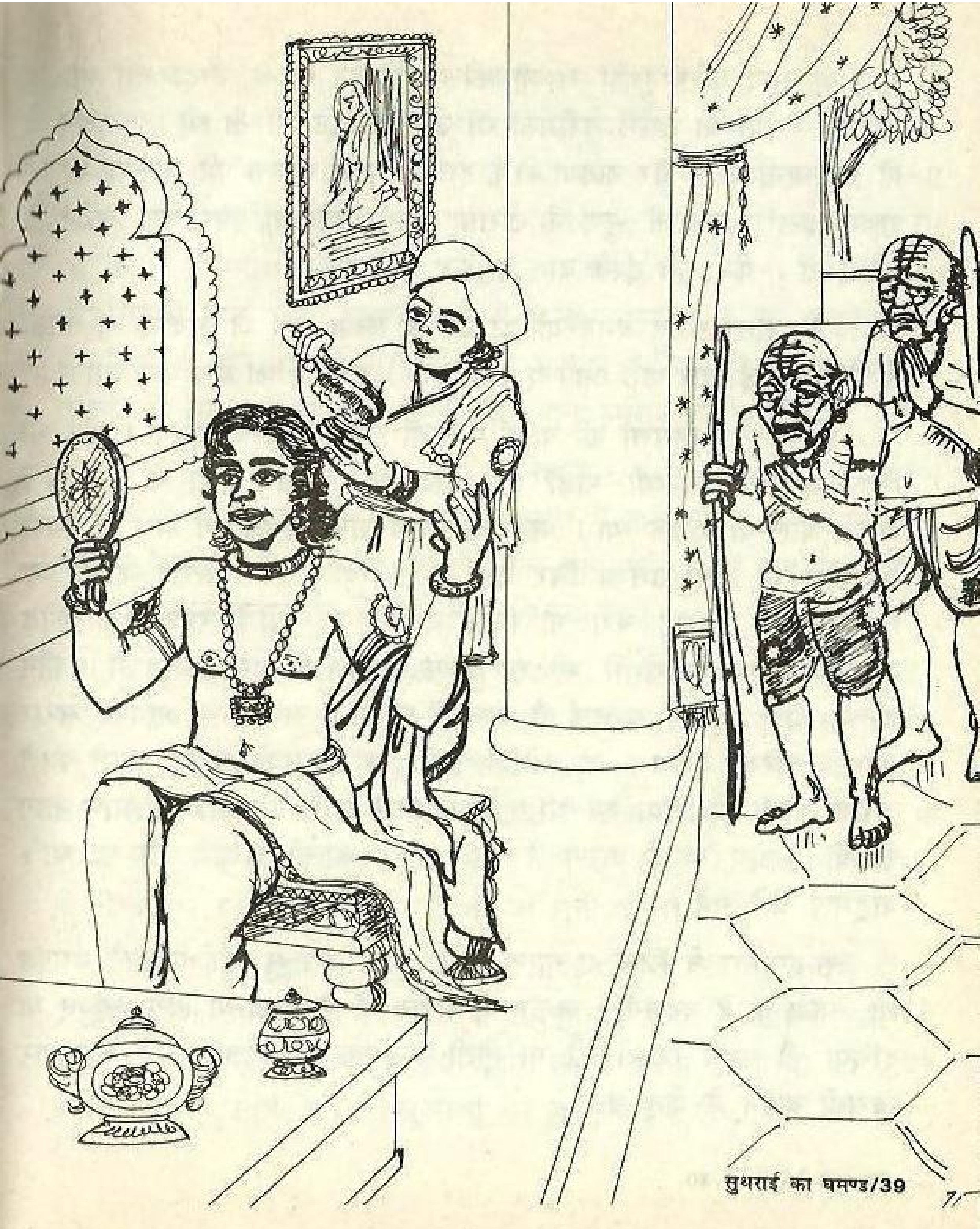

न्यूं सुण कै बाह्मण राज्जी कोन्यां होए। बोल्ले, “म्हाराज! पहल्यां जो रूप देख्या था उसमैं नरोगता थी अर बनावट भी ना थी। पर ईब तै यो रूप बनावट नै घेर राख्या सै। ईब ओ रूप कोन्यां जो पहल्यां था।” राज्जा इस जुआब नैं सुण कै हैरान होया। बोल्या, “पर मेरा सरीर तै ओ-ए सै। फेर थम ईसी बात क्यूकर कहो सो?”

“ईब थारा सरीर बेमारियां का घर हो लिया सै। जै अकीन ना आता हो तै थम माड़ी वार पाछै आपै-ए देख लियो। सच्चाई का बेरा पाट ज्यागा।”

राज्जा नैं बाह्मणां की बात्तां पै कती इतबार कोन्यां आया। फेर भी भित्तर-ए-भित्तर सोच्ची–माड़ी वार देख ल्यूं। इसमैं मेरा के जा सै? राज्जा बोल-बाला बैठ ग्या। माड़ी वार पाछै राजा नैं आपणे हाथ पां देक्खे तै सरम की मारी उसका सिर तले नैं हो ग्या। सारा सरीर काला पड़ लिया था। सुथराई बेरा ना कित चाल्ली गई थी। राज्जा कै कोढ़ फूट्याया था। किस्से नैं भी राज्जा के सरीर की इस हालत पै यकीन कोन्यां होवै था पर सच्चाई तै सच्चाई-ए थी। राज्जा नै आपणा सरीर आच्छी तरियां देख्या। यो ओ हे सरीर था जिसकी बड़ाई करते-करते दुनिया बौली हो लिया करै थी। आज उस्से सरीर मैं कै बांस आण लाग री थी। कोए बड़ाई करण तै दूर, उसके कान्नी लखावै भी ना था। बाह्मण चले गये।

सनत्कुमार नै जिब्बै-ए ग्यान होया अक, जिस सुथराई पै मन्नै घमण्ड था, आज वा हे बदलगी। जुकर यो सरीर भी मेरा कोन्यां होया न्यूं-ए या दुनिया भी कदे किस्से की ना होती। उसका भित्तरला उसनैं बार-बार बिरागी बणन नै कैह् था।

राज्जा नैं हाल्लो-हाल फैसला कर्या– "ईब मन्नैं राज-पाट छोड़ कै साद्धू बणना सै"। उस नैं जिब्बै-ए राज छोड्या अर जंगल की राही पकड़ ली। ईब ओ साद्धू बण ग्या। उसके शरीर मैं रोग फैलता-ए चल्या गया। कष्ट भी बढ़ता-ए चल्या गया पर तिपस्या की राही तै ओ माड़ा सा भी कोन्यां डिग्या। आपणे धरम-ध्यान मैं लाग्या रह्या। उस नैं घणी -ए सिद्धी मिल गी। घमण्ड उस तै घणा दूर था। ना कद्दे उसनै बेमारियां की चिन्ता करी अर ना कद्दे आपणी सिद्धियां पै घमण्ड कर्या। उसकै तो बस एक-ए धुन थी–केवल ग्यान हासिल करणा सै।

देवां के राज्जा इन्दर नैं देख्या–सनत्कुमार मुनि करड़ी तिपस्या करण मैं लाग रे सैं। इन्दर नै फेर आपणी सभा मैं सनत्कुमार की तिपस्या की घणी-ए बड़ाई करी। विजय अर वैजयन्त नाम के देवां नैं फेर सक कर्या अर फेर सनत्कुमार का हिंतान लेण लिकड़ लिए।

दोन्नूं देवां नैं ईब कै बैद का भेस बणाया। सनत्कुमार मुनी धोरै पहोंचे। उन तै रोग का इलाज करण की कहण लाग्गे। मुनी सनत्कुमार तो समता धारे बैट्ठे थे। सरीर की उन नैं माड़ी सी भी परवा ना थी। बैद बार-बार कहण लाग्गे तै वे बोल्ले, "सरीर के रोग दुआइयां तै ठीक हो सकैं सैं पर करमां के रोग्गां नैं दुआई के ठीक कर सकै सै ?" बैद चुप हो गे। उनके धोरै करमां के रोग्गां की दुआई थोड़े ए धरी थी जो मुनी जी तै दे देंदे ?

बैदां की सिमझ मैं कुछ भी ना आया। मुनी जी नै आपणे मूं मैं आंगली दी। आंगली पै लाग्या थूक सनत्कुमार मुनी नैं आपणे सरीर पै लाया तै जाद्दू-सा हो ग्या। ईब सरीर सोन्ने बरगा हो लिया था। बैद हैरान रह्गे। उनके मन के सुआलां का जुआब देंदे होए, मुनी जी कहण

लाग्गे, “सरीर के रोग मेट्टण खात्तर तै मेरे धोरै घणी-ए सिद्धी सैं। पर सरीर तै मेरा कोए भी मतबल कोन्यां। यो बेमार रहै अक ठीक रहै, मन्नैं के! मैं आत्मा पै चड्ढा होया करमां का मैल धोणा चाहूं सूं। या तो मेरी कमअकली थी अक ईब ताईं मैं सरीर के रूप नैं-ए देखदा रह्या।”

मुनी जी की या बात सुण कै बैद सिमझ गे-यो मुनी आपणे बरतां तै डिग्गै कोन्यां।

वे देवलोक मैं पहोंचे। इन्दर तै माफी मांगते होए बोल्ले, “म्हाराज! थमनैं सनत्कुमार मुनी की बाबत जो कह्या था, ओ हम आपणी आंख्यां तै देख आए। साच्चें-ए उनकी जिनगी धन्न सै। ईब तै उनमैं सरीर के रूप की इच्छा भी कोन्यां। वे तै आतमा की सुथराई हासल करणा चाह्वैं सैं। जै ईसी-ए तिपस्या वे करते रहे तै जरूर कामयाब होवैंगे।”

ओड़ै जो ओर देव बैट्ठे थे, उन नैं भी भित्तर-ए-भित्तर मुनी सनत्कुमार के साच्चे अर मजबूत बरतां की बडाई करी अर ओड़ै तै-ए उनकी बंदना करी।

❑❑

सादधू का सतसंग

केकय देस का राज्जा था– परदेसी। उसके पड़ोसी देस कुणाल का राज्जा था – जितसतरू। दोनूं राज्जा आपस मैं ग्हेरे अर करड़े ढब्बी थे। दोन्नुआं की सोच-सिमझ मैं अर उनके बिचारां मैं घणा-ए फरक था। राज्जा परदेसी जिद्दी अर घमण्डी था। धरम-करम नैं जाण्या ना करदा अक यो भी किम्मै चीज हो सै। जितसतरू सरल सुभा का अर सूधा माणस था। धरम के काम्मां मैं उसकी पूरी दिलचस्पी थी।

जो कोए इन दोनुआं के मित्तर-परेम की बात सुणता उस्सै नैं अचम्भा होंदा।

एक बर राज्जा परदेसी आपणे मंतरी चित्त तै बोल्या, "मैं न्यूं चाहूं सूं अक तू म्हारी ओड़ तै म्हाराज जितसतरू तै कोए चीज भेंट करूया। उसके राज मैं एक तै एक ग्यानी-ध्यानी रूहैं सैं। उनके धोरै थोड़े दन ठैर कै राजनीती पढ़ ले।" राज्जा का हुकम सुण कै मंतरी कुणाल देस कान्नी चाल पड्या।

ओड़ै पहोंच कै ओ राज्जा तै मिल्या। उस तै राज्जा परदेसी का संदेस सुणाया। कीमती चीज भेंट करी। राज्जा नैं मंतरी के ठहरण का इंतजाम करा दिया।

एक दन चित्त नैं बेरा पाट्या, भगवान पारस नाथ की परम्परा के ज्ञानी अचार्य सरमण केस्सी ओड़ै आण आले सैं। उनके आण का टैम भी आ ग्या। जिसनैं भी खबर सुणी, ओ-ए अचार्य केस्सी के दरसनां

खात्तर बेचैन हो ग्या। चित्त भी उनके दरसन करण चाल पड़्या। उनकै धोरै पहोंच्या। हज्जारां की तदाद मैं लोग कट्ठे हो र्हे थे। उनकी मीट्ठी बाणी सुण कै मंतरी चित्त पै घणा-ए असर होया।

बस! उस्सै टैम चित्त नै अचार्य केस्सी तै घरेसत (सरावग) धरम के बारां बरत ले लिए। ओ नित्त-नेम उनकी बाणी सुणता। ग्यान की बात बूझता। अचार्य जी की बाणी तै उसके जीण का तरीका बदल ग्या।

एक दन चित्त नैं अचार्य केस्सी तै कही – कदे म्हारे केकय देस की राजधानी स्वेताम्बका नगरी मैं भी पधारण की किरपा करो। अचार्य जी चुप रहे। चित्त नैं कई बर बिनती करी। अचार्य जी फेर भी बोल-बाले उसके कान्नीं देखदे रहे। चित्त समझ ग्या, अचार्य केस्सी राज्जा परदेसी के बुरे बरताव नै जाणैं सैं। वे कोन्यां चाहते अक घमण्ड मैं चूर परदेसी धरम की अर संघ की बेसती करै।

चित्त स्वेताम्बिका नगरी मैं उलटा आग्या। ओ चाह्वै था – राज्जा परदेसी एक बर........बस एक बर अचार्य केस्सी के दरसन कर ले। के बेरा उसकी ज्यंदगी बदल ज्या।

संजोग इसा होया, एक बर घूमते-टहलते अचार्य केस्सी स्वेताम्बका नगरी मैं आ गे। मंतरी नैं बेरा पाट्या, ओ जिब्बै उनकी सेवा मैं हाज्जर हो ग्या। उस नैं मुनियां के ठैरण का आच्छा एंतजाम करा दिया। आप भी उनकी सेवा मैं लाग्या रहंदा। उनके दरसनां खात्तर लोग्गां की भीड़ लाग्गी रहंदी।

मंतरी चित्त नैं सोच्ची, किस्से तरियां राज्जा परदेसी नै भी अचार्य जी धोरै ले चालणा चहिए। फेर उसनैं एक तरकीब सोच्ची।

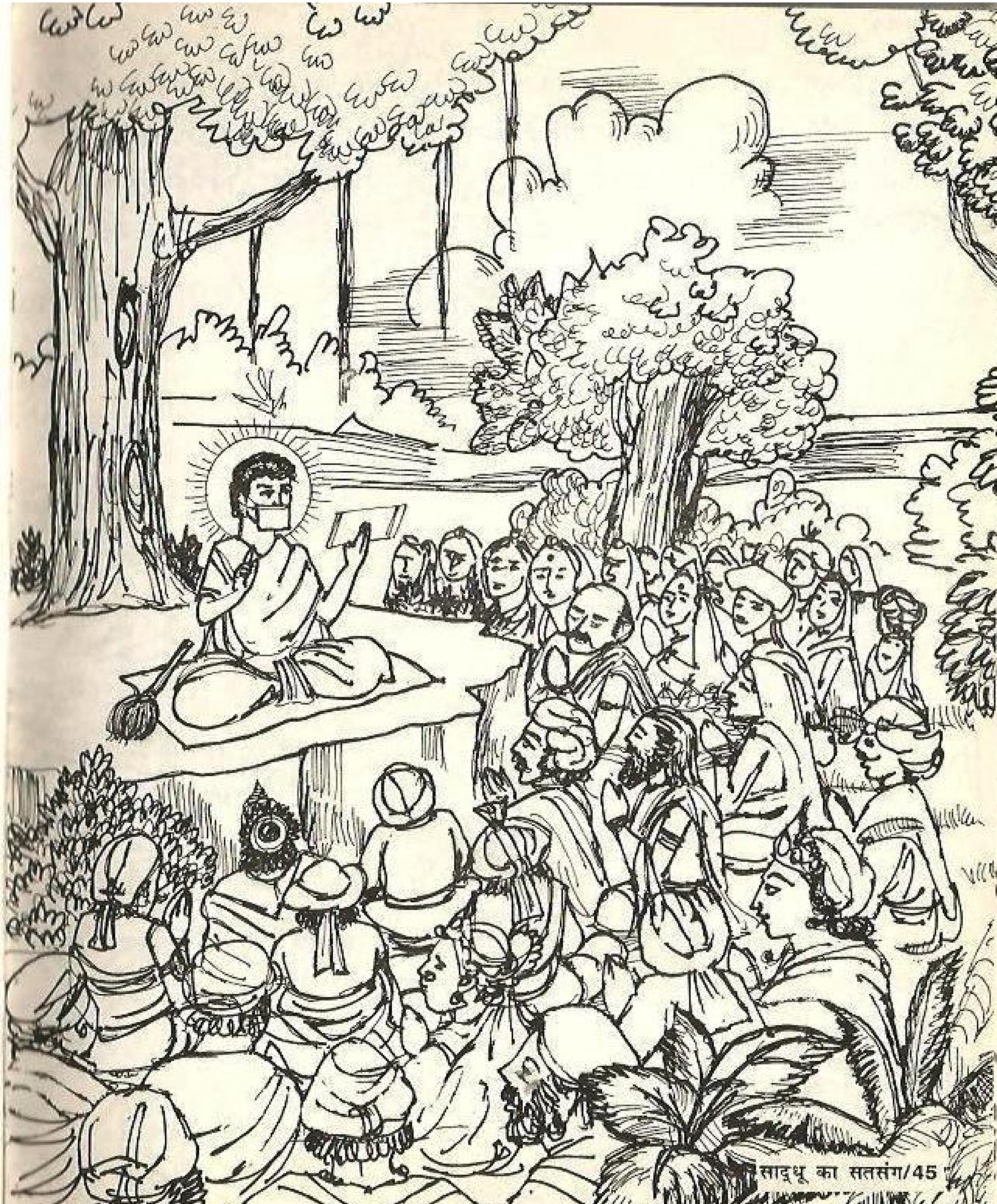

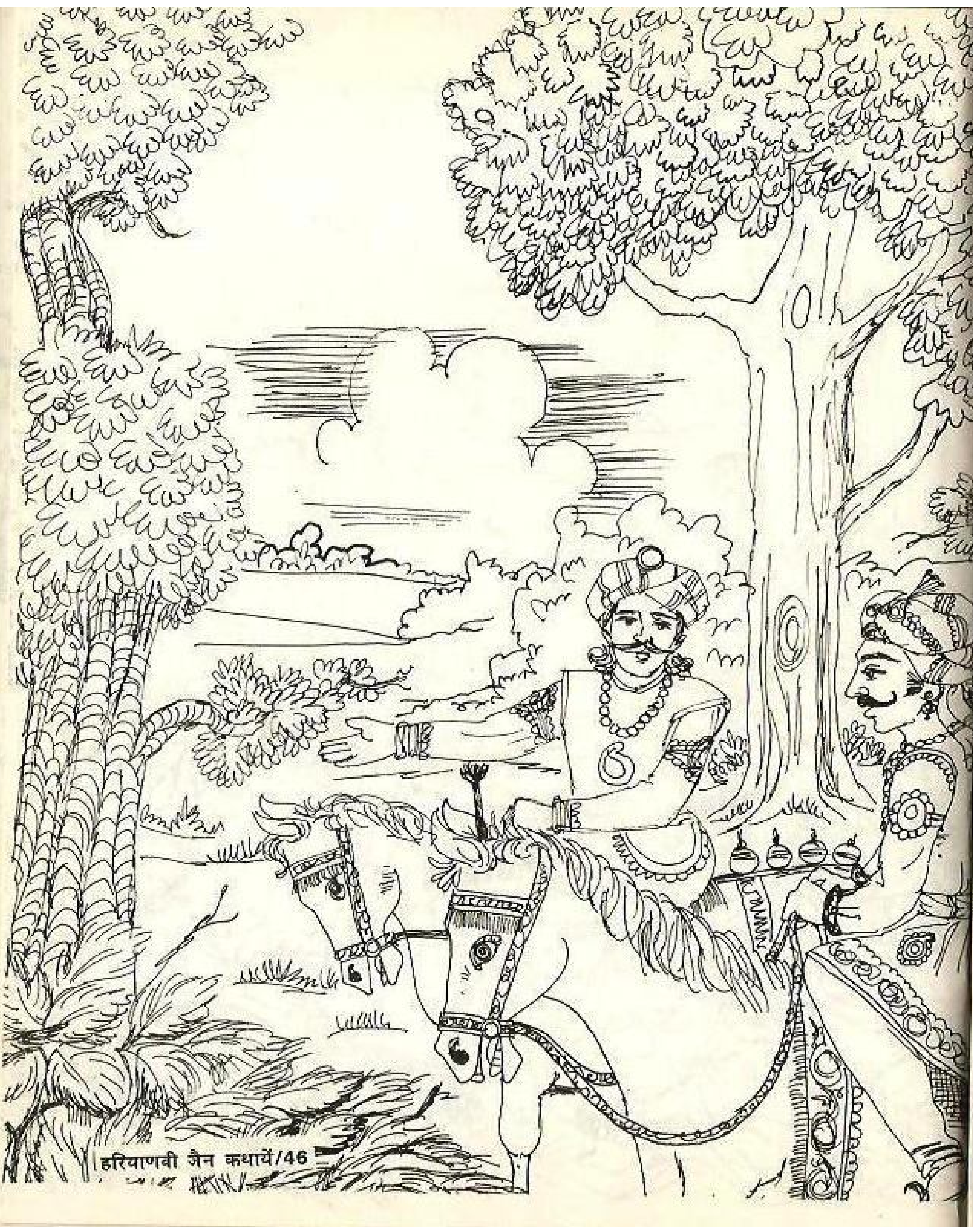

एक दन चित्त नैं राज्जा तै कही, “म्हाराज! थोड़े दन पहल्यां घणे-ए बढिया घोड़े मोल लिए थे। थम उन नैं देख ल्यो तै बढिया रहै।” राज्जा घोड़े देखण नैं राज्जी हो ग्या। जिब्बै-ए मंतरी गेल्यां चाल पड़्या। मंतरी उस नै मिरग बन कान्नीं ले ग्या। ओड़े अचार्य केस्सी का धरम-बखाण होण लाग र्ह्या था।

यो देख कै राज्जा चौंक्या। बोल्या, “आड़े कित ली आया मन्नैं? चाल.... तावला चाल आड़े तै।”

राज्जा अर मंतरी चाल पड़े। माड़ी-सी दूर जा कै राज्जा नैं घोड़ा रोक दिया। कहण लाग्या, “मेरा आग्गै जाण नैं जी-ए कोन्यां करदा। मन्नै तै इसके मिट्ठे बोल याद आवैं सैं। बेरा ना इस साद्धू नैं मेरे पै के जाद्दू कर दिया! इस तै मिल्लण का जी करण लाग्या। मन्नै तै यो पहोंच्या होया साद्धू लाग्गै सै।”

मंतरी न्यूं सुण कै राज्जी हो ग्या। सोच्ची, राज्जा के बिचार ईब बदलण आले सैं। ओ आपणी सकीम की कामयाबी पै भित्तर-ए-भित्तर राज्जी होण लाग र्ह्या था।

दोन्नूं अचार्य केस्सी की सभा मैं गए। राज्जा की निग्हा अचार्य केस्सी कान्नीं चुम्बक की तरियां खिंच गी। राज्जा नैं सुणी- ‘यो संसार तै झूट्ठा दिखावा सै। असली तै आतमा सै जिसका ग्यान लेणा जरूरी सै।’

बखाण पूरा होया। राज्जा परदेसी नास्तक था। उसके जी मैं आतमा-परमातमा, लोक-परलोक, पुनर जनम, पाप-पुन्न, धरम के बारे मैं घणे-ए सुआल थे। उसनैं अचार्य केस्सी तै उनका जुआब बूज्झ्या।

अचार्य केस्सी सामी ने राज्जा तैं सारी बात खोल-खोल कै सिमझाई।

घणी बात के, राज्जा का पेट्टा भर ग्या। फेर भावना मैं भर कै राज्जा बोल्या, "भंते! मन्नैं आपणी सरण मैं ले ल्यो।"

अचार्य केस्सी तै राज्जा नैं बारा बरत लिए। ओ महलां मैं उलटा आ ग्या। राणी नैं देख्या तो हैरान रह गी। उसनैं यो सब किमै आच्छा कोन्नीं लाग्या।

परदेसी नैं चाही अक उसकी राणी भी अचार्य जी धोरै चाल्लै अर धरम की दिक्सा ले पर वा ना मान्नी। सराब पीणा अर मांस खाणा उन्नैं घणा भावै था। वा चाहूवै थी, राज्जा भी न्यूं-ए करै। परदेसी के धरमातमा बणन तै वा भित्तर-ए-भित्तर घणी जलै थी। एक दन उसनैं राज्जा तै मारण की सोच्ची। धोके तै उसनै राज्जा तै जहर दे दिया।

राज्जा नै राणी पै छोह कोन्यां कर्‌या। इस बात तै उसका बिराग और भी घणा हो ग्या। ओ पौसधसाला मैं चल्या गया। राग-द्‌वेस तै छूट कै ओड़ै-ए धरम-ध्यान मैं लाग ग्या। मरें पाछै ओ देव बण्या।

भूंडे अर करड़े बिचारां आला राज्जा भी साद्‌धू के सतसंग तै कितणी सहन करण आला अर कितणी दया करण आला बण ग्या था!

❑❑

भगवान का ध्यान

चम्पा नगरी मैं एक सेट रह्या करता। उसका नां था– अरहन्नक। अरहन्नक आपणा पीसा समाज की भलाई मैं खरच कर्‌या करै था। ओ जैन धरम मैं सरधा राक्खै था। नित-नेम कर्‌या करै था। नगरी का धन्ना सेट हो कै भी, उसमैं रत्ती-भर भी घमण्ड ना था।

एक बर अरहन्नक सेट ब्योपार करण खात्तर चाल पड़्या। उसकी गेल्यां घणे-ए मित्तर-प्यारे अर ढब्बी भी चाल पड़े। दूर का जाणा था अर समंदर का सफर था। कई दिन सफर मैं लागणे थे। सफर सरू हो ग्या। दो-चार दन तै सुथरी ढाल़ बीत गे। कोए बिघन कोन्या पड़्या। फेर एक दन तुफान आ ग्या। नाव ऊंची-ऊंची खतरनाक लहरां पै ऊपर-तल़ै होण लाग गी। चारूं कान्नीं गाड़्ढा अंधेरा हो ग्या।

सब नै लाग्या अक ईब तै मरण-घाट पहोंच लिए। सारे आपणे-आपणे देवां नैं याद करण लाग गे।

नाव मैं एक आदमी ईसा था जिनैं मरण का माड़ा-मोट्टा भी डर भै ना था। ओ सान्ती तै बैठ्या था। इंग्यै-उंग्यै ना लखावै था। ओ था– सेट अरहन्नक! उस नैं मन मैं यो संकल़प कर लिया अक या मुसीबत टल़ैगी तै मैं रोट्टी पाणी ल्यूंगा अर नहीं तै चारूं अहारां का त्याग सै। न्यूं सोच कै ओ भगवान का ध्यान करण लाग ग्या।

माड़ी वार पाछे उसनै एक अवाज सुणाई पड़ी- 'तू इस धरम नैं छोड दे। नहीं तै तेरी नाव इब्बै-ए समंदर मैं डूब ज्यागी। तू अर तेरे सारे

मित्तर-प्यारे डूब कै मर ज्यांगे।'

अरहन्नक बोल-बाला धरम-ध्यान मैं लाग्या रह्या। फेर अवाज आई– 'मैं तन्नैं घणा-ए धन द्यूंगा। बस, एक बर तू धरम नैं झूट्ठा कह दे। माल्ला-माल हो ज्यागा।'

माल्ला-माल होण की खबर सुण कै भी अरहन्नक आपणे धरम तै माड़ा-सा भी कोन्यां डिग्या। धरम-ध्यान मैं लाग्या रह्या।

नाव मैं बैट्ठे होए ओर लोग जो डर की मारी थर-थर कांपैं थे, बोल्ले, "रै सेट्ठां कै सेट अरहन्नक! तू हात्थां तै यो मोक्का मत न्या लिकड़ण दे। दखे जान भी बच्चैगी अर धन भी मिल्लैगा। इस धरम नैं छोड दे।"

अरहन्नक ईब भी चुप था। ना उसनै डर लाग्गै था अर ना-ए धन के लोभ मैं ओ मर्या जा था। ओ तै बस, ध्यान-ए करता रह्या। घणी बार ताईं न्यूं-ए होंदी रही। नाव मैं सुआर डरे होए लोग्गां की सिमझ मैं या बात आई-ए कोन्यां अक अरहन्नक म्हारी चिन्ता क्यूं ना करदा। माड़ी वार ओर बीत गी।

सबनै देख्या अक एक देव अरहन्नक के सामीं हाथ जोड़े खड़्या सै। अरहन्नक नैं आंख खोल्ली। होट्ठां भित्तर हांस्या। बूज्झी, "हे देव! थम कुण सो? आड़े आण का कसट क्यूंकर कर्या?"

देव नैं कही अक "इन्दर म्हाराज नै देवां की सभा मैं थारी घणी बडाई करी थी। पर, मेरा जी कोन्यां ठुक्या। थारा हिंतान लेण मैं आड़े आया था। समंदरी तूफान कुछ ना था, वा तै मेरी-ए माया थी। इंदर

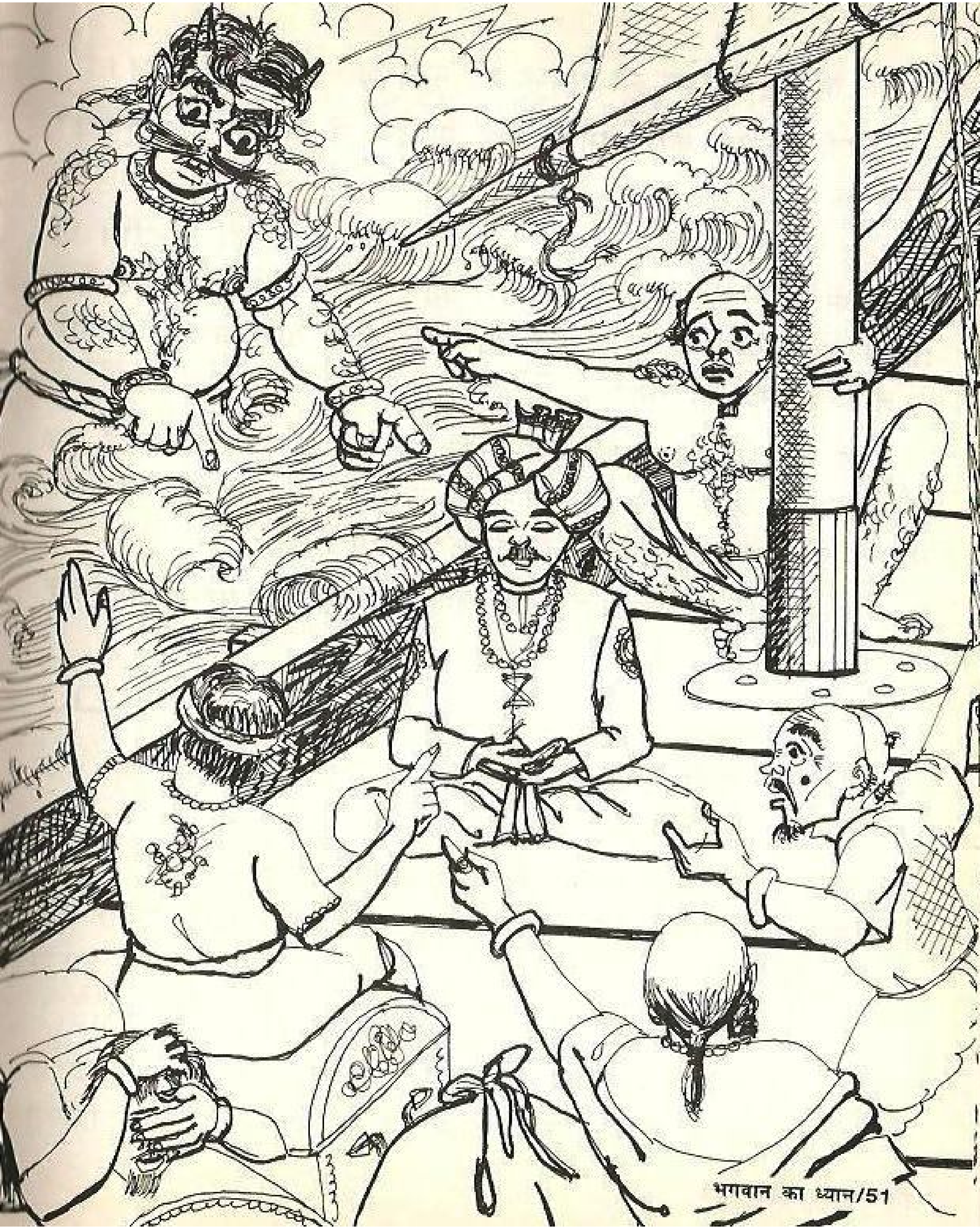

म्हाराज तै थारे बारे मैं जो सुण्या था, मन्नैं ओ न्यूं का न्यूं पाया।"

"बड़ी किरपा करी थमनै अक मैं इस के काब्बल समझ्या।" अरहन्नक नै कही।

देव नै एक सुथरी अर घणी कीमती कुंडलां की जोड़ी काड्ढी। वा अरहन्नक तै दे दी। बोल्या, "या मेरी ओड़ तै एक छोट्टी-सी भेंट सै। इस नै कबूल कर ल्यो।" देव नै कई बर कही तै अरहन्नक नै वा भेंट ले ली। देव गैब हो ग्या।

इस बात तै सारे सात्थी घणे हैरान रह गे। आपणी आंख्यां पै उन नै अकीन ना आवै था। सार्यां नैं सोच्ची– जै इस झाज मैं अरहन्नक सेट ना होंदा तै म्हारा बचणा तै मुस्किल-ए था।

साच्ची बात सै अक धरम के सार्मी तै देवता भी सर झुकाया करैं सैं।

❑❑

एक दन मैं मुकती

द्वारका नगरी मैं सिरी किरसन जी राज कर्या करते। उनके छोट्टे भाई का नां था-गजसुकुमाल। सिरी किरसन आपणे भाई का घणा-ए लाड कर्या करते। बालक गजसुकुमाल के बिना मां देवकी अर बाब्बू वसुदेव पै माड़ी वार भी ना रह्या जा था। मां-बाब्बू अर भाई किरसन उसनैं पूरे ध्यान तै पालण लाग रहे थे।

गजसुकुमाल जुआन होए। पढ़-लिख कै वे काब्बल बण गे। द्वारका मैं उन का नां हो ग्या। चारूं कान्नीं वे मसहूर हो गे। बात-ए ईसी थी। गजसुकुमाल घणे सुथरे थे अर अकलमंद भी थे। वे सरीर तै नाजुक भी थे। जाएं तै उनका नां गजसुकुमाल धर्या था। उन जीसा सुथरा जुआन उस टैम मैं कोए दूसरा ना था।

सिरी किरसन के गजसुकुमाल नै देखदे-ए एक बात याद आ जांदी। जिब गजसुकुमाल पैदा भी ना होए थे, जिब एक देवता नैं आ कै उन तै कही थी- "थारे घरां एक छोट्टा भाई पैदा होवैगा पर ओ जुआनी की उमर मैं मुनी (साद्धू) बण ज्यागा।" सिरी किरसन इस बात का करड़ा ध्यान राख्या करते, अक ईसी कोए बात ना होवै, जिस तै गजसुकुमाल कै बिराग हो ज्या।

एक बर भगवान् नेमीनाथ द्वारका नगरी के बाहर सहसर-आमर नां के बण मैं बिराज्जे। लोग्गां नैं बेरा पाट्या। उनके दरसनां खात्तर सबकै हुमाया चढ़ ग्या। भीड़ की भीड़ ओड़ै जाण लाग्गी। देवकी अर वासुदेव

भी सिरी किरसन गेल्लां दरसन करण जाण की चुपचाप त्यारी करण लाग्गे। फेर भी गजसुकुमाल नै वे जान्दे देख लिए। उन तै आप भी गेल्लां जाण की बात कही। वे उसके जाण के बारे मैं टालमटोल करदे रहे पर उसकी जिद के आग्गै उन नैं झुकणा पड्या। वे सारे के सारे कट्ठे हो कै चाल पड़े।

राह मैं किरसन जी नैं पांच-सात छोरी आपस मैं खेलती देक्खी। उनकी निगाह मैं एक सुथरी छोरी आई। उन नैं गजसुकुमाल का ब्याह उस छोरी तै करण की सोच्ची। बूज्झ्या तै बेरा लाग्या अक उस छोरी का नां सोमा सै। वा सोमिल बाह्मण की छोरी सै। किरसन जी नै सोमिल धोरै गजसुकुमाल के ब्याह की बात भिजवा दी। उस बात नैं सुण कै सोमिल के सूखे धान्नां मैं पाणी आ ग्या।

सारे भगवान् नेमीनाथ के समोसरण मैं पहोंचे। सबनैं भगवान तै धरम की बाणी सुणी अर घरां आ गे। भगवान् नेमीनाथ की देसणा सुण कै गजसुकुमाल के बिचार बदल गे। उन नैं दीक्सा लेण का पक्का फैसला कर लिया। मां-बाब्बू नैं बेरा पाट्या। उन नैं भोत दुःख होया। वे गजसुकुमाल नैं सिमझाण लाग्गे। पर गजसुकुमाल कोन्यां मान्ने। जिब्बे-ए ओड़ै सिरी किरसन आ गे। उन नैं भी आपणा छोट्टा भाई तरां-तरां की बात्तां तै सिमझाया। ढाल-ढाल के लालच दिए। गजसुकुमाल कोन्यां मान्ने। आक्खर मैं सिरी किरसन नैं कही, "रै भाई! तू राज-घराणे मैं पैदा होया सै। जाएं तै तू एक बर हमनैं राज करकै दिखा दे।" इस बात पै गजसुकुमाल चुप हो गे। दूसरे-ए दिन सिरी किरसन जी नैं ओ द्वारका के राज्जा बणा दिए।

सब नै उम्मेद हो गी अक ईब गजसुकुमाल कित्ते ना जावै। पर, राज्जा बणते-एं उन नैं हुकम दे दिया- मैं दीक्सा ल्यूंगा अर साद्धू बणूंगा। मेरी दीक्सा की त्यारी आज-ए अर इब्बै-ए करो। यो हुकम सुण कै सारे चुप हो गे। राज्जा के स्यांमीं कोए के बोलदा। राज्जा बणे होए गजसुकुमाल नैं उस्सै दन भगवान् नेमीनाथ के चरणां मैं साद्धू बणन की दीक्सा ले ली।

साद्धू बणें पाच्छै गजसुकुमाल नैं भगवान तै बूज्झया- "मुक्ती क्यूकर मिल्या करै?" परभू नैं बताया अक सूं-सां जंगा मैं, कै च्याणियां मैं रैहू कै ध्यान करो। न्यूं सुण कै गजसुकुमाल नैं समसाण मैं जा कै ध्यान करण की सोच्ची।

सांझ का टैम था। भगवान की अग्या ले कै वे समसाण मैं ध्यान करण चाल्ले गए। समसाण मैं मुनी गजसुकुमाल ध्यान की साधना मैं डूब गे। संसार की सोदूधी भी कोन्यां रही।

चाणचक ओड़े तै सोमिल लिकड़ै था। उसनैं आपणा होण आला जमाई साद्धू बण्या देख्या तै उसनैं इतणा छोहू आया अक ओ बौला हो ग्या। छोहू मैं भर कै उसनैं धोरे के जोहड़ मैं तै माट्टी काड्ढी अर ध्यान मैं खड़े होए गजसुकुमाल के सिर पै चारूं कान्नी पाल़ बांध दी। फेर उसमैं लाल सुरख अंगारे धर दिए। फेर ओ घरां आ ग्या।

गजसुकुमाल आपणी साधना तै कोन्यां डिग्गे। उनका सिर जल़ै था। मांस-मज्जा भी जलण लाग्गी पर गजसुकुमाल मुनी सान्ती तै ध्यान मैं खड़े रहे। उन नैं सोच्ची- "इसके खात्तर किस्से तै दोस देणा ठीक नहीं। यो तै आपणे-आपणे करमां का फल़ सै। आच्छा होया! ईब ये करम भी आज्जै हमेसां के लिए भसम हो ज्यांगे।"

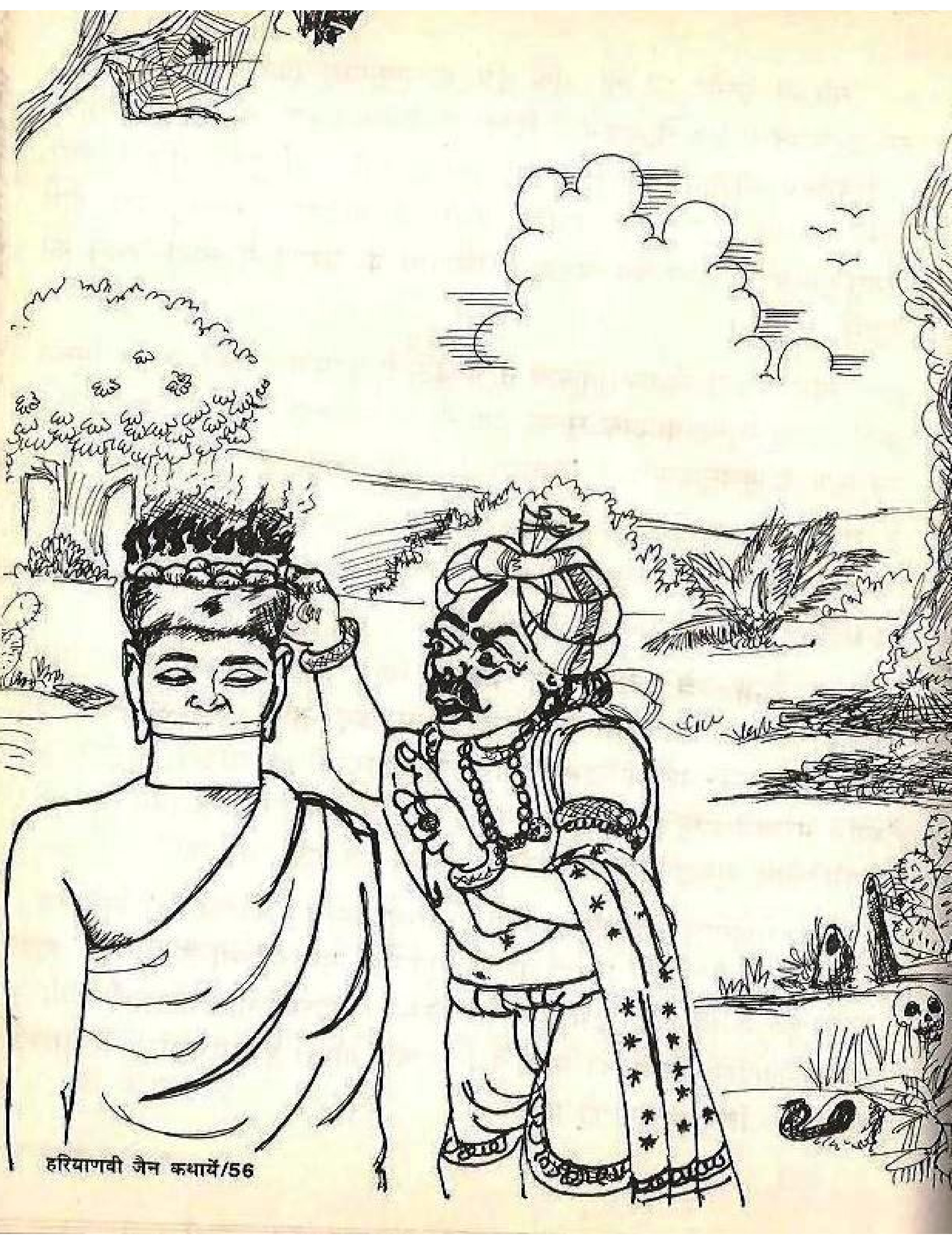

गजसुकुमाल नैं माड़ा-सा भी छोह् ना आया। वे आपणे ध्यान मैं कत्ती अटल खड़े रहे। फेर उन नैं केवल ग्यान हो ग्या। यो ग्यान होते-एं आदमी परमातमा बण ज्या सै। सरीर छोड कै गजसुकुमाल मुनी मोक्स मैं चले गए। वे भगवान् बण गे।

दूसरे दन सिरी किरसन जी भगवान् नेमिनाथ धोरै पहोंचे। उनूनैं गजसुकुमाल मुनी के बारे मैं बूज्झ्या। भगवान् नेमिनाथ नैं बता दी अक वे समसाण मैं जा कै ध्यान करण लाग्गे। गेल्लां-ए ओड़ै जो कुछ होया, ओ भी सब किमे बता दिया।

सिरी किरसन नैं ये सारी बात सुण कै अचंभा होया। उन नैं बूज्झ्या- "एक्कै दन मैं गजसुकुमाल नैं इतणा बड्डा ग्यान क्यूकर हो ग्या?" भगवान् नेमीनाथ नैं उनके सिर पै धरे होए सुरख अंगारां की बात बता कै कही- जो किस्से पै छोह् ना करै, दुस्मन अर दोसत का फरक मिट्या दे, ओ भगवान् बणज्या सै। सिरी किरसन नै जिब्बै-ए छोह् आ ग्या। उन नैं बूज्झ्या, "ईसा भूंडा ब्योहार किसनैं कर्या? मैं उसनैं जिन्दा ना छोड्डूं।"

भगवान् नेमीनाथ नैं कही, "नगरी मैं बड़तें-एं तमनैं बेरा पाट ज्यागा। एक आदमी थारे स्यांमीं आवैगा। तम नैं देखते-ए ओ डर कै जमीन पै ढै पड़ैगा अर मर ज्यागा। तम समझ लियो अक यो हे ओ आदमी सै।"

सिरी किरसन जी द्वारका कान्नीं उलटे आए। न्युन्नै सोमिल नैं किरसन के छोह् का बेरा लाग्या। पराण बचाण खात्तर ओ भाज्या। भाजदा होया किरसन जी के स्यांमीं आ ग्या। किरसन नैं देख कै डर ग्या अर भाजदा होया ओड़ै-ए जमीन पै ढै पड़्या। पड़ते-एं उसके पराण लिकड़

गे। सिरी किरसन जी सिमझ गे - यो हे ओ आदमी सै। जीसा इसनैं कर्या, ऊसा-ए फल़ भी इसनैं मिल ग्या।

गजसुकुमाल मुनी के तप की बात दूर-दूर ताईं मसहूर हो गी। आज हज्जारां साल बीत गे पर आज भी गजसुकुमाल मुनी अर उनकी तिपस्या नैं सरधा तै लोग याद करैं सैं। आए साल पज्जुसण के त्योहार पै उनकी कहाणी हर भगत सरधा भरे मन तै जरूर पढ्या/सुण्या करै सै।

❑❑

मामन सेट के बलद

बरसात के दन थे। रात के ग्यारा-बारा बाज रहे थे। चारूं कान्नीं घुप्प अंधेरा हो रह्या था। घणे जोर की बारिस होण लाग रही थी। जोर की बिजली चिमकी। महल्लां मैं सूत्ती होई महाराणी चेलना की नींद टूट गी। बाहर के होण लाग रह्या सै, यो देक्खण खात्तर वा राज मैहल की झांकी धोरै आई। चाणचक फेर जोर की बिजली चिमकी। बिजली के चांदणे मैं उन्नैं दीख्या अक एक आदमी नद्दी मैं खड़्या सै। आई बर बिजली चिमकती रही अर राणी देखदी रही। राणी नैं देख्या- ओ आदमी माड़ी-माड़ी वार मैं कनारे पै आवै सै, किमै धरै सै अर फेर नद्दी मै उतर ज्या सै। राणी नैं सोच्ची कोए गरीब आदमी सै। नद्दी मैं बैहत्ती होई लाकड़ी कट्ठी करै सै। ओ हो! म्हारे राज मै भी कितणे गरीब लोग रहैं सैं ? कितणी करड़ी मेहनत कर कै टैम काड्ढैं सैं! न्यूं-ए सोचदी-सोचदी राणी आपणे पिलंग पै उलटी आ गी।

राणी नैं सोण की कोसिस करी पर आंख ना लागी। वा राज्जा धोरै पहोंची। राज्जा आगै सारी बात बताई। राज्जा नैं सोच्ची- मैं तै इस धोखे मैं था अक मेरे राज मैं सारे मोज करैं सैं। किस्से नै भी कोए दुख कोन्यां, फेर यो गरीब इतणी रात नैं ईसी करड़ी मैहनत क्यूं करण लाग रह्या सै ?

राज्जा नैं नौकरां तै कही अक जाओ! नद्दी पै कोए आदमी लाकड़ी कट्ठी करै सै। उसके घर का बेरा काड्ढो। तड़कै-ए उसनैं मेरे स्यांमीं

बलाणा। आगले दन जिब दरबार लाग्या तै नोक्कर उस आदमी नैं पाकड़ कै ल्याए।

राज्जा नैं बूज्झी- तू कुण सै ? ओ बोल्या- हे म्हाराज! मेरा नां मामन सै। मैं-ए लाकड़ी कट्टी करूं था। राज्जा नैं फेर बूज्झी- जाड्डे की आद्धी रात मैं तू क्यां खात्तर दुखी हो र्‌हया था? मामन बोल्या- मेरे धोरै एक्कै बल़द सै। मैं ऊसा-ए दूसरा बल़द भी खरीदणा चाहूं सूं। जाएं तै इतणी मैहनत करूं सूं।"

राज्जा नैं सोच्ची– यो तै घणा-ए गरीब सै। राज-खुज्जान्ने तै इसकी इमदाद करणी चहिए। खुज्जान्ने का धन इन्हैं लोग्गां का सै।

राज्जा नैं गऊसाल़ा का परधान बलाया अर उस तै हुकम दिया- "इसनै आपणी गेल्ला गऊसाल़ा मैं लै ज्या। इसकै जो बल़द पसंद आवै, ओ-ए इसतैं फोरन दे दे।"

मम्मन गऊसाल़ा मैं गया पर उसकै एक भी बल़द पसंद कोन्यां आया। ओ उलटा-ए राज्जा धोरै आ ग्या, "म्हाराज ! मन्नैं तै आपणे बल़द बरगा-ए बल़द चहिए। ऊसा बल़द थारे धोरै कोन्यां।"

"आच्छा! किसा बल़द सै तेरा ? हम भी तै देक्खैं।" राज्जा नैं कही।

"मै उस नै आड़ै कोन्या ला सकदा म्हाराज ! जै थम उसनै देखणा चाहो सो तै मेरे घरां चाल्लो।"

राज्जा मामन के घरां बल़द देक्खण पहोंच्या। मामन का घर तै पूरा मैह्‌ल था। ओ राज्जा नै आपणे तहखान्ने मैं ले ग्या। ओड़ै अंधेरा था। राज्जा नैं कुछ ना दिक्खै था। जिब्बै-ए मामन नै किसे चीज पै ढंक्या होया

कपड़ा तार्‌या। तहखान्ने मैं रोसनी-ए-रोसनी हो गी। यो हे मामन का बल़द था, जिस पै तै उसनैं कपड़ा तार्‌या था। बल़द के था, पूरा-ए सोन्ने का बण र्‌हूया था। ऊप्पर तै तल़े ताईं हीरे-जुहारात जड़ र्‌हे थे।

राज्जा नैं सोच्ची- ईसा बल़द मेरे धोरै था-ए कित जो यो ले आत्ता।

मामन बोल्या- म्हाराज ! मेरे धोरै यो एक्कै बल़द सैं। इसकी जोट का मैं दूसरा भी बणवान लाग र्‌हूया सूं। ओ भी देक्खो।'' राज्जा नैं देख्या- दूसरा बल़द भी पैहले बरगा-ए था। बस उसके सर पै सींग ना थे। आग्गै मामन नैं बताई अक ईब मेरा धन सपड़ ग्या। जाएं तै मैं दन मैं भी काम करूं सूं अर रात मैं भी लाकड़ी चुग्गूं सूं। दन-रात मैह्‌नत करकै मैं धन कट्‌ठा करण लाग र्‌हूया सूं जुकर इस दूसरे बल़द के सींग भी पूरे हो ज्यां।''

राज्जा नैं यो देख कै घणा अचम्भा होया। एक सुआल उस नै ओर बूज्झ्या- ''बल़द बण जांगे तै के करैगा ?''

''फेर मैं हीरे जड़्‌या होया एक सोन्ने का रथ ओर बणवाऊंगा। उस रथ मैं ये बल़द जोत कै मैं राजगीर के बजार मैं हांड्‌या करूंगा। म्हाराज! ईसा रथ अर ईसे बल़द ओर किस्से धोरै कोन्यां पावैं, बस ! या हे मेरी तिमन्ना सैं'' मामन की बा़त सुण कै राज्जा बोल-बाला आपणे मैह्‌ल मैं उलटा आ ग्या। उस नैं राणी तै बताया अक मैं आपणे राज का जै सारा खुज्जान्ना भी उसनै दे दूयूं तै फेर भी उस की तिरसना कोन्यां मिट्‌टै।

एक बर राज्जा सरेणिक भगवान महावीर के दरसन करण गए। उन नैं भगवान तै बूज्झ्या, ''भगवान ! मामन धोरै घणा-ए धन सै। फेर भी उसके मूं पै उदास्सी र्‌हे से। इसका के कारण सै?''

भगवान बोल्ले- ''राज्जा ! मामन धोरै पाप का धन सै। जाएं तै ओ दुखी सै। जिस धन तै आदमी का जी आच्छे काम करण मैं लाग्गै, ओ धन पुन्न का अर जिस तै जी मैं कोए आच्छा काम करण का ख्याल ना आवै ओ धन पाप का हो सै।'' राज्जा कै सारी बात सिमझ मैं आ गी।

भगवान धोरे तै उलटा आ कै राज्जा नैं सारी बात राणी आग्गै बताई।

राणी नैं सच्चाई का बेरा पाट्या तैं वा बोल्ली, ''धन तै गिरस्ती की खात्तर साद्धन सै। लोग्गां नैं ओ हे मकसद बणा लीया, जाएं तै दुखी रहैं सैं। मैं तै न्यूं सोच्चूं थी अक म्हारे राज मैं कितणे गरीब अर दुखी लोग सैं पर ईब सिमझ मैं आई अक मामन बरगे लोग तै तिरिसना अर लोभ की मारी मरे जां सैं।''

❑❑

करणी अर भरणी

जितसतरू सरावस्ती नगरी का राज्जा था। ओ भगवान् महावीर का करड़ा भगत था। उसका एक छोरा था, सकंदक अर छोरी थी, पुरंदरयसा।

जितसतरू नैं आपणी छोरी का ब्याह दंडक तै कर दिया। ओ कुम्भकारकटक का राज्जा था। धरम उसनैं भावै-ए ना था। पुरंदरयसा धरम-करम मैं लाग्गी रैहूंदी। दंडक उसका मखौल उड़ाएं जांदा।

जितसतरू की उमर हो ली थी। उसनैं सकंदक आपणा बारस बणा दिया था। सकंदक के बिचार धारमिक थे। ओ दरबार मैं धरम की चरचा भी करवाया करता।

एक बर की बात सै। राज्जा दंडक का पिरोहूत था, पाल्लक। ओ सरावस्ती नगरी देक्खण आया। ओ दरबार देखणा चाहूवै था। आगले दन ओ दरबार मैं पहोंच्या। उसनै ओड़ै देख्या– सकंदक धरम-चरचा करण लाग रहूया था। ओ तै धरम नैं चाहूवै-ए ना था। उसनै सकंदक तै सासतरारथ करण की कही। सकंदक नैं नरमाई तै मना कर दिया पर ओ घणा जिदूदी था। कोन्यां मान्ना। आक्खर मैं सकंदक नै सासतरारथ की हां भर दी।

सासतरारथ सरू हो ग्या। माड़ी बार ताईं तै दंडक का पिरोहूत पाल्लक सकंदक के सुआलां का जुआब देंदा रहूया पर सकंदक के ग्यान आग्गै उसकी पार कोन्या बसाई। उसनैं नीचा देखणा पडूया। ओ सासतरारथ मैं हार

ग्या।

बेसती करा कै पाल्लक आपणे राज मैं उलटा चाल्या गया। आपणे ऊपर उसनैं सरम आण लाग रही थी। भित्तर-ए-भित्तर उसनैं सकंदक तै इस बेसती का बदला लेण की पक्की सोच ली। टैम लिकड़ता रह्या।

एक दन सकंदक आपणे पांच सै ढब्बियां गेल्लां बीसमें तीरथंकर मुनी सुव्रत स्वामी के चरणां मैं पहोंच्या। उसनैं तीरथंकर की बाणी सुणी। भगवान की देसना सुण कै उसका जी बिरागी हो ग्या। बोल्या, "भगवान! मन्नै भी मुनी- धरम की दीक्सा दे द्यो। मेरे ढब्बी भी आपके उपदेस सुण कै दीक्सा लेणा चाह्वैं सैं।"

भगवान नैं उन तै मुनी-दीक्सा दे दी। थोड़े दन ओड़े रहें पाच्छै एक दन सकंदक नैं कही, "भगवान! मैं आपणी बाह्ण अर भिणोइये नैं धरम का उपदेस देणा चाहूं सूं।" मुनी सुव्रत स्वामी बोल्ले, "बात तै या भोत बढ़िया सै पर ओड़े थमनैं कष्ट होवैगा। थारे सारे सात्थी मार दिए जांगे।"

"प्रभो! हमनैं मरण का डर कोन्या। हम तै आपके विचार चारूं कान्नीं फलाणा चाह्वैं सैं" सारे कट्ठे हो कै बोल्ले।

भगवान नैं आग्या दे दी। सकंदक आपणे सात्थियां गेल्लां राज्जा दंडक के राज कान्नीं चाल पड़्या।

पाल्लक नैं इसका बेरा पाट्या। ओ राज्जी हो ग्या। सोच्ची अक यो मोक्का सैं। ईब मैं आपणी बेसती का बदला ल्यूंगा। घणी वार ताई ओ सोचदा रह्या।

सकंदक मुनी अर उस के सात्थी साद्धू नगरी के धोरै एक बाग मैं ठैह्र गे। रात नैं पाल्लक ओड़े पहोंच्या। उसनैं खड्ढे खोद कै उनमैं

हथियार ल्हको दिए।

फेर ओ राज्जा दंडक तै मिल्लण गया। रात नैं पाल्लक दीख्या तै दंडक चौंक्या। पाल्लक बोल्या, ''म्हाराज। भूंडी खबर सैं। सकंदक थारा रस्तेदार सै अर ओ मुनी बण रह्या सै। लेक्यन ओ मुनी का भेस भर के आपणे पाँच सै मुनी के भेस आले फौजियां गेल्लां बाग मैं ठैहर रह्या सै। मन्नैं बेरा लाग्या सै अक ओ इस राज नैं हड़पणा चाह्वै सै।

राज्जा बोल्या- अक, न्यूं क्यूकर ?

पाल्लक नैं कह्या- म्हाराज न्यूं-ए सै। या राज-पाट की भूख घणी माड़ी हो सै। इस भूख तैं माणस रस्तेदारी ने भी गोल़्या ना करदा। थाम मेरी गेल्लां चाल्लो। सांच-झूठ का बेरा इब्बै लाग ज्यागा।'' न्यूं सुण कै राज्जा पाल्लक गेल्लां बाग मैं पहोंच्या। पाल्लक नैं खड्ढे खोद्दे। हथियार राज्जा तै दिखाए अर बोल्या, ''देख लिया म्हाराज! आपणी आक्खां तैं देख ल्यो। इस मुनी का भेस भरे होए सकंदक अर इसके साथियां तै वा सजा मिलणी चहिए अक ओर दुस्मन भी याद राक्खैं !'' राज्जा नैं पाल्लक तै कही, 'रै ! तन्नैं तै म्हारा राज बचा दिया। ना तैं ये दुसट तै हमनैं खतम कर देंदे। ईब जीसी तेरे जी मैं आवै, ऊसी-ए सजा इन तै दे दे।''

दंडक नैं न्यूं कही तै पाल्लक राज्जी हो कै नाच्चण लाग्या।

तड़का होया। पाल्लक नैं थोड़े-से फोज्जी गेल्लां लिए अर बाग चारूं कान्नीं तै घेर लिया। जल्लादां तै हुकम दे दिया, ''देक्खो के सो ? इन पखंडियां नैं कोल्हू मैं गेर कै पीस द्यो।''

न्यूं देख कै सारे साधू हैरान रैह्गे। पर किस्से नैं कुछ ना कही।

पाल्लक सकंदक मुनी तै बोल्या, "ईब याद कर ले आपणे धरम नैं। याद सै- तन्नैं मेरी बेसती करी थी। ईब भोग्गो आपणी करणी का फल।"

सकंदक मुनी होट्ठां भित्तर हांसे। उनकै याद आई अक भगवान नैं ठीक-ए कही थी- ओड़ै तम सारे के सारे मारे जा सको सो। वे बोल्ले- "पाल्लक ! तू घमण्ड मैं पड़्या से। याद राखिए अक भूंडे करमां का नतीजा भोत भूंडा लिकड़्या करै सै।"

पाल्लक पै उनकी बात्तां का कोए असर ना होया।

साद्धुआं नैं देख लिया- ईब टैम आग्या सै। उनत्ती भगवान् याद करे अर आपणे नेमां बरतां में होई भूल-चूक की माफ्फी मांगी। फेर, गरु तै आग्या ले कै संतारा (सारी-ए उमर का खाणा-पीणा छोड़्य) कै, भगवान् के ध्यान मैं बेठ ग्ये।

जल्लादां नैं मुनी कोल्हू मैं पेरने सरू कर दिए। खून्नां की धार चाल पड़ी। धरती लाल होण लाग्गी। दरदनाक महौल बण ग्या। एक-एक करदे-करदे चार सौ न्यनाणुवैं साद्धू कोल्हू मैं पीड़ दिये।

आख्यर मैं सकंदक मुनी का एक चेल्ला बच ग्या था। ओ बालक मुनी था। उसकी उमर देख कै सकंदक मुनी बोल्ले, "पाल्लक! इतणे बेकसूर साद्धू मार कै तन्नैं ठीक नहीं कर्या। मैं कहूं सूं अक तू इसनैं छोड़ कै पैल्हां मनै पीड़ दे।

पाल्लक नैं सोच्ची- इस चेल्ले तै सकंदक नैं घणा प्यार सै। ओ बोल्या, "बोल-बाला खड़्या रैह्। तेरी आंख्या के स्यांमीं-ए यो मरैगा। तेरी बारी भी आण आली सै।"

जिब्बे-ए जल्लादां नैं ओ बालक मुनी भी कोल्हू मैं फैंक दिया।

सकंदक मुनी तै ना रह्या गया। वे बोल्ले- ''रै पापी! तेरा नास होण आला सै। मैं सारे सैह्र नै जला कै राख कर द्यूंगा।''

पाल्लक नै सकंदक की बात कोन्यां सुणी। अर, हुकम दे दिया अक इसनैं भी कोल्हू मैं फैंक द्यो। सकंदक मुनी भी कोल्हू में पीड़ दिये गये।

हर्या-भर्या बाग खून मैं सन ग्या। चील अर गीध मंडराण लाग्गे। एक गीध नैं सकंदक मुनी का खून मैं भर्या रजोहरण (ओग्घा) मांस का टुकड़ा सिमझ कै ठाया अर आपणी चोंच में दाब लिया। ओ उड़ कै राजमैह्ल पै जा बेठ्या। ओ ओघा मैह्ल के चोंक मैं ढै पड़्या। यो देख कै पुरंदरयसा कै खटक लाग गी। बूज्झ्या तै सारी बात का बेरा लाग्या। या दरदनाक बात सुण कै वा चिल्ली मार कै ढै पड़ी। उसका जी संसार के रिस्ते-नात्तां तै ऊब ग्या। उसनैं साध्वी दीक्सा ले ली।

थोड़ा टैम बीत्या। संकलप के मुताबक सकंदक मुनी अग्नीकुवार देवता बणे। आपणे सात्थियां गेल्लां भयानक रूप बणा कै बाग के ऊपर मंडराण लाग्गे। अकासबाणी करी, ''पाल्लक ! हुस्यार हो ले। ईब टैम आ ग्या सै। आपणे पाप का फल भोग्गण नैं त्यार हो ज्या।''

न्यूं सुणतें-ए अकास तै आग बरसण लाग्गी। माड़ी वार मैं-ए सारा सैह्र भसम हो ग्या। राज्जा, उसका घर-कुणबा, पाल्लक अर उसके सारे सात्थी जल कै मर गे।

न्यूं सुणी सै अक कई साल ताईं ओड़ै आग बलती रही। उस जमीन नैं ईब "दंडकारण्य" कह्या करैं सैं। ❑❑

मेघ कुवार मुनी

मगध देस मैं राजगीर नाम का एक सहर था। ओड़ै राज्जा सरेणिक राज कर्‌या करदा। उसकी एक राणी का नां था धारणी अर दूसरी का था नंदा। नंदा कै एक छोरा होया। उसका नां था- अभै कुवार। धारणी कै कोए बालक ना था। उसनै इसकी करड़ी फिकर रह्‌या करती। राज्जा नै वा घणी-ए समझाई पर उसकी सोच कोन्यां मिट्‌टी।

एक बर रात नैं धारणी नैं सुपने मैं एक धौला हाथी दीख्या। उसनैं यो सुपना राज्जा तै बताया। राज्जा नैं पंडतां तै सुपने का मतलब बूझ्या। पंडत बोल्ले, "म्हाराज! राणी नै भोत सुथरा सुपना देख्या सै। उसकै एक ईसा छोरा होवैगा जो धणा-ए नाम कमावैगा।"

पंडतां की या बात सारे सहर मैं हवा की तरियां फैलगी। जन्ता सुण-सुण कै घणी-ए राज्जी होई। तीन म्हीनें बीत ग्ये। एक बै राणी का ईसा जी कर्‌या अक वा अकास मैं काले-काले बाद्‌दल देक्खै। हाथी पै चढ कै वैभार गरी नाम के पहाड़ पै हांडे। पर राणी के जी की कूक्कर पूरी हो सकै थी। बारिस का टैम तै लिकड़ लिया था। फेर काले बाद्‌दल अकास मैं कित तै आंदे? राणी फेर दुखी-दुखी-सी रहण लाग्गी।

राज्जा नैं बूज्झी तै राणी नैं आपणे जी की बताई। राज्जा भी इसमैं के कर सकै था! या सिमस्या तै उसके बस की थी नहीं। ओ भी बोल-बाला रहण लाग्या। राज्जा के छोरे अर राजगीर के मंतरी अभै कुवार नै राज्जा तै बूज्झी अक बात के सै? राज्जा नै राणी के जी की बात

बता दी। अभै-कुवार बोल्या अक "पिताजी... कती फिकर ना करो। वा मेरी मां सै। मैं राणी के जी की बात साच्ची कर कै दिखाऊंगा।" न्यूं कह कै ओ पोसा करण की जंगा मैं चाल्या गया। खाणा-पीणा छोड कै तीन दन की तिपस्या करण लाग्या। दो दन बीत गे।

तीसरे दन देवलोक मैं एक देव बैठ्या था। उसका नां था- रिद्धी कुमार। उसनै अभैकुवार की तिपस्या का बेरा पाट्या। ओ उसके धोरै आया। उस तै बर मांगण की कही। अभैकुवार नै आपणी राणी मां के जी की बात साच्ची करण खातर बिनती करी। देव 'तथास्तु' कह कै चाल्या गया। बारिस होण का ढंग दीखण लाग्या। अकास मैं काले़-काले़ बाद्दल़ आ ग्ये। बाद्दलां नै देख कै राणी घणी-ए राज्जी होई। हाथी पै बैठ कै वा वैभार गरी के पहाड़ पै हांडण गई। उस के जी की बात साच्ची होई।

आच्छे म्हूरत मैं राणी कै छोरा होया। उसका नां धर दिया– मेघ कुवार। जुकर एक-एक दिन चंदरमा की कला बढ्या करै सै, न्यूं-ए ओ भी बड्ढण लाग्या। राज्जा नैं ओ पड्ढण खातर अचार्य जी धोरै घाल दिया। थोड़े-ए दिनां मैं उस नैं घणी-ए बिद्या सीख ली। ओ ओड़े तै बिदवान बण कै घरां उलटा आ लिया। राज्जा नै सुथरी अर काबल छोरी गेलां मेघकुवार का ब्याह कर दिया।

एक बै बिहार करदे-करदे म्हावीर भगवान उसे सहर के बाह्र आ ग्ये। लोग उनकी बाणी सुणन खातर तरसैं थे। दुनिया उनकी बाणी सुणन आण लाग गी। लोग उनके बखाण की तारीफ सारे सहर मैं करण लाग गे। चुगरदे कै या-ए बात चाल पड़ी। चालते-चालते या बात राज्जा

के कान्नां मैं भी पड़ी। ओ भी आपणे घर-कुणबे गेलां बाणी-सुणन पहौंच ग्या। सबनै जिसी बात सुणी थी, उस तै भी बत्ती बात पाई। सारे के सारे म्हावीर भगवान नै मान्नण लाग गे। सब तै घणा असर पड्या राज्जा के छोरे मेघ कुवार पै। बखाण जिब पूरा हो लिया तै ओ भगवान के चरणां मैं जा पहौंच्या अर दीक्सा दे कै साद्धू बणान खातर बिनती करण लाग्या। भगवान बोल्ले– पहलां अपणे मां-बाप तै बूझ, दीक्सा की अज्ञा ले ले, जिब्बै दीक्सा ले सकै सै।

मेघ कुवार महलां मैं उलटा आया। राज्जा-राणी आगै आपणे मन की बात कही। राज्जा नैं ओ घणा-ए समझाया। उसकी मां तै रोण लाग गी। आपणे भीतर की सारी मामता उसनै छोरे पै बरसा दी। फेर भी मेघकुवार आपणे फैसले तै जौ भर भी कोन्यां डिग्या। मां-बाप नैं जिब देख लिया अक छोरे पै तै उनकी बातां का कोए असर ना पड़ै तै वे कहण लाग्गे, "बेट्टा! हमनैं जो कुछ समझाणा-समझूणा था ओ तै हमनैं सारा कर लिया। तू चाहे मान चाहे मतन्या मान। म्हारा ईब एक अरमान सै। हम न्यूं चाह्वे सैं अक दीक्सा लेण तै पहलां तू एक बर राज-सिंघासन पै बैठ ज्या। म्हारा यो आखरी अरमान सै। बस! तू इस नैं पूरा कर दे। फेर जुकर तेरा जी करै न्यूं-ए कर लिए।"

मेघ कुवार नैं उनकी या बात मान ली। उसका राज तिलक हो ग्या। एक दिन खातर ओ गद्दी पै बैठ्या। आगले दिन ओ राज-पाट छोड कै जाण लाग्या। चालते-चालते उसकी मां बोल्ली अक, "दखे! तू साद्धू बणन खातर तै जा सै पर पूरे संजम तै जिनगी बिताइये। खूब ऊंचा साद्धू बणिये। किस्से भी तरियां की कोए कमजोरी आपणे भीतर मतन्या आण

दिए।" राज्जा नैं भी उस तै न्यूं हे कही।

मेघकुवार म्हावीर भगवान के चरणां मैं पहोंच ग्या। भगवान नैं उस तै दीक्सा देण की किरपा कर दी। इब ओ मुनी मेघ कुवार बण गे।

मेघ मुनी सारे मुनियां मैं सब तै छोट्टे थे। रात होई तै सोण खातर उन नै सब तै पाछै देहलियां धोरै जंगा मिल्ली। रात नै जिब भी कोए मुनी ओड़े तै आता-जाता तै मेघ मुनी नै आपणे पां सकोड़ने पड़ते। एकाधी बर दूसरां के पां उनकै लाग भी जाते। इस बात तै वे दुखी हो लिए। सारी रात नींद कोन्यां आई। साद्धू बणन के अपने तावलेपण पै सारी रात झीखते से रहे। माड़ी-माड़ी वार मैं मां-बाप के लाड्डां की याद आण लाग गी। न्यूं सोचते रहे अक मन्नैं घणी-ए भूंडी करी। जे मां-बाप की बात मान लेंदा तै यो दुक्ख थोड़ा-ए देखणा पड़ता। मैं राज्जा का छोरा अर ये साद्धू मन्नैं आते-जाते ठोकर मारैं। या भी कोए जिनगी सै? इस तै तै आच्छा मैं पहल्यां-ए ना था!

आपणे घमण्ड मैं उसनैं फैसला कर लिया अक मुनी का बाणा छोड कै मां-बाप के धोरै जाऊंगा। वे मन्नैं घर मैं उल्टा आया देख कै घणे-ए राज्जी होवैंगे। न्यूं-ए सोचते-सोचते तड़का हो ग्या। उसनैं सोची अक भगवान आगै कह कै अर फेर जाणा चहिए।

वे भगवान के चरणां मैं पहोंच गे। सारी बता दी। भगवान समझाण लाग्गे, "इसमैं दुखी होण की कुण-सी बात सै? तम आपणे-आप नैं भूल गे। यो तै कुछ भी दुक्ख कोन्या। पाछले जनमां मैं तै तमनै घणा कसट ठाया था।" या बात सुण कै मेघ मुनी नै भगवान तै आपणे पाछले जनमां की बात सुणान की बेनती करी।

मेघ कुंवार मुनी/73

म्हावीर भगवान बोल्ले- "थारे तीसरे जनम का जिकर सै। तम हाथियां के परधान थे। एक बर गरमियां के दिन थे। जंगल़ के जीव-जन्तु गरमी के मारे घणे-ए दुखी हो रे थे। पाणी टोहूण खातर और जानवरां गेल्लां तम भी भाजे फिरो थे। फेर तम एक जोहड़ नै देख कै उस मैं पाणी पीण नै बड़गे। ओड़ै घणी-ए दलदल थी। तम उस जोहड़ की दलदल मैं फंस गे। चाणचक एक हाथी ओर ओड़ैं पहौंच ग्या। उसकी अर थारी दुसमनाई थी। उसनैं आपणे पैन्ने दांतां तै थारा सारा सरीर ओड़े बींध दिया। तम नै बोल-बाले रह कै सारा कष्ट ओट लिया। आखिर मैं थारे पराण लिकड़ गे।"

"दूसरे जनम की कथा भी सुणाओ भगवान!" मेघ मुनी नै बेनती करी।

भगवान सुणान लाग्गे, "दूसरे जनम मैं भी तम हाथी बणे। थारे यारे--प्यारां नै फेर तम आपणे परधान बणा लिए। एक बर जंगल़ मैं आग लाग गी। सारे जीव-जंतुआं मैं भगदड़ माच गी। जान बचाण खातर कोए किंघे नैं भाजता, कोए किंघे नैं। वा आग घणी ना थी। तौली-ए बुझ गी। पर या देख कै तमनैं घणा डर लाग्या। तमनैं आपणी अर आपणी गेल रैहण आल़ां की जान बचाण खातर एक गोल़ मदान बणाया, जिस मैं घास-फूस का एक तुणका भी ना था। पेड़-पाड़ ओड़े तैं सारे पाड़ कै हटा दिए थे। मदान कती साफ लिकड़ आया था।

गरमी फेर घणी हो गी। ईब कै जंगल़ मैं घणी खतरनाक आग लाग्गी। तम आपणे साथियां नैं ले कै उस मदान मैं आ गे। थारी जान बचती देख कै आपणी जान बचाण खातर जंगल़ के छोट्टे-बड्डे सारे-ए जीव-जंतु उस मदान मैं कट्ठे होण लाग गे। तमनैं सब तैं जंगा दे दी।

मदान ठाड्डा भर ग्या। जिब्बै-ए एक खरगोस ओड़ै आया। उसनै किते भी जंगा कोन्यां पाई। ओ जंगा टोहूता फिरै था।

उसे टैम तमनैं खाज करण खातर आपणा पां ठाया। खरगोस नैं जंगा दीखी। ओ ओड़ै-ए बैठ ग्या। तमनै पां धरणा चाहूया पर खरगोस की जान पै तरस खा कै जमीन पै पां धरूया कोन्या। तम नैं कितणा कसट ठाया था उस टैम? तीन दिन ताईं आग बलती रही। फेर बुझी।सारे जीव-जंतु ओड़े तै जाण लाग्गे। ओ खरगोस भी चाल्या गया। फेर जब तम नैं धरती पै पां टेकणा चाहूया तै टिक्या-ए कोन्या। ऊंचै पै धरे-धरे पां कती सुन्न हो लिया था। तम नैं चालण की कोसिस करी पर पां तै कती सुन्न था। तम धरती पै धड़ाम दणे-सी ढै पड़े अर मर गे। तम नैं खरगोस पै दया करी थी इसका फल तमनैं मिल्या अर राज्जा सरेणिक के घर मैं जनम लिया। हाथी की जून मैं दूसरे खातर इतणा दुक्ख ठा कै तै तम आदमी बणे। ईब तम माड़े हे कसट तै-ए दुखी हो लिए?"

भगवान की बाणी सुण के मेघ मुनी नैं पाछले जनमां का ग्यान हो ग्या। सारी बात उसकी सिमझ मैं आ गी। भगवान तै वे माफी मांगण लाग्गे अर कसम खा ली अक ईब मैं सारी ज्यंदगी दूसरां के भले मैं अर दूसरां की सेवा मैं-ए ला दयूंगा।

कई साल मेघ मुनी नैं करड़ी तिपस्या करी। आपणा भी भला करूया अर औरां का भी भला करूया। घणे-ए लोग्गां तै सचाई की राही दिखाई। आखिर मैं तिपस्या करते होए सरीर छोड्या अर देवलोक मैं जा कै जनम लिया।

□□

दया के समुन्दर

एक बर की बात सै। अचार्य धरमघोस अपणे चेल्लां के साथ घूमदे-होए चम्पानगरी पहोंचे। उनका एक तपस्सी चेल्ला था- धरमरूची अणगार। दुपहरी का टैम था। अचार्य जी तै अग्या ले के धरमरूची भिक्सा लेण खात्तर नगरी मैं गए।

चम्पा नगरी मैं एक लुगाई रहूया करती जिसका नां था- नागसिरी। रोटियां गेल्यां उसनैं घीया का साग बणा राख्या था। चाख कै देख्या तै बेरा पाट्या अक घीया कड़ुवी सै। उसनै सोची अक यो साग तै कित्ते दूर-ए बाहूर फैंकणा ठीक रहैगा। जै घर आलां नै कड़वे साग का बेरा पाट्य ग्या तै ओं मन्नै फूहड़ बतावैंगे। न्यूं सोच कै उसने ओ साग लूहको कै धर दिया। फेर उसनै दूसरा साग बणाया। घर के लोग्गां तै रोट्टी खुआ दी। आप भी रोट्टी खा कै अराम करण लाग्गी।

नागसिरी लोटी- ए थी अक भिक्सा लेण खात्तर धरमरूची घर मैं आए। उसनैं उनकी पूरी इज्जत करी अर घर मैं भित्तरां नैं बला लिए। नागसिरी के घर मैं रोट्टी-पाणी तै सब निमट लिया था। उसनैं सोच्ची अक कड़ुअे घीया का साग सै। इसतै दे द्यूं। यो चाक्खैगा तै कड़ुआ लाग्गैगा। फेर यो सारे साग नैं बगा देगा। मन्नैं साग बगाण खात्तर इंग्धै-उंग्धै कोनी जाणा पड़ै। जिब्बै-ए उसनैं घीया का साग उनके पातरे (बास्सण) मैं घाल दिया।

साग घणा-ए था। धरमरूची नैं सोच्ची अक यो तै भतेरा सै। किसे

दया के समुन्दर

एक बर की बात सै। अचार्य धरमघोस अपणे चेल्लां के साथ घूमदे-होए चम्पानगरी पहोंचे। उनका एक तपस्सी चेल्ला था- धरमरूची अणगार। दुपहरी का टैम था। अचार्य जी तै अग्या ले के धरमरूची भिक्सा लेण खात्तर नगरी मैं गए।

चम्पा नगरी मैं एक लुगाई रह्या करती जिसका नां था- नागसिरी। रोटियां गेल्यां उसनैं घीया का साग बणा राख्या था। चाख कै देख्या तै बेरा पाट्या अक घीया कड़ुवी सै। उसनै सोची अक यो साग तै कित्ते दूर-ए बाह्र फैंकणा ठीक रहैगा। जै घर आलां नै कड़वे साग का बेरा पाट्य ग्या तै ओं मन्नै फूहड़ बतावैंगे। न्यूं सोच कै उसने ओ साग लूहको कै धर दिया। फेर उसने दूसरा साग बणाया। घर के लोग्गां तै रोट्टी खुआ दी। आप भी रोट्टी खा कै अराम करण लाग्गी।

नागसिरी लोटी- ए थी अक भिक्सा लेण खात्तर धरमरूची घर मैं आए। उसनैं उनकी पूरी इज्जत करी अर घर मैं भित्तरां नैं बला लिए। नागसिरी के घर मैं रोट्टी-पाणी तै सब निमट लिया था। उसनैं सोच्ची अक कड़ुए घीया का साग सै। इसतै दे द्यूं। यो चाक्खैगा तै कड़ुआ लाग्गैगा। फेर यो सारे साग नैं बगा देगा। मन्नैं साग बगाण खात्तर इंग्घै-उंग्घै कोनी जाणा पड़ै। जिब्बै-ए उसनैं घीया का साग उनके पातरे (बास्सण) मैं घाल दिया।

साग घणा-ए था। धरमरूची नैं सोच्ची अक यो तै भतेरा सै। किसे

ओर घर तै और भिक्सा मांगण की के जरूरत सै। उन नैं पातरे ठाये अर सीद्धे अचार्य जी के चरणां मैं उलटे आ लीए। पातरे अचार्य धरमघोस के स्यांमी धर दिए। अचार्य जी नैं साग देख्या। कुछ सोच कै ओ चाख्या। बोल्ले, "यो साग तै जहरीला सै। किसे नै धोके तै दिया सै। ईब इसनैं ईसी जंगा गेर जित कोए जी-जन्तू इस साग नैं ना खा सकै।"

धरमरूची ईसी जंगा टोहूण खात्तर चाल पड़े।

उधर नागसिरी अराम करै थी। आपणी चतराई तै भरे काम पै वा घणी-ए राज्जी होण लाग रूही थी। सोच्चै थी अक़ आच्छा होया मन्नैं कित्तै ना जाणा पड़्या। कूड़ाघर मेरे घरां आपै-ए आ ग्या। इन भूंडे बिचारां तै उसनै म्हापाप के करम बांध लीए।

धरमरूची बण मैं खाली-सी जंगा पहोंचे। उननैं माड़ा-सा साग धरती पै धर्‌या तै माड़ी वार मैं-ए साग की खसबू तै ओड़ै घणी सारी कीड़ी आ गी। साग चाखतें एं कीड़ी मरणी सरू हो गी।

धरमरूची नैं देख्या अक कीड़ी तै तड़प-तड़प कै मरण लाग रूही सैं। उनके मन मैं घणी-ए दया आई। उन नैं सोच्ची अक ईसी जंगा तै इस दुनिया मैं टोही भी ना पावै जित कोए जी-जन्तू ना रूहैन्दा हो।

चाणचक मुनी जी कै ख्याल मैं एक बात आयी। वे भित्तर-ए-भित्तर हांसे। आपणे आप तै बोल्ले, "सै, ईसी एक जंगा सै, जित किस्से जी-जन्तू कै खामखा कोए तकलीफ ना हो अर वा जंगा सै, मेरा पेट। जै इस साग नैं मेरे पेट मैं जंगा पा गी तै एकला मैं-ए मरूंगा। कम तै कम ओर जी-जन्तुआं की जान तै बच-ए जागी। अर फेर, गरू जी के हुकम के

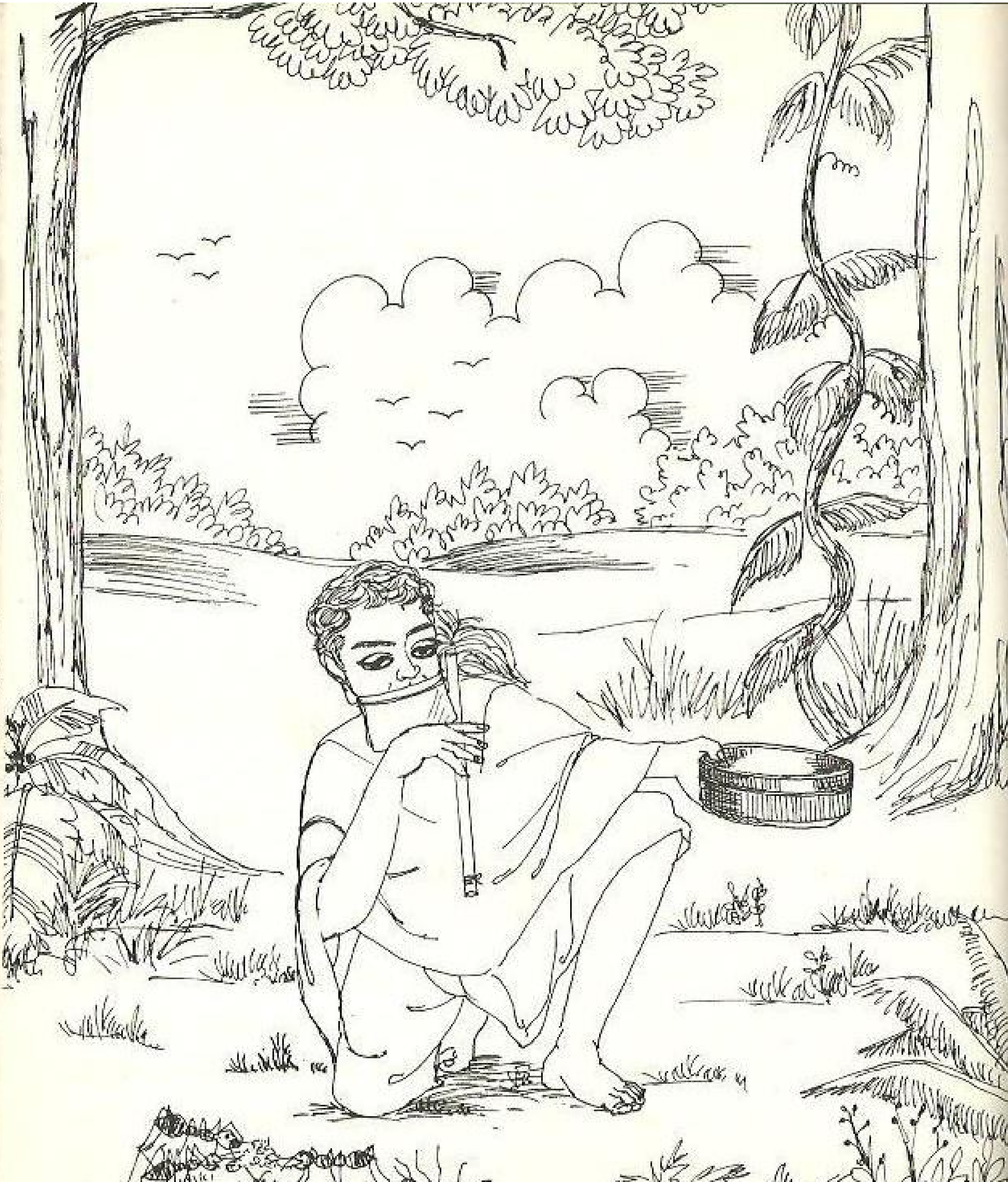

मुताबक भी काम हो ज्यागा।" न्यूं सोच कै उन नैं 'सिद्धे सरणं पवज्जामि' कही अर खूब राज्जी हो कै ओ साग खा लीया। अर संतारा (मरण बरत) ले लिया। जहर का जिब्बै-ए असर होया। उनका सरीर लीला पड़ ग्या। माड़ी वार पाछै मुनी जी ये जां अर वो ज्जां! वे मर कै सुरग में पैद्दा होए।

सांझ हो गी। अचार्य धरमघोस नैं देख्या अक चेल्ला ना आया तै चिन्ता-सी हो गी। ओर चेल्लां तै कही अक धरमरूचि नैं टोहो अर उसका बेरा काड्ढो। एक चेल्ला उन नैं टोह्ण चाल पड्या।

ओ चेल्ला जंगल मैं पहोंच्या। देख्या तै हैरान रह ग्या, "रै! यो तै तपस्सी धरमरूची अणगार का मर्या होया सरीर सै!"

दुखी जी तै चेल्ला गरू जी धोरै उलटा आया। उसती गरू तै बताई- अक अणगार का सुरगवास हो ग्या। अचार्य जी जिब्बै सिमझ ग्ये। बूज्झण पै वे बोले- अक धरमरूची तै किसे नैं जहरीला साग दे दीया था। मनैं उसतै कही थी- अक इस साग नैं ईसी जंगा छोड्या जित कोए जी-जन्तू इसनैं खा कै ना मरै। न्यूं लाग्गै सै अक सारे जी-जन्तुआं पै दया करकै उसनैं सारा साग आपे-ए खा लीया।

सारे साद्धुआं नैं या बात सुणी। सारे तपस्सी मुनी जी तै धन्न-धन्न कहण लाग्गे।

साच्चें-ए धरमरूची अणगार दया के समुन्दर थे।

चम्पानगरी के लोग्गां नैं जिब इस बात का बेरा लाग्या तै सब नै मन-ए मन मैं धरमरूची अणगार तै बन्दना कर्यी अर उनकी जे-जैकार बोली। ❑❑

सुभ भौना

म्हाभारत के बाद का जिकर सै। किरसन जी इस लोक तै जा लिए थे। उनके जाण तै बलराम का दिल टूट लीया था। किरसन के बिना यो संसार उन नैं कती सून्ना लाग्या करदा। एक दन उन नैं घर-बार छोड-ए दिया।

बलराम मुनी बण कै आतमा की साधना मैं लाग गे।

एक बर बलराम मुनी भिक्सा लेण खात्तर चाल पड़े। एक नगरी मैं पहोंचे। उस नगरी के बाह्र राह मैं एक कुआं पड्या। ओड़ै कुछ लुगाई खड़ी थी। कोए बात घड़ै थी। कोए कुएं तै पाणी काड्ढै थी। आस्ता-आस्ता कुएं पै भीड़ होण लाग्गी। जिब्बे-ए एक लुगाई ओड़ै पाणी भरण आई। उसकी गेल्यां एक बालक भी था। उसकी निग्हा बलराम मुनी पै पड़ी तै दूसरी लुगाइयां की तरियां वा भी मुनी नै देक्खण लाग्गी। उसनै इस तरियां के भेस आले साद्धू कदे ना देक्खे थे। उसनैं कुछ ध्यान ना रह्या। वा काम भी करदी रही अर मुनी नै देखदी भी रही। उसनैं नेज्जू (जौड़ी) बालटी कै बांधण की बजाय बालक की घिट्टी मैं बांध दी अर कुएं मैं गेरण नै त्यार हो गी। किसे साथ आली नै देख्या तै टोक्की,"तू के करण लाग रही सै?"

"कूएं तै पाणी काड्ढूं सूं।"

"अर तन्नै नेज्जू का फन्दा क्यां मैं लाया सै, न्यूं तै देख ले।"

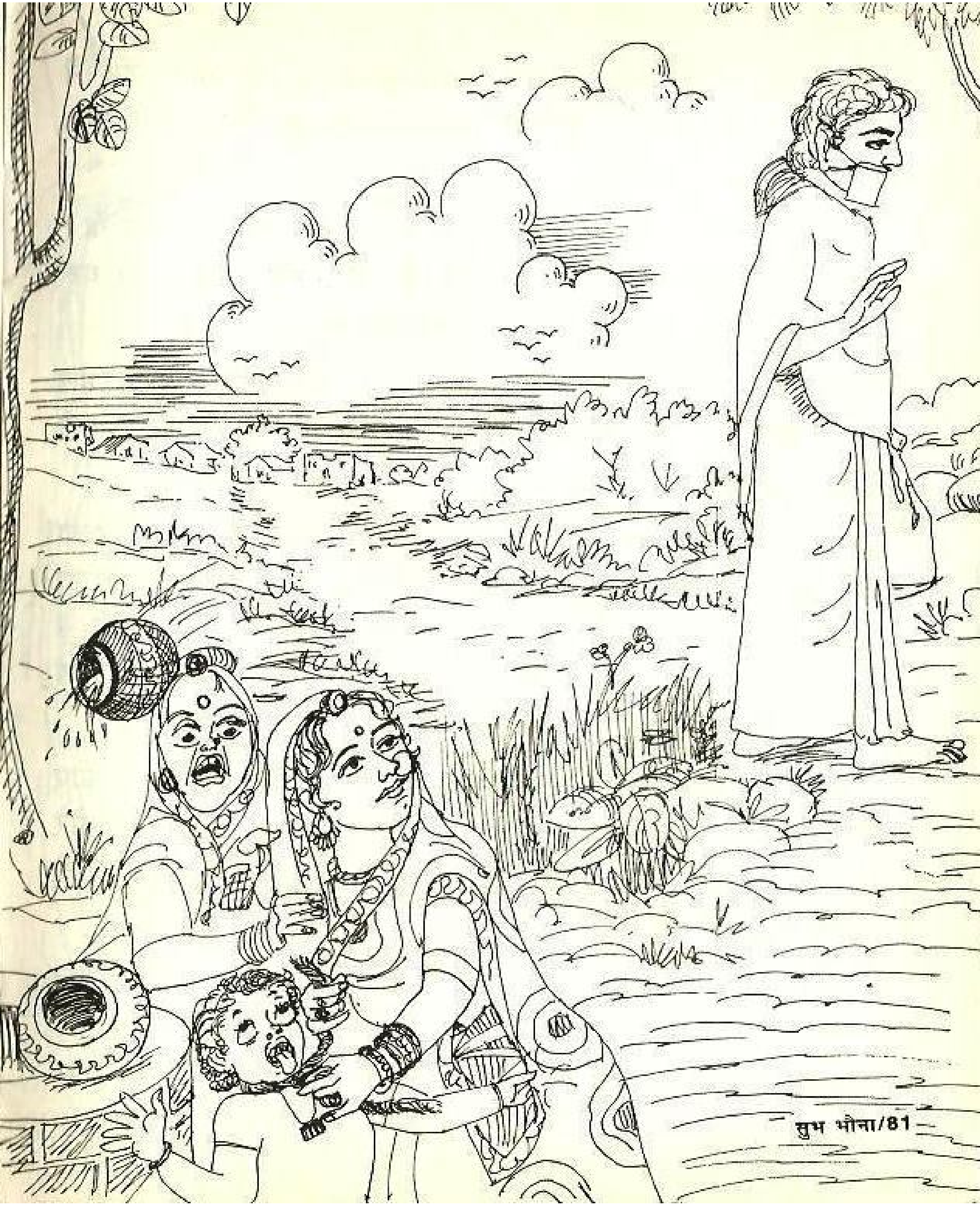
सुभ भौना/81

न्यूं सुण कै वा नेज्जू कान्नीं लखाई तै हैरान रह गी। उस नैं जिब्बे-ए बालक की नाड़ मैं तै रस्सी खोल्ली। बलराम मुनी नै यो सारा सीन देख लिया।

बलराम मुनी नैं सौच्ची अक मेरे कारण या लुगाई आपणे होंस भूल गी। मन्नैं देख कै तै लोग के बेरा के कर सकैं सैं। मैं नगरी मैं पां-ए ना धरूं तै टीक र्हैगा। न्यूं सोच कै वे जंगल कान्नीं उलटे चाल पड़्ये।

या बात होएं पाछैं वे कद्दे नगरी मैं कोन्यां आए। जंगल मैं-ए रैहण लाग गे। किसे आंदे-जांदे मुसाफर तै रोट्टी मिल जांदी तै ले लेंदे, ना तै बरती रह कै साधना मैं लाग्गे रहंदे।

एक दन बलराम ध्यान मैं बैट्ठे थे। ओड़े तै एक हिरण का बच्चा उछलता-कूदता होया लिकड़्या। मुनी जी के भोले रूप नैं देख कै हिरण का बच्चा ओड़ै-ए टैर ग्या। मुनी जी के चरणां मैं बैठ ग्या। मुनी जी नैं प्यार तै ओ देख्या। उस दन तै ओ हिरण का बच्चा ओड़ै-ए रैहण लाग्या। उसनै भी किमे ग्यान हो ग्या।

हिरण का बच्चा घणा स्याणा बण ग्या था। उस जंगल मैं कोए राह्गीर रोट्टी खांदा तैं हिरण उसनैं देख कै भाज्या होया मुनी जी के धोरै पहौंचता अर उन नै उस मुसाफर धोरै ले आंदा। राह्गीर भिक्सा मैं जो कुछ देंदा, मुनी जी ओ-ए ले लेते।

एक दन की बात सै। एक राज्जा नैं आपणे खात्ती तै अरथ बणान की लाकड़ी मंगाई। ओ खात्ती उस जंगल मैं लाकड़ी टोहता होया एक पेड़ धोरै पहौंच्चा। जित बलराम मुनी साधना कर्या करते उस तै माड़ी-ए दूर ओ पेड़ था।

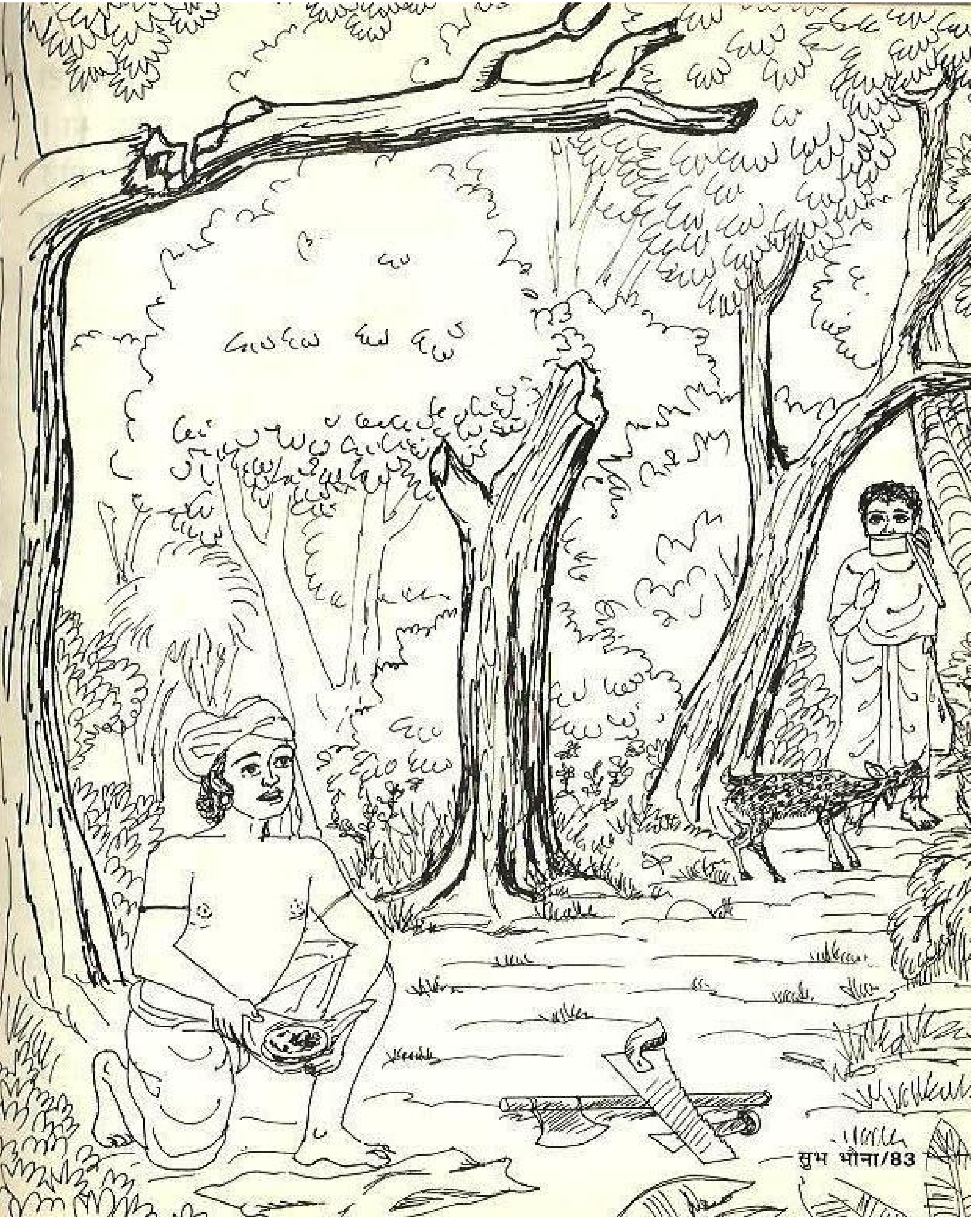

खात्ती नैं सोच्ची अक 'रोटियां का टैम हो र्‌हृया सै। पहल्यां रोट्‌टी खा ल्यूं, फेर पेड़ काट ल्यूंगा।' न्यूं सोच कै ओ रोट्‌टी खाण बैठ ग्या। हिरण नैं खात्ती देख लीया।ओ मुनी बलराम नैं आपणी गेल्लां ओड़ै लीयाया। खात्ती नैं इज्जत करी अर मुनी तै भिक्सा लेण की परारथना करी। मुनी बलराम उसतैं भिक्सा लेण लाग्गे। यो सारा सीन हिरण का बच्चा देक्खण लाग र्‌हृया था। यो सीन उसके जी नैं घणा-ए प्यारा अर सुख देण आला लाग्या। ओ सोच्चण लाग्या– धन्न सै मुनी नै, जो तिपस्या करैं सैं अर धन्न सै इस खात्ती नै जो ईसे तिपस्सी साद्‌धू नै भिक्सा देवै सै। जै मैं माणस होन्दा तै मैं भी ईसे तिपस्सी नै भिक्सा दे के आपणी जिनगी नै सुफल कर लेंदा। न्यू सोच-सोच कै उसकै आंसू आ ग्ये। दान देण की सुभ भौना उसमैं गंगा-जमुना सी बैह्‌ण लाग गी।

संजोग की बात! उस्सै टैम जोर की आंद्‌धी चाल्ली। जिस पेड़ नैं खात्ती काटणा चाह्‌वै था ओ टूट कै ढै पड़्‌या। तीन्नूं उसके तलै दब गे अर तीनुआं का सरीर पूरा हो ग्या।

मुनी बलराम नैं बर्‌हमलोक (सुरग) मैं जनम लीया। वे देव के रूप मैं पैद्दा होए। खात्ती अर हिरण का बच्चा आपणे आच्छे करमां के मुताबक उस्से देवलोक मैं बलराम की सेवा करण आले देव बणे।

मुनी नैं आपणी तिपस्या अर साधना तै यो ऊंच्चा पद हासल कर्‌या, खात्ती नैं दान दे कै अर हिरण के बच्चे नैं आपणी आच्छी अर सुभ भौना तै बढ़िया गत पाई।

❑❑

जो मौत पै भी ना डिग्या

तगरा नां की एक नगरी थी। उसमैं एक आदमी रह्या करता।उसका नां वणिकदत्त था। उसकी घरआली थी- भदरा। एक छोरा था- अरणक।

एक बर अचार्य अरहनमित्तर अर उनके चेल्ले तगरा नगरी मैं पहौंचे। उनकी बाणी सुणन नैं घणे-ए लोग आया करदे। एक दन वणिकदत्त भी आपणी घर आली अर छोरे गेल्लां उनका बखाण सुणन गया। बखाण सुण कै सारे घर आलां कै बिराग हो ग्या। सबनैं दिक्सा ले ली अर अचार्य गेल्लां रैहूण लाग गे।

वणिक दत्त साद्धू तै बण ग्या था पर ईब ताईं उसका छोरे तै मोह कोन्या छूट्या था। भिक्सा लेण खात्तर लिकड़ता तै बेट्टे नैं भी गेल्लां ना ले जाता। सोचता अक छोरे तै क्यूं तकलीफ दी। उसकी भिक्सा भी मैं-ए ली आऊंगा। घणे दन ताईं न्यू-ए काम चालदा रह्या।

टैम बदल्या। वणिकदत्त मुनी का सुरगबास हो ग्या। फेर अरणक मुनी आप्पै-ए भिक्सा लेण जाण लाग्या। एक बै गरमी का म्हीना था। लू सारे सरीर नैं फूंकैं थीं। धूप सिर नैं फूंकै थी। जमीन तवे की ढाल तप्पै थी। ईसे मोस्सम मैं अरणक मुनी बेचैन हो ग्या। बेचैन हो कै ओ एक मैहूल के छज्जे तलै छांह मैं खड़्या हो कै सांस लेण लाग्या। गेल्ल-ए ईसी जिंदगी बिताण खात्तर ओ बार-बार आपणे आप नैं कोस्सण लाग्या।

उस्से टैम उस मैहल के झरोखे मैं तै एक लुगाई नै झांक कै देख्या। उसनै एक दुखी साद्धू अरणक दीख्या। उसनै बूज्झी, "थम कुण सो ?

आड़े के करो सो ?" अरणक नैं आपणे बारे मैं सब किमे बता दीया।

लुगाई नैं उस तै मैहूल में आण की कही। मुनी भित्तर आ ग्या तै वा बोल्ली, "इब्बै थारी उमर मुनी बणन के लैक कोन्यां।" या सुण कै उसनै सोच्ची अक 'या ठीक-ए कहै सै। थोड़े दन संसार के सुख भोग ल्यूं। फेर जीसा टैम हो, देख्या जागा।' फेर ओ उस्सै लुगाई धोरै रैहूण लाग्या अर संसार के भोग्गां मैं पड़ ग्या।

अरणक मुनी के साथियां नैं ओ घणा-ए टोहूया पर कुछ बेरा कोनी लाग्या।

बेट्टे की याद मैं अरणक की मां बोली बरगी हो गी। जंगा-जंगा वा आपणे छोरे नैं टोहूती रहंदी। न्यू कई बरस बीत ग्ये।

एक दन अरणक मैहूल मैं बैठ्या था। चाणचक उस नैं झांकी मैं कै देख्या तै एक बावली सी लुगाई हांडती होई दीक्खी। पहल्यां तै वा उसकी पिछाण मैं कोन्यां आई। ध्यान ला कै देख्या तै सिमझ ग्या अक या तै मेरी सती मां सै। मेरी याद मैं-ए इसका यो हाल हो ग्या। ओ हो......मैं भी कितणा पापी सूं। मन्नैं चाल कै माफी मांगणी चहिए।' न्यू सोच कै ओ जिब्बै सती मां धोरै पहोंच ग्या। हाथ जोड़्य कै बोल्या, "मां ! मेरे तै भोत बड्डी गलती हो गी। तू मन्नैं माफ कर दे।

सती मां बोल्यी- बेट्टा ! तन्नै यू के कर्‌या ! तों धरम नै छोड़्य कै पाप कै रस्ते हो लिया।

अरणक बोल्या- तू मन्नै ईब कै माफ करदे। जै मैं तेरा साच्चा बेट्टा हूंगा तै पूरा धरम करकै संजम पाल कै दिखाऊंगा।

मां का जी पसीज ग्या। उस नैं अरणक तै असीरवाद दीया। उसकी

आंक्खां तै पाणी बहण लाग्या। दोन्नूं एक-दूसरे नैं देखदे रहे।

मां तै अग्या ले कै अरणक फेर अचार्य अरहन्नूमित्तर धोरै पहौंच्या। आपणी गलती की माफी मांग्गी। अचार्य जी नैं उस तै हट कै मुनी-दिक्सा दे दी।

एक दन अरणक मुनी नैं अचार्य अरहन्नूमित्तर तै कही, "अचार्य जी! आप मन्नैं सब तै ऊंच्ची साधना बताओ। वा चाहे कितणी-ए मुस्किल हो। मैं उसनैं जरूर करूंगा। ईब मेरे मन मैं कोए डर कोनी रह्या।"

फेर अचार्य जी नैं उन तै परम समाद्धी (संथारा) का तरीका बताया। बोल्ले, "जै समभाव तै कोए इस समाद्धी की साधना कर ले तै उसनैं मुकती मिल ज्या।"

अरणक मुनी नैं अचार्य जी तै असीरवाद ले कै वा परम समाद्धी धार ली। वे पहाड़ां मैं किस्से सूं- सां जंगा मैं एक सिला पै जम कै बैठगे अर समाद्धी मैं खू गे। इतणा बेरा भी ना रह्या अक बाहर के होण लाग रह्या सै। कद तै सूरज लिकड़्या अर कद छिप ग्या। वे पहाड़ की तरियां जम्मे रहे। धूप तै उनका सरीर जल ग्या पर अरणक नैं आंख भी कोन्यां झपकी। इस समाद्धी मैं उन नैं एक दन परम ग्यान हो ग्या। वे सारे दुक्खां तै छूट कै मुकती मैं चाल्ले गए।

मुनियां नैं अर गिरस्तियां नैं जिब बेरा लाग्या तै सबनैं या-ए बात कही, "अरणक मुनी का मन पहल्यां कितना कमजोर था अर फेर ओ-ए मन कितना ठाड्डा हो ग्या। मोत पै भी ओ डिग्या कोन्यां। धन्न हो अरणक मुनी नैं।

❑❑

मन्तर का चिमत्कार

एक सेट था। उसकी नौकार मंतर मैं करड़ी सरधा थी। ओ सेट नरम सुभा का था अर उसके जी मैं दया-धरम भी था। ओ सोच्या करता अक ब्योपार करण खात्तर जिब मैं परदेस जाऊं तो सैहूर के ओर हीणे लोग्गां नै भी आपणी गेल्लां ले जाऊं। न्यूं सोच कै परदेस जाण तै पहलां उसनैं एक दन सैहूर मैं डूंडी पिटवाई- "जो कोए ब्योपार करण खात्तर परदेस जाणा चाह्वै, ओ मेरी गेल्लां चाल्लै। किस्से धोरै पूंज्जी ना हो तो मैं उसनैं पूंज्जी द्यूंगा। ब्योपार मैं घाट्टा हो ग्या तो ओ भी मैं ए भरूंगा।"

या खबर सुण कै घणे-ए हुमाए मैं भरे लोग उसकी गेल्लां हो लिए। पूरे लस्कर नैं ले कै सेट चाल पड्या। सफर करती हाणां उनका लस्कर ईसे भारी जंगल़ मैं कै लिकड्या, जित डाक्कू रह्या करते। डाकुआं नैं ओ लस्कर निगाह लिया। ओं भी लुक-छप कै उसके पाच्छै-पाच्छै चाल पड़े। सांझ होई। लस्कर नैं एक जंगा पड़ा गेर लिया। लस्कर के लोग्गां नैं रोट्टी-पाणी त्यार कर्‌या अर खा-पी लिया। सोण की त्यारी करण लाग्गे तै सोच्ची- अक यो जंगल़ सै। सारे सो ज्यांगे तो कुक्कर काम चाल्लैगा। थोड़े-से लोग्गां नैं तै पैहूरा देणा चहिए।

सेट बोल्या- तम सारे अराम तै सो जाओ। रूखाल़ी करण की जुम्मेदारी मेरी सै। सारे सो गे। न्यूं देख कै सेट नैं आपणे भगवान नौकार मंतर का पाठ करकै लस्कर के चारूं कान्नीं एक चक्कर लाया। चक्कर ला कै ओ भी सो ग्या।

जिब सारे माणस सो गे तो डाकुआं नैं आपणा काम करण की सोच्ची। वे हथियार ले कै हमला करण खात्तर आग्गे नैं सरके। उनती देख्या- अक लस्कर के तै सारे लोग सोण लाग र्हे सैं अर पैंतीस फौजी जुआन घोड़ां पै बैट्ठे चारूं कान्नीं घूम-घूम कै पैह्रा देवैं सैं। फौजी जुआन्नां नैं देख कै डाकुआं की हमला करण की हिम्मत कोन्यां पड़ी। लुके होए वे बोल -बाले देखदे रहे।

डाक्कू सोच मैं पड़गे अक लस्कर गेल्लां तै फौजी ना थे। रातूं-रात चाणचक ये कित तै आ गे?

गेल्लां-ए एक ओर चिमतकार होया। एक फौजी ईसा दीख्या, जिसकै सिर ना था। अर, ओ भी पैह्रा देण लाग रह्या था। तड़का होया तै डाक्कू मूं-अंधेरे देक्खण आए अक फौजी दिन मैं कित चाल्ले जां सैं। फौजी कोन्यां दीक्खे। डाक्कू दूसरे दन फेर लस्कर के पाछै लाग लिए।

दूसरे दन भी न्यूं-ए बणी जो पहलड़े दन बीत्ती थी। डाकुआं नैं ओर भी अचम्भा होया। वे तीसरे दन भी गेल्लां लाग लिए। तीसरी बर भी उनका काम कोन्यां बण्या। चौथे दन डाक्कू सूधे सेट के धोरै पहोंच गे।

सेट नैं उनके बारे मैं बूज्झ्या। डाक्कू बोल्ले- हम तै डाक्कू सैं पर इस टैम थारे धोरै एक बात बूज्झण आए सैं। दन मैं जिन फौजियां का नाम नसान भी कोन्यां दीखदा, वे चाणचक रात नैं कित तै आ ज्यां सैं? गेल्लां-ए या बात ओर बताओ अक दुनिया मैं हमनै आदमी तै घणे देक्खे पर ईसा कोए कद्दे ना देख्या जिसका सिर-ए ना हो। थारे इस मूंडकटे फौजी का भी जुआब कोन्यां। चाल्लै सै, पैहरा दे सै पर उसनैं दीक्खै क्यूकर सै, या बात सिमझ मैं कोन्यां आई।

सेट नैं डाकुआं की बात सुणी। ओ भी हैरान रह ग्या। माड़ी वार कुछ सोच कै बोल्या, "इस बात का बेरा रात नै लाग्गैगा। आज रात नैं तम फौजियां नै फेर देखियो।" सेट की बात मान कै डाक्कू चाल्ले गए।

सेट कै बिस्वास हो ग्या अक यो सारा नौकार मंतर का असर सै। ये फौजी भी नौकार मंतर के पैंतीस अक्सरां के हुकम पै चाल्लण आले देवता सैं। एक फौजी के सिर ना होण का मतबल सै अक मेरे मंतर के पाट मैं कोए कमी सै। उदन रात होई तै सेट नै पूरे ध्यान तै नौकार मंतर पढ्या। पढती हाणा उसनैं बेरा पाट्या अक मंतर के आखरी सबद की बिन्दी उसपै बोल्ली-ए ना जा थी। उस टैम सेट नैं मंतर का सुध पाठ कर्या अर सो ग्या। डाक्कू आए। उन नैं देख्या अक फौजी पैह्रा देण लाग र्हे सैं पर बिना सिर का जो फौजी था ओ उन मैं कोन्यां। तड़कै उनती सेट आग्गै रात नैं बीत्ती होई सारी बात कैह दी।

सेट नैं कही- "भाइयो! बात या सै अक मैं एक मंतर का जाप कर्या करूं। उसका नां सै नौकार मंतर। उसके पांच सबद अर पैंतिस अक्सर सैं। तमनैं जो फौजी देक्खे, वे फौजी कोन्यां थे। वे तै देवता सैं। वे नौकार मंतर की पूज्जा करण आले सैं अर पूज्जा करण आलां की इमदाद भी कर्या करैं।

एक अक्सर की बिन्दी मेरे पै बोल्ली ना जा थी, जाएं तै तमनैं बिना सिर का फौजी देख्या था। उसका सारा रूप बाद मैं परगट होया जिब मन्नैं मंतर का सुध पाट कर्या।"

सेट तै नौकार मंतर की मैह्मा सुण कै डाकुआं नैं बूज्झी- के हम नैं भी इस मंतर का बेरा लाग सकै सैं? सेट बोल्या, "लाग क्यूं ना सकदा? तम

ये भूंडे काम छोड़ द्यो अर इस मंतर का पाट करण लाग ज्याओ। थारे सारे पाप भी यो मंतर धो देगा। थारी आतमा मैं लुक्या होया देवता परगट हो ज्यागा। जणा-जणा थारी इज्जत करण लाग ज्यागा।"

डाकुआं नैं सेट की कही मान ली। वे भले माणस बणगे अर मंतरां के राज्जा नौकार मंतर का जाप करण आले बणगे। ▢▢

भगवान महावीर अर चण्डकोसिया सांप

भगवान् महावीर जैन धरम के चोबिसमें तिरथंकर थे। एक बर वे चाल्ले जां थे। जिस राही पै वे आग्गे नैं चालते जां थे वा घणे डूंगे जंगल़ कान्नीं जा थी। जिब्बै-ए पाच्छे तै भाजते होए दो-चार पाल़ियां नै महावीर तै बोल दे कै कह्या-

"बाब्बा..... ओ बाब्बा! ठैह्र जा! इंग्धे नै मतन्या जा।"

महावीर ठैह्र गे। धोरै आए पाल़ियां तै महावीर नैं बूज्झ्या- "क्यूं? के बात सै? तम मन्नै क्यां खात्तर बोल द्यो थे?"

पाल़ी बोल्ले-"आग्गै एक खतरनाक सांप र्है सै। उसका नां सै चण्डकोसिया। ओ घणा-ए जैह्री सै। आदमियां की तै बात-ए के सै...... जिनावर भी उसकी फफकार तै डरै सैं। उसनै तो मोक्का मिलणा चहिए। उसकी फफकार मैं इतणी जान सै अक अकास मैं उड़ते होए पक्सी भी खिंच कै तल़ै आ पड़ैं सैं। जंगल़ के पेड़-पौद्धे भी उसके जैह्र तैं भसम हो लिए सैं- इसा सांप इस जंगल़ मैं र्है सै। जाएं तै इंग्धे कै मतन्या जाओ। हाम थमनैं दूसरी राही बता देंगे। ओड़े कै लिक्कड़ जइओ।"

महावीर नै चण्डकोसिया सांप के खतरे के बारे मैं सुण्या। उनके भित्तर प्यार उमड्ड्याया। वे बोल्ले, "सांप तै मेरा दोस्त-ढब्बी सै। मैं उस्सै के धोरै जां सूं।" ग्वाले देखदे रैह्गे। महावीर आग्गे नैं चाल पड़े।

चालते-चालते महावीर सांप की बाँबी धोरै पहोंच गे। ओड़ै पहोंच कै वे ध्यान करण लाग्गे।

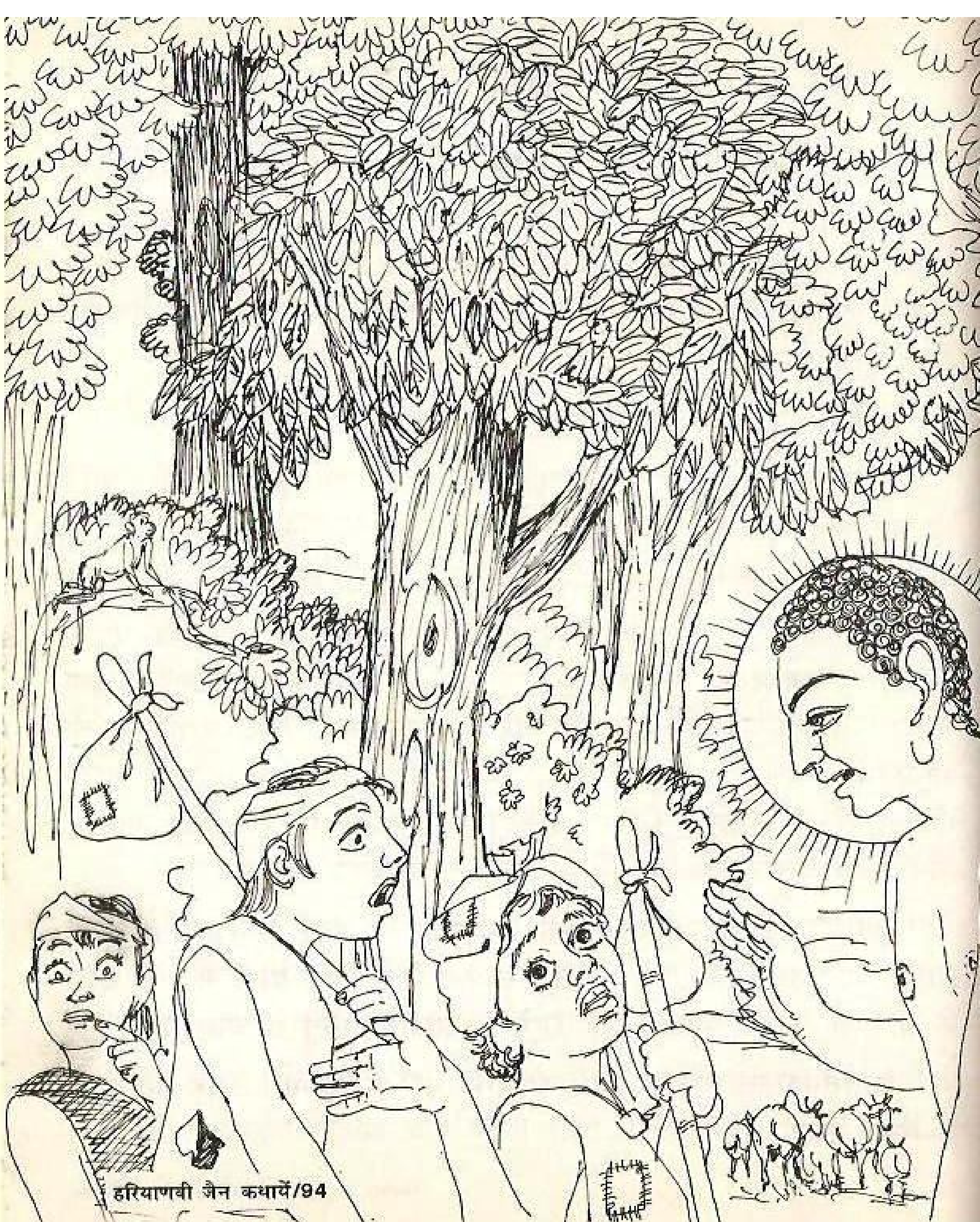

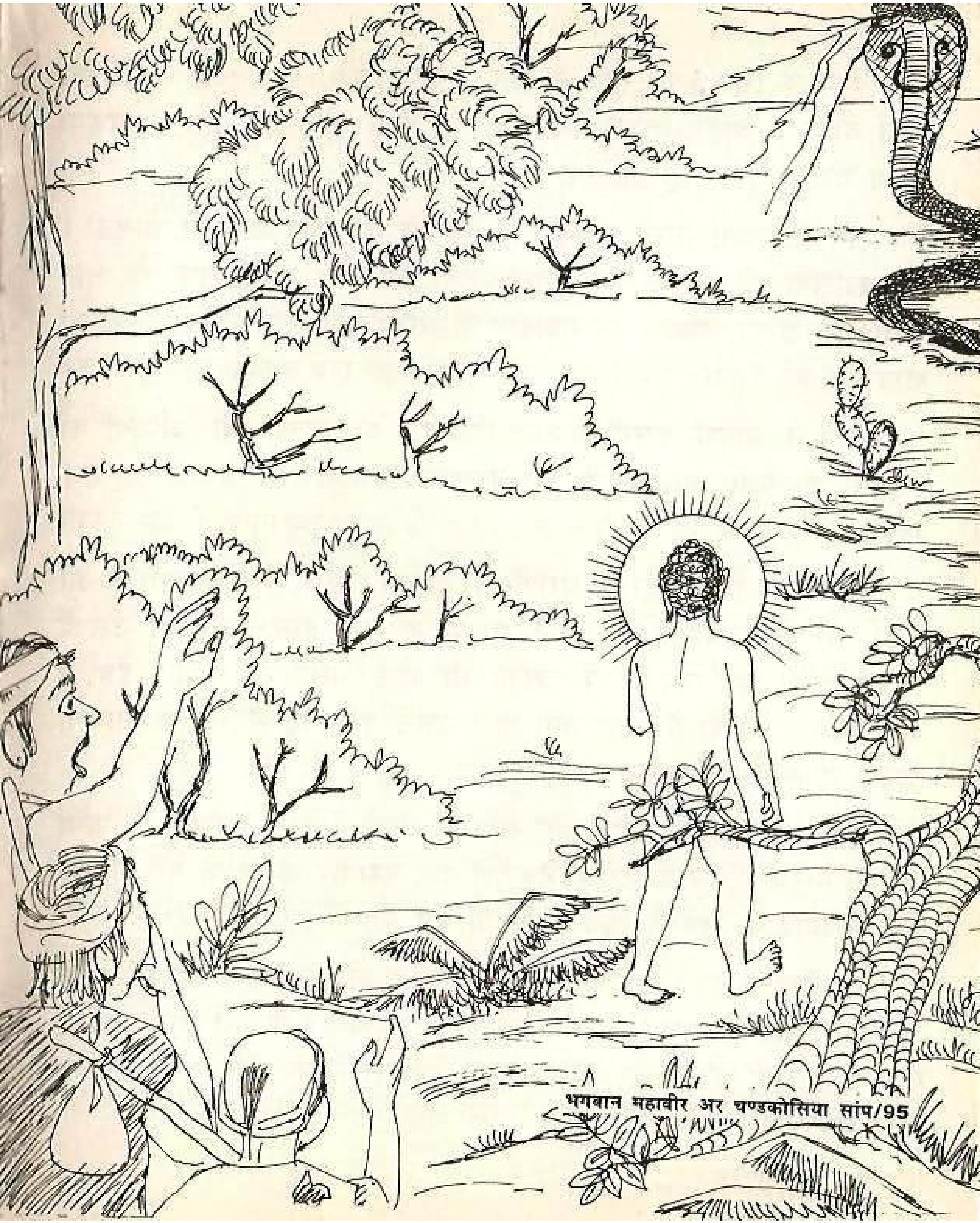

बाँबी के भित्तर पड़े सांप नैं आदमी की खसबू आई। ओ फफकारता होया बाँबी तैं बाहूर लिकड़्याया। उसनैं बाँबी धोरै एक आदमी खड़्या देख्या तो उस नैं छोहू आ ग्या।

सब तैं पहलां उसनै महावीर पै आपणी जैहूरीली फफकार छोड्डी। चण्डकोसिया की फफकार मैं इतणा जैहूर था अक वा जिसकै भी लाग जांदी, ओ हे मर जांदा। पर महावीर पै उसका माड़ा-सा भी असर कोन्यां होया।

सांप नै आपणी दूसरी ताक्कत दिखाई। वा ताक्कत थी- आंख्यां का जैहूर। जैहूरीली आंक्खां तै ओ लगातार महावीर नैं देखदा रहूया। देखदा-ए रहूया।

सांप जिब किस्से दूर के पराणी नैं भी इस तरियां देख्या करता तै ओ माड़ी वार मैं-ए बेहोंस हो कै ढै पड़्या करदा। इसा जैहूर था उसकी आंक्खां मैं। पर महावीर पै उसका भी कोए असर ना होया। ईब तै चण्डकोसिया के जी मैं आग लाग गी। उसनैं पूरे छोहू मैं भर कै आपणी तीसरी ताक्कत का इस्तेमाल कर्‌या।

गुस्से मैं भरे फफकारते होए सांप नैं ध्यान मैं खड़े महावीर के पायां मैं डंक मार्‌या। ईब कै उसके जैहूरीले दांद महावीर के पां के गूंठे मैं गड गे। महावीर के गूंठे तै खून की जंगा दूध बैहूण लाग्या।

न्यूं देख कै सांप नैं घणा ताज्जब होया। ओ लखता-ए रैहू ग्या अक यो किसा आदमी आया। यो आदमी सै अक द्‌यौता? खून तै सारे माणसां मैं कै लिकड़्या करै सै पर यो महापुरस कुण सै जिसके सरीर तै खून की जंगा दूध बैहूण लाग रहूया सै?

महावीर नैं दया-धरम का इमरत बरसाते होए कह्या-

रै सांप्पां के राज्जा! सिमझ!

सिमझ!!

सिमझ!!!

छोह् का नतीज्जा तन्नैं देख लिया। तू आपणा बीत्या होया टैम याद कर। तू इसा क्यूकर बण ग्या? सरप की जून मैं क्यूं आया? ईब इस हाल नैं छोड दे।

महावीर की बात सुण कै चंडकोसिया सांप नैं होंस आया। उस नैं आपणे पाछले जनम का ग्यान हो ग्या। इस ग्यान मैं चंडकोसिया नैं आपणे पहल्यां के जनम देक्खे। ओ देक्खण लाग्या- पराणे टैम के एक जनम मैं ओ मुनी था। उसका नां गोभद्दर था। लापरवाही तै चालती हाणां गोभद्दर मुनी के पायां तलै एक मींडक आ ग्या। मींडक ओड़े-ए मर ग्या। मुनी नै बेरा ना पाट्या।

पाछै-पाछै आंदे चेल्ले नैं सब किमे देख लिया। उसनैं गरू जी कै या बात याद कराई अर आपणी आतमा की सफाई करण की कही। गोभद्दर मुनी नैं छोह आ गया। वे बोल्ले, "तन्नैं घणा दीक्खै सै? मन्नैं तै किते ना दीख्या। पड़्या होगा राह मैं पहल्यां तै-ए मर्‍या होया। मैं मींडक क्यूं मारदा?"

चेल्ला चुप हो ग्या। रात नै ध्यान (परति-करमण) करदी हाणां चेल्ले नै गरूजी कै फेर वा-ए बात याद कराई। कह्या- "गरू जी! आलोचना कर ल्यो।" गोभद्दर मुनी कै या बरदास कोन्यां होई। उन नैं आपणा डण्डा ठाया

अर चेल्ले के मारण भाज्जे। आग्गै भाजते होए ओ एक खम्भे तै टकरा गे अर ओड़ै-ए उनका सरीर पूरा हो ग्या।

सरपराज चण्डकोसिक नैं आग्गै आपणे ग्यान मैं देख्या- मैं गोभद्दर मुनी की देही छोड कै अगनीकुवार देवता बण्या। ओड़ै भी मेरा छोह ठण्डा कोन्यां होया। देवता की उमर पूरी कर कै मैं फेर कोसिक नां का बाह्मण बण्या। छोह की मारी सारे मन्नै चण्डकोसिक कैह्ण लाग्गे। उस जनम मैं मेरी गेल्लां ओर के के होई? मेरा एक बाग था। उसमैं एक दन जिनावर बड़ गे। उन गूंगे जिनावरां नै फल़-पोद्धे खा गरे। न्यूं देख कै मन्नैं घणा-ए छोह आया। मन्नैं कुहाड़ा ठाया अर उन नै मारण भाज्या। जिब्बे-ए राह के एक खड्डे मैं ढै पड्या अर मेरी मोत हो गी।

उस्सै छोह का नतीज्जा सै अक आज मैं सांप की जून मैं आ ग्या। आपणा बीत्या होया टैम देख कै, छोह का नतीज्जा सिमझ कै, ओ ठण्डा पड़ ग्या।

उसनैं महावीर की गुवाही तै आपणे भित्तर कद्दे भी छोह ना करण का नेम कर लिया। गेल्लां-ए उसनैं यो संकल़प भी कर लिया अक मन्नैं जो लोग सतावैंगे अर दुःखी करैंगे, जै वे बदला लेंगे, जिब भी मैं ठण्डक राख कै उनके दीए होए दुख बरदास करूंगा। जांए तै उसनैं आपणा मूं बॉंबी कै मोरे मैं गेर कै, बाक्की देही बाह्र छोड दी। अर, बोल-बाला हो कै पड़ ग्या।

आगले दन पाल़ियां के जी मैं ललक ऊट्ठी अक जो साद्धू चंडकोसिए के जंगल़ कान्नीं चाल्ले गए थे, उन पै के बीत्ती होगी? सारे के सारे जंगल़ कान्नीं चाल पड़े। चालते-चालते वे ओड़ै पहोंच गे जित महावीर ध्यान करैं थे। धोरै-ए सांप की बॉंबी भी थी। वे लुक-लुक कै

देक्खण लाग्गे- महावीर तै चुप खड़े सैं। सांप का पूरा सरीर तै महावीर के सामीं पड़या सै अर मूं बिल मैं सै। सारे हैरान रैह्गे।

महावीर चण्डकोसिक तैं ग्यान दे कै चाल्ले गए। गुआल्लां नैं गाम आळां तै जैह्रीले सांप के बदलण की अर जैह्र तै इमरत बणे होए सांप की आंख्या देक्खी कथा सुणायी।

चंडकोसिया भगवान महावीर के उपदेस तैं कती बदल ग्या। ईब ओ ना तै किस्से पै फफकार छोड कै सताता अर ना-ए छोह करता। गाम आळां नै जिब या खबर सुणी तै उसनैं साच्चें-ए नाग देवता सिमझ कै दूध दही अर घी तै पूज्जण लाग्गे।

कई लोग्गां नैं चण्डकोसिया पै छोह् आया। पहल्यां जिब चंडकोसिया फफकारा करदा तो डर के मारी वे उसके लवै ना लाग्गैं थे। ईब जिब उसनैं छिमा धार ली तै लोग न्यूं कैह्-कैह् कै उसकै पत्थर मारण लाग्गे अक इसनै म्हारे फलाणे रिस्तेदार/ढिकड़े यार-बास कै डंक मार्या था। उन लोग्गां नैं मार पत्थरां, मार पत्थरां ओ सारा फोड़ गर्या।

ना तै ओ पत्थर मारण आळां तै दुसमनी करदा अर ना पूज्जण आळां तै प्यार करदा। सारे उसके खात्तर बराब्बर थे। छोह् करणा उसनैं छोड दिया था।

दूध अर घी की मैह्क तै ओड़े भूरी कीड़ी आ गी। उन नैं नोच-नोच कै सांप की घायल देही खाणी सरू कर दी। चण्डकोसिया कै भूंडी बेदना लाग गी। पर ओ बोल-बाला पड़्या रह्या। उसनैं अनसन कर लिया। धरम-ध्यान करदे होए उसनै सांप की देही छोड्डी। अर ओ सहसरार नां के सुरग (देवलोक) मैं पैदा होया। इस तरियां उसनैं आपणा जनम सुधार लिया। ❑❑

साचा भगत कामदेव सरावग

एक बर सुरग मैं सभा होण लाग र्‌ही थी। ओड़े सारे देवता बेट्‌ठे थे। इन्दर महाराज नैं धरती का जिकर छेड़ दिया। भरी सभा मैं न्यूं कहण लाग्या, "इस टैम सारी धरती पै कामदेव बरगा कोये भी जैन धरम का भगत कोन्यां।" या बात सुण कै घनखरे देवता कामदेव की जय बोल्लण लाग गे पर एक मिथ्या देव नै इस बात का यकीन कोन्या आया। ओ खड़ा हो कै कहण लाग्या, "हे इंदर महाराज! या बात तै मन्नै झूठ लाग्गै सै। जिब ताईं उसकी भगती का हिंतान (इम्तिहान) ना हो ले, उस तैं पहल्यां सब तै ऊंचा भगत कहणा कोये अक्कलबंदी ना सै।"

इन्दर महाराज बोल्या, "भाई! तू उसका हिंतान ले कै देख ले। जै तू उस नै सब तैं ऊंचा भगत ना कहता आवै तै मन्नै कह दिए।"

उस मिथ्या देव नैं इंदर तै हुकम ले कै कामदेव का बेरा कर्‌या। इंदर तैं उस के बारे मैं घणी-ए बात बूझ ली। उसका हिंतान लेण खातर ओ सुरग तै धरती कान्हीं चाल पड़्‌या। चालते-चालते ओ चम्पा नगरी मैं कामदेव के घर धोरै आ लिया। आ कै उसनै बेरा पाट्‌या अक कामदेव नै आपणा सारा कारबार अपणे बड्‌डे छोरे तै सिंभलवा दिया सै। इस टैम ओ पोसदसाला़ मैं पोसा (पौषध व्रत) करकै भगती करण लाग रह्‌या सै। मिथ्या देव नै सोची अक यो ऐन मोक्का सै। मै उसके धोरै राक्‌सस का रूप बणा कै जाऊं अर उसनै उसके धरम तै डिगा कै दिखाऊंगा।

फेर के था। उस नै जिब्बै-ए राक्‌सस का रूप बणा लिया। रात का

टैम था। ओ धरम की जंगा मैं बड़ ग्या। देख्या तै कामदेव अपणे धरम-करम में लाग रह्या था। उसनै देख कै राक्सस टाड्या, "रै कामदेव! तू किसकी भगती करै सै? अर किस नै पूज्जै सै? तू या भगती अर पूज्जा छोड दे। नहीं तै या तीन हाथ की तलवार दीखै सै ना? एक सिकंड मैं तेरा सिर तार ल्यूंगा।" कामदेव उस नै के गोलै था? ओ तो अपणे धरम मैं लाग्या रह्या। राक्सस नै ओर भी छोह आया। ओ कामदेव के सरीर नैं जंगा-जंगा तै काट्टण लाग्या। कामदेव कै दरद तो घणा-ए होया, पर ओ भी घणा पक्का भगत था। लाग्या रह्या आपणे धरम मैं।

उस देव नैं सोची अक ईब खाली तलवार तै काम कोन्यां चाल्लै। कोये और तरकीब करणी पड़ैगी। धरम की जंगा तै बाह्र आ कै उसनै राक्सस का रूप तै छोड दिया अर एक बड्डे हाथी का रूप बणा लिया। हाथी बण कै ओ धाड़ता अर चिंघाड़ता होया फेर कामदेव के धोरै पहौंच लिया। उस तै फेर कही अक तू धरम छोड़ दे, नहीं तै तेरा निसान भी टोह्या नहीं पावैगा। ओ उसके ऊपर झपट्या। पर, कामदेव के तै बाल़ भी कोन्यां कांपे। ओ तै धरम मैं न्यू लाग्या रह्या जाणुं हाथी ओड़ै था-ए ना। यू देख कै हाथी नै छोह मैं बौल़ा होणा-ए था। उसनै कामदेव अपणी सूंड मैं लपेट लिया अर धम्म देणे-सी जमीन पै दे मार्या। पायां तै उसनैं छेत्तण लाग्या। बोल्या-तेरे हाड-हाड दरड़ दयूंगा। ईब कै तै कामदेव कै पहलां तै भी घणा दरद होया पर ओ अपणे धरम तै डिग्या कोन्या।

हाथी फेर ओड़े तै लिकड़ आया। बाह्र आ कै उसनैं लाम्बे अर काल़े सांप का रूप बणाया। फफकारता होया ओ कामदेव धोरै पहोंच्चा। अर बोल्या, "ईब कै तू किस्से ढाल़ां ना बच्चै। देख ले ईब भी मोक्का

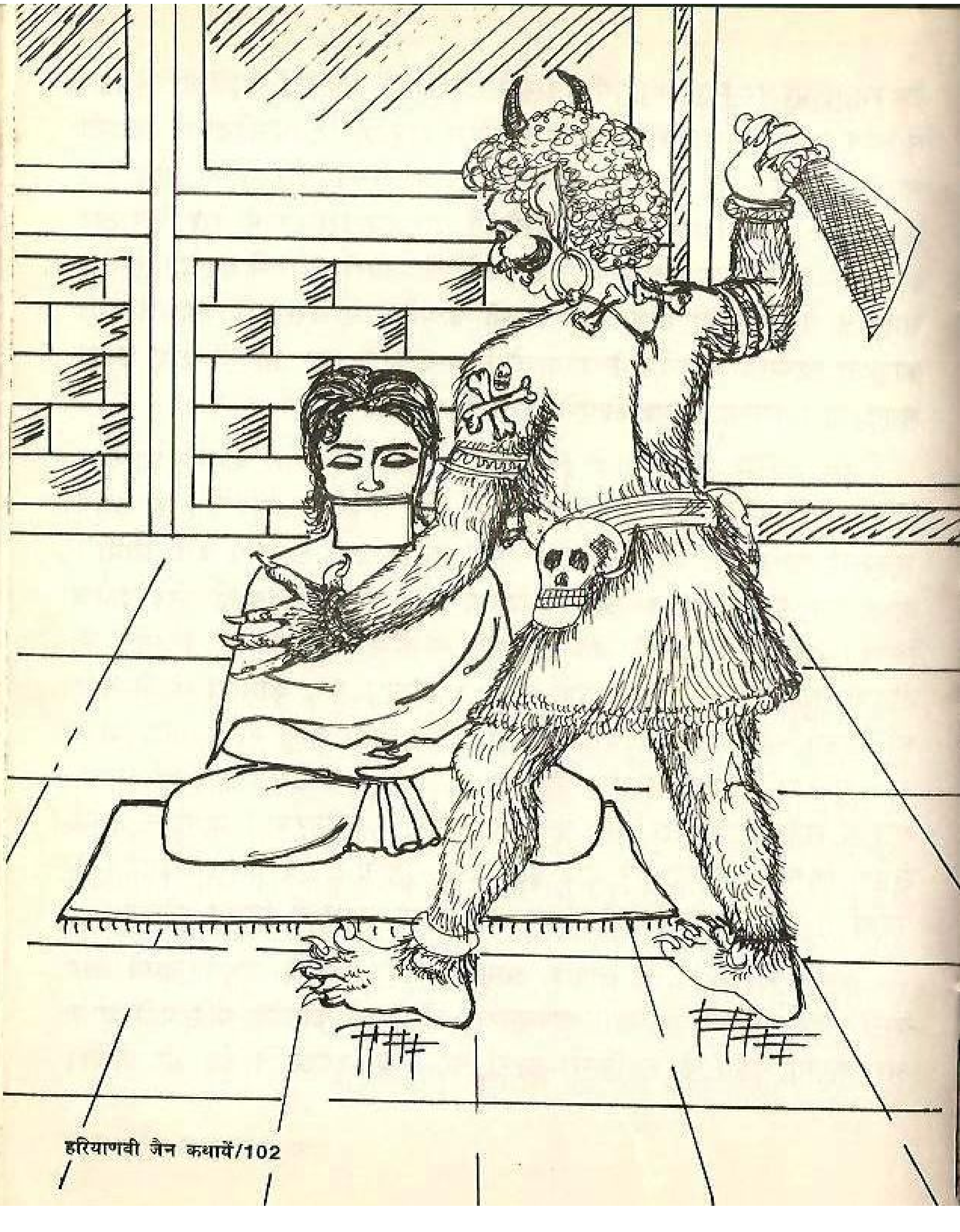

सै। मेरी बात मान ज्यागा तै मैं तन्नै कुछ ना कहूं। अर, नहीं मान्नैगा तै मैं तन्नै डस ल्यूंगा। मेरे जहरीले दांद तन्नै सांस लेणा भुला देंगे।" कामदेव नै ईब कै भी उसकी बात कान्नां ऊपर तै टाल् दी। धरम पै उसकी पूरी सरधा थी। धरम मैं तै ताकत होया-ए करै सै। सांप नै उसकै कई बर डंक मारे पर उसका ना बिगड्या कुछ भी। ओ तै पहलां की तरियां अपणे धरम मैं-ए लाग्या रह्या।

ओ मिथ्या देव सारे बिघन कर-कर कै हार लिया। उसका घमंड कामदेव के सामीं चूर-चूर हो लिया। उसनै सोची अक इन्दर महाराज साच्ची कहै था। यो तै घणा करड़ा लिकड्या। देव नैं सांप का रूप छोड्या अर अपणे असली रूप मैं आ ग्या। देवता के रूप मैं कामदेव तैं बोल्या, "भाई! तू तै घणा-ए ऊँचा अर साचा भगत सै। या सारी माया तै मन्नैं तेरा हिंतान लेण खातर बणाई थी। तेरै तकलीफ होई तै भाई मन्नै माफ करिये।"

कामदेव यो देख कै हैरान रह ग्या। कहण लाग्या, "देवता! तनैं तै मेरे तै साच्ची राही बता दी। तेरे हिंतानां मैं पास हो कै नैं मेरे भाग जाग गे। तम तै मेरे तै बड्डे सो। मेरे तैं माफी मांग कै मन्नै सरमिंदा ना करो।" उसकी मिट्ठी बात सुण कै देव घणा-ए राज्जी होया। अर बोल्या-मांग ले तन्नै जो किमे मांगणा हो। तेरे जी की ईब तै सारी बात पूरी करूंगा।

कामदेव नै कह्या-मन्नै दुनिया की किमे-भी तिमन्ना कोन्या। मन्नै नहीं चाहिये दुनिया की कोये भी चीज। मैं तै भगवान् की भगती मैं लाग्या रहूँ, बस यू हे वरदान चाहूं सूं।

या बात सुण कै ओ देवता कामदेव की घणी तारफ करण लाग्या। बोल्या- तू धन सै, तू साचा जैन सरावग सै, तेरी भगती जमा साची सै। न्यूं कहैन्दा-कहैन्दा सुरग कान्नीं चाल्या गया। जाकै उसनै इन्दर महाराज तैं सारी बात बताई अर, कामदेव की घणी-ए बड़ाई करी। उसकी बात सुण कै सारे देवत्यां नैं कामदेव की जै-जैकार करी।

❑❑

जो करै सै ओए भरै सै

राजगीर मैं एक कसाई रह्या करता। उसका नां था- कालसौकरिक। ओ रोज पांचसै झोट्टे मार्या करता। यो-ए उसका धंदा था, जिस तै उसके घर-कुणबे का गुजारा होया करता।

एक दन राजगीर के राज्जा सरेणिक नै कालसौकरिक आपणे दरबार मैं बलाया अर उस तै कह्या, "तू झोट्टे मारणे छोड़ दे। जे तू यू भूंडा काम छोड़ देगा तै मैं तन्नैं घणा-ए धन द्यूंगा। तेरा गजारा पूरे ठाट तैं होया करैगा।"

कसाई बोल्या, "हे म्हाराज! मैं आपणे धंदे नै कोन्यां छोड़ सकदा। ओर कोए सेवा मेरे जोग्गी हो तैं मन्नै हुकम द्यो। मैं थारे हुकम नैं खूब राज्जी हो कै मान्नूँगा।"

राज्जा नैं ओ कसाई घणा सिमझाया पर ओ किस्से तरियां भी कोन्या मान्ना। राज्जा नै जिब्बै-ए, ओ एक कूएं मैं रुकवा दिया। कूआं डूंगा था पर उस मैं पाणी ना था। उसमैं झाड़-झंखाड़ जाम रे थे उस मैं चौबिस घण्टे अंधेरा रह्या करै था। उसके तले की माट्टी मुलाम थी।

राज्जा सरेणिक भगवान महावीर धोरै पहौंच्या। कहण लाग्या "हे भगवान! मन्नैं ओ कसाई कालसौकरिक कूएं मैं रुकवा दिया सै। ईब उसनै मजबूर हो कै आपणी झोट्टे मारण की आदत छोडणी पड़ैगी।"

भगवान बोल्ले, "उसकी आदत के छूट्टै सै!"

"हे भगवान! मन्नै जिस कूएं मैं ओ रोक राख्या सै, ओड़ै ओ झोट्टे क्यूकर मार सकैगा?" राज्जा नै हैरान होकै बूज्झी।

"उस कूएं की माट्टी मुलाम सै। माड़ी मोट्टी सील उस माट्टी मैं रह री सै। ओ उस माट्टी के झोट्टे बणावैगा अर फेर उन नैं मारैगा।" भगवान महावीर नैं राज्जा तैं समझाया। भगवान के दरसन करें पाछै राज्जा उस कूएं पै गया। देख्या तै सांच्चें ए ओ माट्टी के झोट्टे बणान लाग रहूया था अर उन नै काट्टण लाग रहूया था।

राज्जा सरेणिक नै सोच्ची अक भगवान महावीर ठीक कहैं थे। इसकी आदत के छूट्टै सै! इस तीं कूएं मैं रोक्कण का भी के फैदा?" राज्जा नै ओ छोड दिया।

थोड़े दन पाछै कालसौकरिक मर ग्या।

टैम न्यूं-ए लिकड़ें गया। एक दन सारे रिस्त-नाते आले कालसौकरिक के छोरे धोरै आए। उस छोरे का नां सुलस था। सब नैं कहीं अक "आपणे बाप का झोट्टे मारण का धंदा सिम्भाल ले। आपणी घर-गिरस्ती बसा ले।"

हाथ जोड़ कै सुलस कहण लाग्या, "मन्नै भगवान महावीर की बाणी सुण राक्खी सै। मैं तै यो भूंडा काम कोन्यां करूं।"

सारे यारे-प्यारे बोल्ले, "तू सोच मतन्या करै। तेरे पापां मैं हम भी हिस्से बँटावैंगे।"

न्यूं सुणतां-ए सुलस नै कुहाड़ा ठाया। सबनै सोच्ची अक झोट्टे मारण नैं कती त्यार हो लिया। पर यो के? उसनैं तै कुहाड़ा आपणे पां

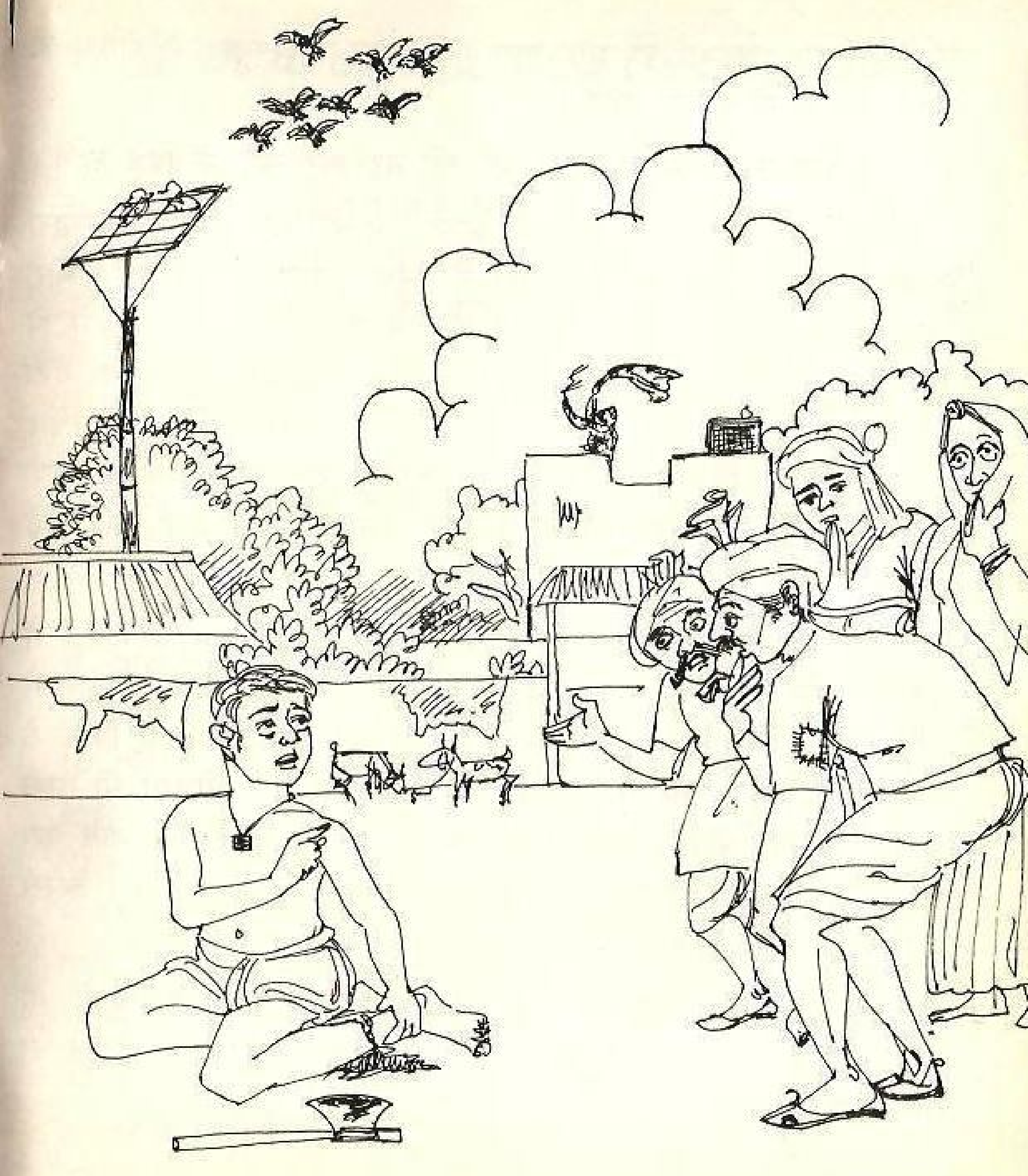

मैं दे मार्‌या। लहुआं की धार चाल पड़ी। दरद के मारे ओ दोहरा हो ग्या। बेहोंस हो कै ढै पड्‌या।

न्यूं देख कै नैं सबकी आंख पाट गी अर सारे खड़े के खड़े रहगे।

माड़ी वार पाछै सुलस होंस मैं आया। कूल्हते होए ओ मित्तर-प्यारां तै कहण लाग्या, "थम सारे मेरे पापां मैं हिस्सा बँटाण नै त्यार सो। भोत आच्छी बात। इस टैम तै मेरै इतणा दरद सै के, मेरा जी लिकड़ण नैं हो रह्‌या सै। थारे मैं तै ईसा कोए हो जो मेरे इस दरद मैं हिस्सा बँटा सकै?" न्यूं सुण कै सारे हैरान रहगे। एक-दूसरे का मूं देखण लाग्गे। जाणूं बूझते हों अक दुनिया मैं कदे कोए किसे के दरद का भी साज्झी बण्या सै! साज्झी बणन नै कोए भी आग्गै कोन्यां आया। सारे बोल-बाले खड़े रहे।

दरद की मारी लोचते होए सुलस बोल्या, "ईब तै थम मेरे पापां मैं हिस्सा बंटाण की कहण लाग रे थे, अर ईब मेरे दरद का साज्झी बणन नै कोए त्यार कोन्यां। फेर मैं न्यूं क्यूकर मान ल्यूं अक दुनिया मैं किसे के पापां नैं कोऐ बँडा सकै सै? जो करै सै, ओए भरे सै। भोगणा भी उस्सै नै पड़े सै। मेरे बाप के पापां नैं ओ खा लिया, अर ईब मैं भी ओएं पाप करूं! या बात कोन्यां होवै।" या बात सुण कै सबके होंठ सिम गे। किस्से धोरै उसका कोए जुआब ना था।

थोड़े दिनां मैं सुलस ठीक हो ग्या। भगवान महावीर की बाणी ओ पहल्यां तै भी घणे ध्यान तै सुणन लाग्या। सारी जिन्दगी ओ नेक्की की राही चालता रह्‌या!

❑❑

अक्कल आपणी-आपणी

एक सेट था। उसके धोरै घणाए धन था। उसके चार छोरे थे। चारूं ब्याहे-थ्याहे थे। घर आली घणे दन पहलां गुजर ली थी। एक दन सेट सोचण लाग्या-मन्नै भतेरा धन कमा राख्या सै। घर मैं सब तरियाँ की मौज सै। घर आली तै पहलां-ए राम नै प्यारी हो ली। अर ईब मैं भी बूड्ढा हो लिया सूँ। कदे भी लुड़क ज्यांगा। मन्नै फिकर-सी लागी रहैगी अक मेरे मरें पाछै घर की जुम्मेवारी कुण-सी बहू आच्छी तरियां सिंभालैगी! चारूआं का हिन्तान (इम्तिहान) ले ल्यूं तैं माड़ी-मोटी तसल्ली रहैगी। जुण-सी बहू काबल होगी उस्सै नै सारा हिसाब-किताब समझा कै चाबी सोंप द्यूंगा।

सकीम बणा कै एक दन सेट नैं चारूँ बहू बलाई। चारूआँ तै धान के पांच-पांच दाणे दे दिए। बोल्या-इन नै सुथरी ढाल सिंभाल कै राखियो। चारूआँ नै धान के दाणे ले लिए। सब तै बड्डी का नां था-उज्झिका। दाणे ले कै वा सोचण लाग्गी अक मेरा सुसरा तै बुढापे मैं अक्कल के पाछै लठ लिए हांडै सै। कद्दे हो कुछ भी कह दे सै। ईब उसनै कोए बूज्झण आला हो- के जरूत सै ये दाणे सिंभालण की? न्यू बोल्या अक सुथरी ढाल सिंभालियो......जाणूँ ये चांदी-सोन्ने हों....अर म्हारे धोरै कोए घर का काम ना हो! न्यूं सोच कै उज्झिका नै वे दाणे न्यूं-ए गेर दिए। बुहारी लाग्गी तै कूड़े गेलां वे दाणे भी सम्हरे गए।

दूसरी का नां था- भोगवती। उसनै सोची अक सुसरा बड्डा आदमी सै। कुछ सोच कै ये दाणे दिए होंगे। मेरे खातर तै यो मेरे सुसरे का

दिया होया परसाद सै। उसनै पांचूँ दाणे मुँह मैं घाल लिए अर हजम करगी।

तीसरी का नां था- रक्सिका। उसनै सोची – सुसरे नै ये सिंभाल़ कै धरण खातर दिए सैं। ये घणे-ए कीमती होंगे। ये जरूर सिंभाल़ कै धरणे चाहिएँ। कदे मांगैगा तै काढ़ कै दे दूयूंगी। किसे भी तरियां ये खोये ना जाँ। उसनै वे दाणे खूब सिंभाल़ कै चौक्कस धर दिए।

सब तै छोट्टी का नां था- रोहिणी। उसनै सोची अक सुसरा तजरबेकार आदमी सै अर अकलबंद भी पूरा-ए सै। न्यूं लाग्गै सै अक चारूआँ तै ये दाणे उसनै चारूआँ की अक्कल देखण खातर दिए हों। छोट्टी नै न्यूं सोच कै धान के वे दाणे खेत मैं बुआ दिये। थोड़े-ए दन मैं वे जाम्याए। उनकी देख-भाल़ करी। अपणे टैम पै वे होगे। उन तै जितणा भी धान होया वो फेर न्यूं का न्यूं बुआ दिया। न्यूं करते-करते कई साल गुजर गे।

एक दन फेर तड़कै-तड़क सेट नै चारूँ बहू बलाई। बला कै बूज्झा अक मन्नै थारे तै पांच-पांच दाणे धान के दिए थे। तमनै के कर्‌या उनका? कित सैं वे दाणे?"

बड्डी बहू उज्झिका बोल्ली– मन्नै तै वे न्यूं-ए गेर दिए। दूसरी बहू भोगवती बोल्ली– मन्नै तै वे परसाद समझ कै खा लिए। तीसरी बहू रक्षिका का नम्बर आया तै वा हुमाये मैं भरी पहोंची अर चांद्‌दी की डब्बी खोल कै वे हे दाणे सुसरे के हाथ पै धर दिए। तीनुआँ का ढंग देख कै सेट छोट्टी कान्नीं लखाया वा, जिसका नाँ रोहणी था, बोल्ली– जो दाणे

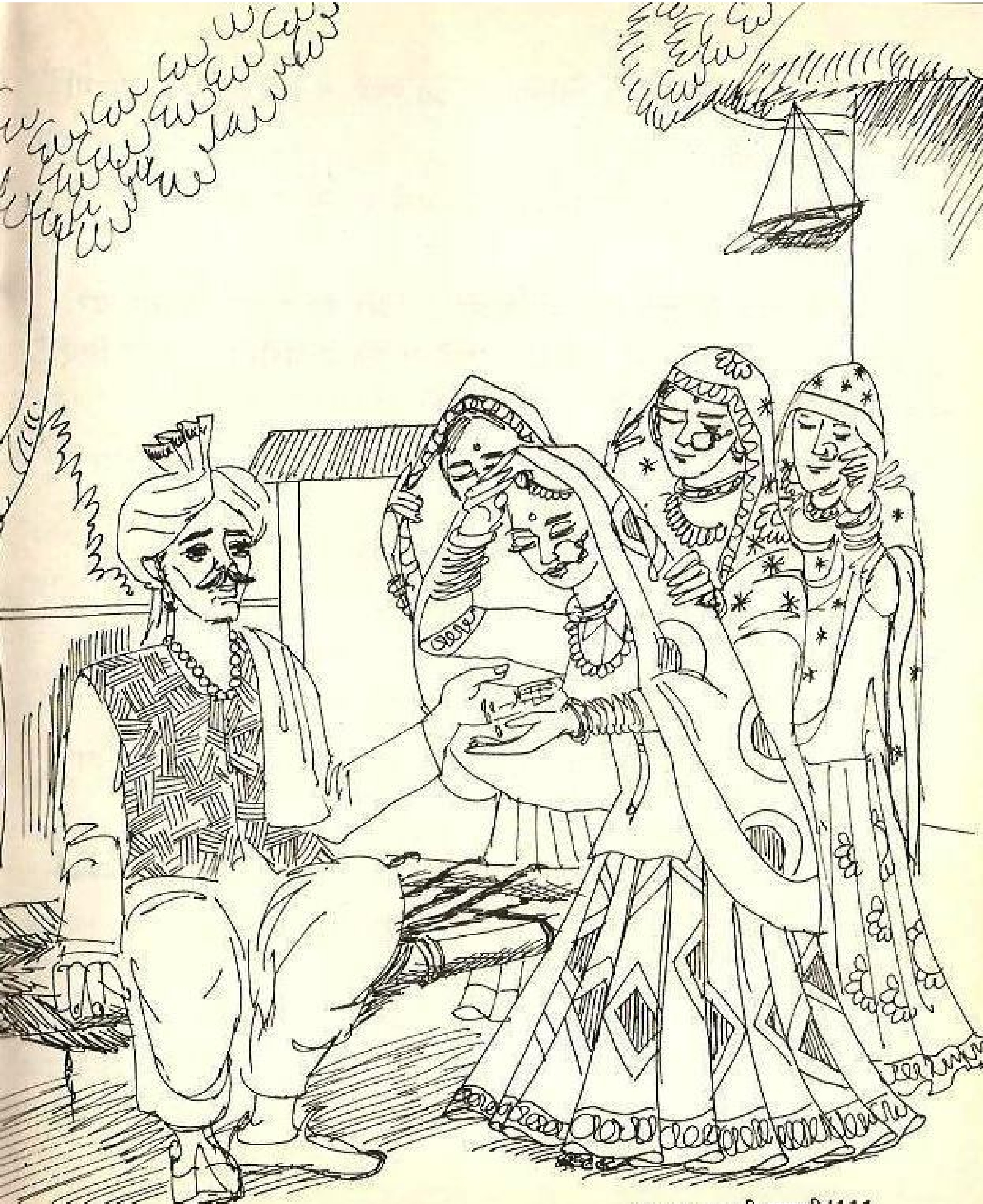

मन्नै लिए थे, वे दाणे तै इब गाड्डियां मैं आ सकैं सैं। किसे एक आदमी के बसके वे ठा कै ल्याणे कोन्या।"

"आच्छा.... वे पांच दाणे गाड्डी मैं आवैंगे? न्यूं क्यूक्कर?" सेट नै घणा-ए अचम्भा होया।

"ना तै मन्नै वे दाणे गेरे, ना खाये.... अर ना-ए ताले भीतर धरे... मन्नै तै वे खेत मैं बुआ दिये थे। जाहें तै ईब वे घणे-ए दाणे हो लिए अर गाड्डी मैं-ए आ सकैं सैं।" रोहिणी बोल्ली।

या बात सुण कै सेट की बूड्ढी आंख्याँ मैं पाणी भर आया। उसनै अपणा फैसला सुणाया- जो फैंकण मैं माहिर सै वा सारे घर की सफाई का काम सिंभालैगी। खाण मैं माहिर बहू घर की रसोई बणाया करैगी। जुण-सी सिंभालणा जाणै सै वा घर के खुज्जाने की देख-भाल करैगी अर सब तै छोट्टी बहू सारे घर की सरपंच रहूवैगी। एक वा हे सै जो धान्नाँ की तरियाँ घर की इज्जत अर घर का धन-मान बढा सकै सै।

न्यूं कह कै सेट नै चाबियां का पूरा गुच्छा सब तै छोट्टी बहू के हाथ पै धर दिया।

❑❑

साच्चे गरू योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज

भारत बरस में एक महान संत होए परम सरधेय योगिराज सिरी रामजी लाल जी म्हाराज। उनका जनम हरियाणे कै बड़ौदा गाम मैं सम्मत १६४७ के भादुए के म्हीने की बदी नौमीं के दन (अगस्त १८६०ई.) होया था। उनके पिता जी चोधरी सुखदयाल अर माता सिरीमती लाड्डो बाई थी। बालक के जनम तैं उननैं मन मांगी मुराद मिलगी। बात या थी चौधरी सुखदयाल हर तीन भाई थे। उन तीनुआं कै योगिराज जी-ए एकले छोरे थे। जाएं तै उनके होण की खुसी चोगरदे कै ओर भी घणी थी। जिब उन नैं जनम लिया तै सारे कुणबे नैं त्युहार मनाया। बालक का नां धर्‌या रामजीलाल।

खेलदे-कूददे होए बालक रामजीलाल दूज के चन्द्रमा की ढालां बड्डे होण लाग्गे। सब उनत्ती घणा-ए लाड प्यार करैं थे। रामजीलाल जी आपणे बड्यां की खूब ए इज्जत करैं थे। उनका कह्या मानैं थे। आस्ता-आस्ता वे जुआन हो ग्ये। जुआन हो कै वे पूरे-ए कद्दावर लिकड़े। जितणी ताक्कत उनकी देही मैं थी, उनके जी मैं उस तै भी घणी हिम्मत थी। न्यूं देख कै बड़ोदूदे के जुआन उनके धोरै कट्‌ठे होण लाग्गे। रामजीलाल जी उनके परधान बण गे। सारे गाम मैं उनकी जुआन पाल्टी का रूक्का पड़ ग्या। छोरां की इस पाल्टी तै सारे लोग डर्‌या करदे।

सम्मत् १९६८ (सन् १९११) मैं उस जमान्ने के सब तै ऊंच्चे संत चारित्तर चूड़ामणी सिरी मायाराम जी महाराज का चमास्सा बड़ोद्दे मैं होया। उस चमास्से मैं बड़ा धरम ध्यान होया। सारा-ए गाम जैन धरम की भगती मैं लाग्य ग्या। एक दन गाम के बड्डे-बडेरां ने सिरी मायाराम जी म्हाराज तै कह्या- गरू महाराज! थाम नैं सारा गाम धरम मैं ला दिया। चुगरदे नै थारी जै-जैकार हो र्ही सै। बाकी म्हारे जी नै सांती जिब आवै, जिब थाम रामजीलाल नै अर उसकी पाल्टी ने सुधार द्यो।

यू रामजीलाल कुण सै भाई? सिरी मायाराम जी म्हाराज ने बूज्झा! बडेरां ने म्हाराज तैं सारी बात बताई। सुण कै म्हाराज बोल्ये- देखो- कोसस करूंगा, जुआनां नै समझाण की। उस चमास्से मैं सिरी मायाराम जी तै योगिराज जी मिल्ले। अर उनका उपदेस सुण कै धरम ध्यान मैं लाग ग्ये। फेर उनके जी मैं आया - यू संसार झूट्ठा सै। साद्धु बण कै आपणी आतमा का किल्लाण करणा चहिए। जिब इस बात का बेरा मां-बांपां नै लाग्या तै सब नैं सिमझाण खात्तर पूरा जोर लाया पर रामजीलाल पै तै मायाराम जी का रंग चढ रह्या था। ओ के उतरै था! दो साल पाच्छै उस रंग के चिमकण का टैम आ ग्या। पर देक्खो........ करम की बात। जिब रंग चिमकण का बखत आया तै रंग चढ़ाण आले मायाराम जी ए ना रहे। फेर उसनैं के सब तै छोट्टे चेल्ले सिरी सुखी राम जी म्हाराज गरू बणाए। रामजीलाल जी नैं उनके चरणां मैं दिल्ली के सदर बजार मैं सम्मत १९७१ के मंगसिर के म्हीने मैं किरसन पक्स की चोदस के दन (१६ नवम्बर, सन् १९१४) साद्धू बणन की दीक्सा ले ली। ईब वे मुनी रामजीलाल कुहाण लाग्गे। गरू की सेवा अर धरम का आचरण छोड कै

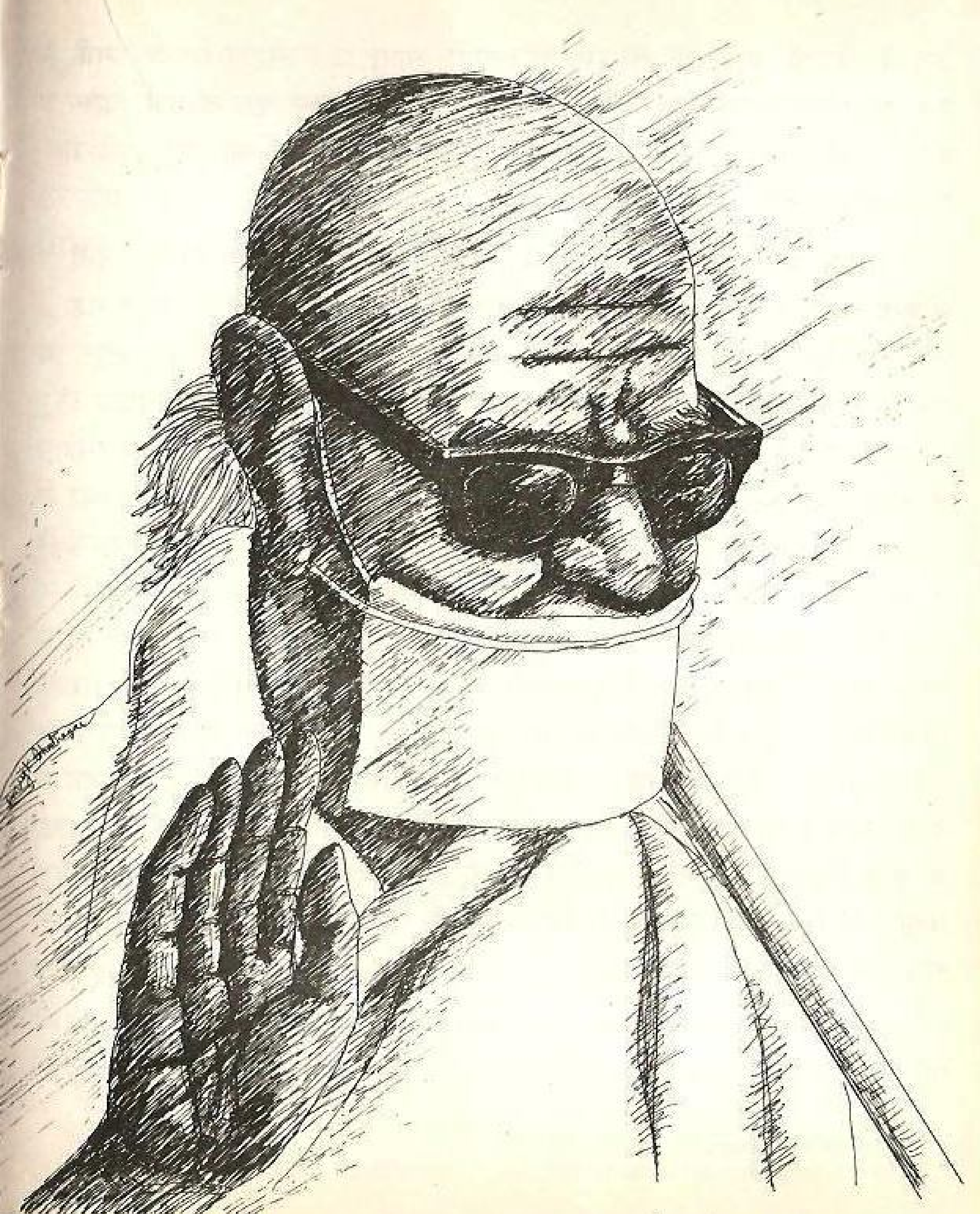

उन नैं आपणे जीवन मैं तीसरी चीज नहीं आण दी। सैहूज-सैहूज उनके दन रात बस ग्यान का सुबेरा बण गे। उनके ग्यान का चांदणा चारूं कान्नीं बिखरण लाग्या। आपणे गरू के चरणां मैं जैन सास्तर पड्ढे। पड्ढे अर उनकी बात्तां पै चाल्ले।

साद्धू बणें पाच्छे आपणे जी मैं तिरिस्ना का उन नैं नाम-निसान नहीं छोड्या। ना तै उनमैं इस बात की तिरिस्ना थी अक मेरे नाम के झण्डे गड ज्यां अर ना-ए इस बात की तिरिस्ना थी अक मैं छूट के चेल्ले कर ल्यूं। उन नैं तै बस आपणा आप्पा पढ्या अर ग्यान का परसाद सार्यां तै दिया। आपणी आखरी सांस ताईं वे मन तै भी साद्धू रहे, बचन तै भी अर करमां तै भी। उन नै तै आपणा पूरा ध्यान योग मैं ला राख्या था। बाहूर की दुनिया मैं उनका कुछ ना था। उनका जो कुछ था ओ भीतर की दुनिया मैं ए था। सारी तिरिस्ना छोड कै उन नैं मन अर आतमा एक बणा राक्खे थे। बरमचर्ये की ताक्कत तै उनकी योग-साधना ऊप्पर ताईं पहोंच गी थी। जाएं तै सन् १६३३ मैं राजस्थान के अजमेर सैहूर मैं साधुआं नैं अर गिरस्तियां नैं उन तैं 'योगिराज' का पद दिया। सारी जिनगी वे आपणी योग-साधना मैं-ए लाग्गे रहे। उनकी साधना पै ना तै योगिराज कुहाण का कोए फरक पड्या अर ना ए साद्धुआं के संघ नायक बणन का। हरियाणा के जींद सैहूर मैं सन् १६६४ मैं वे साद्धुआं अर सरावगां नैं 'संघ नायक' बणाए थे। उनकी निगाह मैं बड्डे-छोट्टे अर जात-पांत का कोए भी भेद-भाव ना था।

योग-साधना, धरम-ध्यान अर तिपस्या तैं उनकी आत्मा सुद्ध अर पवित्तर बणगी थी। बड्डी-बड्डी सिद्धियां उन मै परगट होगी थी। उनकै

मूं तै जो भी बाणी लिकड़ ज्यादी, वा न्यूं-ए पूरी बणै थी अर पूरी हो थी। उनकी दया-दिरस्टी कद्दे खाली ना जा थी। जिसपै उनकी निंग्हा पड़ ज्यांदी हो-ए न्हाल हो जांदा। चारूं कान्नीं उनकै नां का रूक्का था। हरयाणै की परजा उनती भगवान मानै थी। उनकी दया-दिरस्टी अर वचन सिद्धी की एक-दो बात आड़ै बताई जा रूही सैं-

एक बर योगिराज जी का चमास्सा हरियाणा के पुरखास गाम मैं था। या सम्मत् १६७४ की बात सै। उन दिनां सारे कै कात्तक की बेमारी फैल रूही थी। दुनिया उस बेमारी मैं गलगप् होण लाग रूही थी। रोहा-राट् माच रूह्या था चोगरदे कै। डागदरां धोरै कोए इलाज ना था। पुरखास के लोग भी उस बेमारी के कब्जे मैं थे। योगिराज जी जात-पांत का भेद-भाव करे बिना गाम के सारे घरां मैं रूहोज नेम तै मंगली सुणान जाया करते। भगतां नैं खूब सिमझाए अक या छूत की बेमारी सै। आप न्यूं मंगली सुणाते मत न्यां हांड्या करो पर योगिराज जी कोन्यां मान्ने। वे तै एक-ए बात मान्नैं थे अक साद्धू तै ओरां खात्तर जीया करै। वे मंगली सुणाते पूरे गाम मैं हांडते रहे। एक दन तड़कैं-ए तड़क जंगल हो कै थानक ताईं आंदे आंदे वे भी बेमार हो गे। सिरी अमीलाल जी म्हाराज उन खातर दूध लेण लिकड़े। करम कर कै दूध तै कोन्यां मिल्या पर लूहासी मिलगी। थानक मैं वा ल्हासी धर कै फेर गए। योगिराज जी नैं तिस लाग्गी तै जी भर कै छाछ पी ली। सिरी अमीलाल जी म्हाराज गरम दूध ले कै आए तै देख्या अक योगिराज जी कत्ती ठीक हो लिए सैं। दूध की बूज्झी तै वे बोल्ले- मन्नै तै छाछ पी ली अर मैं ठीक हो ग्या। दूध किसे ओर साद्धू तै दे द्यो।

योगिराज जी सिमझ गे अक कात्तक की बेमारी का इलाज लिकड्याया सै। वे पहलां की तरियां मंगली सुणान जाण लाग्गे। लोग्गां नैं बेरा पाट्या। फेर वे भी ल्हासी पीण लाग्गे। फेर के था। या कात्तक की बेमारी की दुआई बण गी। छाछ पी-पी कै सारे ईसे हो गे- जाणुं बेमार पड़े-ए ना थे। सारे गाम मैं रूक्का पाट ग्या अक योगिराज जी की किरपा तै सारा गाम बच ग्या। ना तै बेरां नां के होंदी। इस बात तै सार्यां कै जँच गी अक यू साद्धू तै परमात्मा का रूप सै।

एक बर उनका चमास्सा हरियाणे के कैत्थल सैहूर मैं था। एक दन जिब वे तड़कैं-ए जंगल् गए तै एक आदमी नैं आपणी जोत्तस लाई अर थानक ताईं उनके पाच्छै-पाच्छै आ लिया। राम-राम कर कै बोल्या, "म्हातमा जी! मैं थारा भगत कोन्यां। मैं तै आपनैं जुहारात का ब्योपारी जाण कै पाच्छै लाग लिया था पर आड़ै आ कै बेरा पाट्या अक मेरी जोत्तस झूट्ठी सै। मैं जिनगी तै हार लिया सूं। घर मैं कोए काम-धंधा भी कोन्यां। घर तै मैं न्यूं-ए लिक्कड़ लिया था। आप दीख गे तै जोत्तस ला कै देख्या अक आप जुहारात के घणे बड्डे ब्योपारी सो। पर आप तै साद्धू लिकड़े। मन्नैं आप तै के फैदा हो सकै सै ?"

योगिराज जी नैं बूज्झी अक "तू कुण-सा काम जाणै सै अर घर का काम-धंधा कित गया?" उसनै बताई, "मैं हिकमत जाणूं सू। पहल्यां इस्सै सैहर मैं हिकमत की दुकान कर्या करता। बखत नै ईसा धक्का दीया अक दुकान बंद करणी पड़गी। आज रोटियां का भी तोड़ा हो ग्या।" योगिराज जी बोल्ले अक "तेरी जोत्तस झूट्ठी कोन्यां। हम सांच्चें-ए जुहारात के ब्योपारी सैं। मैं तन्नैं तीन रतन ईसे दे द्यूंगा अक ना तै उनकी चोरी होवै

अर ना ए वे कित्ते खूवैं। तू हिकमत जाणै सै ना! ये तीन्नूं रतन आपणे भित्तरले मैं सिंभाल ले अर हिकमत कर। पैहूला रतन सै अक कद्दे किसे बेमार तै नकली दुआई मत न्यां दिए। दूसरा रतन सै अक जो बेमारी काब्बू की ना हो उसका इलाज मतन्यां करिए, अर, तीसरा रतन यो सै अक गरीब आदमी तै कद्दे फीस मत न्यां लिए। ये रतन ले ज्या। हम भी देक्खैंगे। अक तेरे घर का दलद्दर कद ताईं ना लिकड़े। चार म्हीने मैं आड़ै ए ठैहरूंगा। रूहोज बखाण हो सै। टैम काढ़ कै बखाण सुणन भी आया करिये।" तीसरे दन तै उसनैं हिकमत सरू करी। योगिराज जी नैं उसकी दुकान पै जा कै मंगली सुणाई। चार म्हीने पाच्छै जिब योगिराज ओड़ै तै चाल्लण लाग्गे तै उसनैं भरी सभा मैं कही, "भाइयो! बड़े करमां तै ईसे साद्धुआं के दरसन हों सैं। इनकी किरपा तै मन्नै फेर हिकमत करी अर आपणे घर तै दलद्दर धोया। मेरी जोत्तस झूट्ठी ना थी। ये तै साच्चें एं जुहारात के ब्योपारी सैं।"

सिरी योगिराज जी म्हाराज नै भारत के गाम-गाम मैं हांड-हांड कै साच्चै धरम का परचार कर्‌या। लाख्यां आदमियां तैं अहिंसा-सत्ते-परेम की राही बताई। परेम-प्यार तैं रूहैणा सिखाया अर भूंडे काम छोड्‌य कै सदाचार तै जीणा सिखाया। उनकै उपदेसां तै हज़ारां आदमियां ने जूआ खेलना मांस-अण्डा खाणा, सराब पीणा जिसे-जिसे भूंडे काम छोड्‌य दिए।

साच्ची बात तै या सै अक वे साच्चे साद्धू थे अर साच्चे गरु थे। साच्चे साद्धू की पिछाण-ए या हो सै, ओ काम, किरोध, मोह, लोभ, मान-बड़ाई का त्यागी हो सै। जीउ मात्तर तैं ओ परेम कर्‌या करै। जात्ती-पांत्ती अर ऊंच-नीच का ओ फरक कोन्या करता। ओ सब नै

एक-सा सिमझा करै। योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज इसे-ए साच्चे गरु थे। उनकै धोरै हिन्दू, मुसलमान, सिरदार, बाल्मीकि मतबल सारै धरमां के माणस आवैं थे अर उनती आपणा गरु मान्नै थे।

उन नैं साधना करते-करते जिब देख्या अक यो सरीर ईब आतमा की साधना मैं साथ कोन्यां दैंदा तै उन नैं ओ छोड दिया। उनका आखरी चमास्सा अमीनगर (मेरठ, उत्तर प्रदेश) मैं था। ओड़े की माट्टी मैं आस्सुज म्हीने की अंधेरी पांचम के दन, सम्मत् २०२४ मैं योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज नैं आपणी देही छोड्डी। उस टैम ओड़ै देस जुड़ ग्या। व्हाणियां ताईं जै कारे बोलती होई दुनिया गई। योगिराज जी म्हाराज चंदन की तरियां दुनियां मैं आपणी मैहूक छोड गे। योगिराज जी म्हाराज का सरीर बेस्सक खतम हो ग्या पर उनका जीणा अमर हो ग्या।

उनके चेल्ले जैन् सासन सूरज गरूदेव सिरी रामकृसन जी म्हाराज अर सिरी सिवचंद जी म्हाराज ईब भी उनके चरणां के निस्सान्नां पै चाल्लण लाग र्हे सैं। योगिराज जी म्हाराज की किरपा तै सिरी रामकृसन जी म्हाराज नैं धरम के ठाठ ला राक्खे सैं। जंगा-जंगा योगिराज जी की किरपा तै हस्पताल अर सकूल चाल्लण लाग र्हे सैं अर दुनिया का भला हो सै।

सिरी योगिराज जी म्हाराज के चरणां मैं म्हारी हाथ जोड्य कै बंदना!

❑❑

परिशिष्ट

RAJESH SHARMA